णमो समणस्स भगवओ महावीरस्स ।

प्रातःस्मरणीय प्रभु श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वर सद्गुरु-
चरणारविन्देभ्यो नमः ।

मुनिराज श्रीमत्क्षमाकल्याणजी गुम्फित

श्री अष्टाह्निका व्याख्यानम् ।



—: [illegible] :—

परमयोगीराज, शासनप्रभावक, पतितपावनोद्धारक, [illegible]

प्रभु श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी म०

—: [illegible]—संपादक :—

गुरुदेव [illegible]

मुनि जयन्तविजय 'मधुकर'

— प्रकाशक :—

श्री [illegible]

[illegible]

द्रव्य सहायक :
श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञानमन्दिर
श्राविका मण्डल
अहमदाबाद [गुजरात]

卐

—: प्राप्तिस्थान :—

श्री राजेन्द्रसूरि ज्ञानमंदिर
रतनपोळ–हाथीखाना,
अहमदाबाद

श्री मांगीलालजी बूरड
राणापुर [म. प्र.]
(जि० झाबुआ)

श्री वीर निर्वाण सं. २५००
श्री राजेन्द्रसूरि सं. ६७
विक्रम सं २०३०
द्वितीय संस्करण
मूल्य : २–०० रुपया।

★

मुद्रक :
कांतिलाल डी. शाह
भरत प्रिन्टरी,
दाणापीठ पाछळ,
पालिताणा

यत्किंचित् ।

पर्वाधिराज पर्यूषण !

इन्सान को भगवान एवं आत्मा को परमात्मस्थिति तक पहुँचाने [illegible] मार्ग-दर्शक बनते है ये पर्व !

छोटे से बड़े, आबालवृद्ध नर–नारियों में अपार हर्ष, उल्लास एवं उमंग की वृद्धि हो जाती है इन के आगमन पर !

जैन धर्म अपनी अहिंसात्मक आचारप्रणाली को व्यवहार में [illegible] है और इसी लिये इस के प्रत्येक पर्व में त्याग को प्राधान्य रहा है।

तप, संयम, दान एवं आश्रव निरोध की ऊंची सीढ़ियां [illegible] नता को प्रदर्शित करता है।

जीवन में और विशेष कर पर्वाधिराज के इन दिनों में जो [illegible] उन का विशद वर्णन प्रवचनों के माध्यम से [illegible] होता ही है।

त्यागमय जीवन एवं साधारण व्यवहार को जीवन में [illegible] अपना उत्थान आसानी से कर सकता है।

इन्सान में इन्सान के गुणों का आविर्भाव हो, इस के लिए [illegible] स्वाध्याय, अध्ययन, चिंतन, मनन परमावश्यक सहायक बनते है।

प्र का श की य

प्रस्तुत 'अष्टान्हिका व्याख्यान' जिन के मूल निर्माता 'श्रीमद् क्षमाकल्याणजी महाराज हैं, पाठकों के सामने प्रस्तुत है।

भाषान्तरकार है सकलागमरहस्यद्रष्टा, उत्कृष्ट क्रिया चारित्र पालक प्रातःस्मरणीय गुरुदेव प्रभु श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.।

पूर्व में पत्राकार में प्रस्तुत प्रकाशन प्रकाशित हुआ था किन्तु वर्तमान में उस प्रतियां अप्राप्य होने से विदुषी साध्वीजी श्रीमती हेतश्रीजी परम विनेया विदुषी साध्वीजी श्री मुक्तिश्रीजी का विशेष आग्रह रहा कि पुनर्मुद्रण कराया जाय। उन की भावनानुसार यह प्रकाशन त्रिभाषात्मक प्रकाशित किया जा रहा है, जिस से तद् भाषा भाषी इसका उपयोग कर सके।

इसका प्रकाशन भी उन्हीं के उपदेश से श्री राजेन्द्रसूरि ज्ञानमन्दिर के श्राविका मण्डल की ओर से किया जा रहा हैं। इस काम में गुरुदेवभक्तिपरायणा श्रीम चन्द्राबेन भंणसाली का सहयोग भी अवश्य ही उल्लेखनीय रहा है।

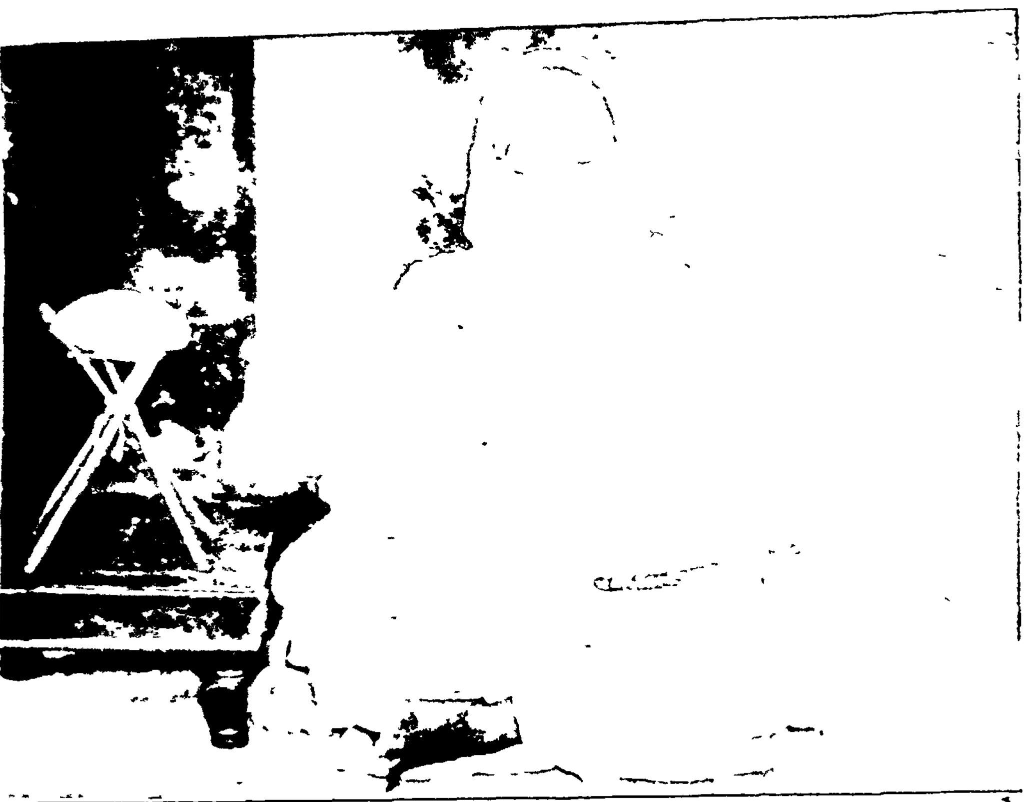
पर्वाधिराज के दिनों में अष्टान्हिका व्याख्यान का वांचन किया जाता है ि में आराधक आत्मा के कर्तव्यों की सम्पूर्ण व्याख्या हैं।

पाठक इस का लाभ उठावेंगे. यही

—प्र का श क



गुरुणीजी श्री मानश्रीजी म० की शिष्या



जन्म सं० १९५५, आहोर (राज०)

दीक्षा सं० १९७०, आहोर (राज०)

विनयगुण सम्पन्ना विदुषि साध्वीजी श्री हेतश्रीजी महाराज

सादर वन्दना।

ज्ञानध्यान-निमग्ना !
विनय-गुण-संपन्ना !
सेवा-गुण-संयुक्ता !

परमपूज्या गुरुणीजी विदुषी
श्रीमती [illegible] [illegible] की
प्रेरणा और [illegible]
सफल रही और [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
इन के चरणों में [illegible]
[illegible] हृदय से [illegible]
[illegible] !

—[illegible] [illegible]

१९८२ कुक्षी, १९८४ भैंसवाडा, १९८५ तखतगढ, १९८६ शीवगंज, १९८७ भीनमाल, १९८८ भीनमाल, १९८९ पालीताणा, १९९० अहमदाबाद, १९९१ अहमदाबाद, १९९२ थराद, १९९३ वागरा, १९९४ आहोर, १९९५ गुडा, १९९६ भैंसवाडा; इस प्रकार गुरुणीजी श्री मानश्रीजी, विनयश्रीजी आदि के साथ चातुर्मास किये।

१९९९ पालीताणा, २००० पालीताणा, २००१ पालीताणा, २००२ अहमदाबाद, २००३ वागरा, २००४ थराद, २००५ थराद, २००६ माचरोद, २००७ उज्जैन, २००८ जावरा, २००९ आली राजपुर, २०१० कुक्षी, २०११ राजगढ, २०१२ राजगढ, २०१३ मन्दसौर, २०१४ रतलाम क्रमशः श्रीमती कमलश्रीजी के साथ चातुर्मास व्यतीत किये।

१९९७ आहोर, १९९८ पाली, २०१५ जावरा, २०१६ आहोर, २०१७ आहोर, २०१८ थराद, २०१९ थराद, २०२० थराद और २०२१ से २०३० तक क्रमशः सभी चातुर्मास आपने स्वयंने किये।

सर्वत्र चातुर्मास में बहुत यश को प्राप्त किया और अपनी गुणगरिमा को प्रसारित किया।

आप की विनय सम्पन्नता अेवं सेवा भावना प्रत्येक के लिये अनुकरणीय एवं अनुमोदनीय है। समुदाय में आप की शिष्याएं निम्नांकित हैं जो आप की निश्रा में आत्मसाधना अेवं ज्ञानोपासना में रत हैं।

साध्वीजी श्री जयश्रीजी, २ श्री जयन्तश्रीजी, ३ श्री कुसुमश्रीजी, ४ श्री कुमुदश्रीजी, ५ श्री चन्द्रप्रभाश्रीजी, ६ श्री महाप्रभाश्रीजी, ७ श्री महेन्द्रश्रीजी, ८ श्री स्वयप्रभाश्रीजी, ९ श्री प्रेमलताश्रीजी, १० श्री पूर्णकिरणाश्रीजी, ११ श्री प्रियदर्शनाश्रीजी, १२ श्री तिलकप्रभाश्रीजी, १३ कनकप्रभाश्रीजी, १४ श्री किरणप्रभाश्रीजी, १५ श्री कल्पलताश्रीजी, १६ श्री कुशलप्रभाश्रीजी, १७ श्री कीर्तिप्रभाश्रीजी, १८ श्री प्रियलताश्रीजी, १९ श्री सुनन्दाश्रीजी २० श्री विजयाश्रीजी २१ श्री महिलाश्रीजी, २२ श्री सुदर्शनाश्रीजी. २३ श्री हर्षपूर्णाश्रीजी।

प्रस्तुत चरित्रनायिकाने अपने जीवन में ज्ञान-ध्यान के साथ दस उपवास, आठ उपवास व विशस्थानक तप की आराधना, वर्धमान चौवीसी तपाराधना की और आज इतनी वृद्धावस्था में भी अपनी क्रिया में अप्रमत्तभाव अवश्य ही उल्लेखनीय है। अष्टमी, चतुर्दशी को उपवास व पंचतिथि में आयंबिल की तपस्या नियमित चलती है।

वैयावच्च की भावना व प्रवृत्ति एक सशक्त को भी शर्मिन्दा कर दे अैसी है। सभी के साथ प्रेम, वात्सल्य और स्नेहार्द्र हृदय सब का प्रीतिपात्र बना चुका है।

दीक्षा से पूर्व सम्मेतशिखरादि पूर्व के क्षेत्रों की ओर दीक्षा के बाद गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश में विहार कर शत्रुंजय, गिरनार, आबु, शंखेश्वर, मक्षीजी, माण्डवगढ, जेसलमेर, भद्रेश्वर आदि तीर्थों की यात्रा की।

अपने गृहस्थाश्रम के पिताजी श्री जवानमलजी को आपने अन्तिम समय की आराधना करवा कर आत्मशान्ति दिलाई।

इस प्रकार अपने जीवन को सार्थक बनाते हुअे श्रीमती विदुषी गुरुणीजी म० श्री जीवन यापन कर रही हैं। हम धन्य हैं, हमें उनकी निश्रा प्राप्त हुई है।

शतशतायु हों आप यही अन्तर की कामना के साथ आप के चरणारविन्द में सभक्ति सादर सविधि वन्दनांजलि। शुभम्।

★

॥ ॐ अर्हते नमः ॥

शान्तीशं शान्तिकर्तारं, नत्वा स्मृत्वा च मानसे ।
अष्टाह्निकाया व्याख्यानं, लिख्यते गद्यबन्धतः ॥ १ ॥

[हिन्दी] जन गण मानस में एवं विश्व में शान्ति स्थापित करने वाले श्री शान्तिनाथ प्रभु को नमस्कार करके, उनका हृदय में स्मरण करके गद्यरूप [illegible] में अष्टाह्निका व्याख्यान लिखता हूं ॥ १ ॥

पर्युषण किसे कहते हैं ?

साधु (श्रमण) जन शेष और ग्रीष्म ऋतु के ८ मास [illegible] करते रहते हैं, वे वर्षाकाल में आषाढ़ [illegible] पूर्णिमा के पचास दिन पश्चात् [illegible] स्थान पर रहें, उसे पर्युषण (पजूसण) कहते हैं ।

[ગુ૦] સર્વ પ્રકારના દુષ્કર્મોને દૂર કરનારા, આલોક અને પરલોકમાં પણ કલ્યાણ કરનારા પર્વાધિરાજ શ્રી પર્યુષણના આગમન સમયે ૬૪ ઇન્દ્રો પોતાના સર્વ દેવી-દેવતાના પરિવાર સાથે ધર્મની પ્રભાવના અને આરાધના માટે નંદીશ્વર નામના આઠમા દ્વીપમાં જાય છે.

[सं०] तत्र तावत् नन्दीश्वरद्वीपस्य मध्यभागे चतुर्दिक्षु चत्वारोऽञ्जनगिरयः सन्ति । अञ्जनवर्णाः पर्वता इत्यर्थः । तेषां प्रत्येकं चतुर्दिक्षु चतस्रो वाप्यः सन्ति तासां वापीनां मध्यभागेषु दधिमुखपर्वताः दधिवर्णाः श्वेताः सन्ति पुनर्द्वयोर्वाप्योरन्तरेषु द्वौ द्वौ रतिकरपर्वतौ वर्तेते सर्वे रक्तवर्णाः इत्यर्थः ॥

[हिन्दी] वहां (अष्टम द्वीप में) नन्दीश्वर द्वीप के मध्य भाग में चारों दिशाओं में अंजनगिरि नाम के कृष्णवर्ण वाले चार पर्वत हैं। उन पर्वतों में प्रत्येक पर्वत की चारों दिशाओं में चार वावडियां हैं। उनमें से प्रत्येक वापिका के मध्य भाग में दही के समान श्वेत रंग के दधिमुख नाम के पर्वत हैं। फिर प्रत्येक वापिकाओं के अन्तर में दो दो लाल रंग वाले रतिकर नामक पर्वत हैं।

अष्ट द्वीप कौन २ से हैं ?

इस तिर्यक् लोक में जो जंबूद्वीप प्रमुख असंख्याता द्वीप हैं, और लवण समुद्र प्रमुख असंख्याता समुद्र हैं। जिनमें से ८ ये हैं:–(१) जम्बूद्वीप (२) धातकीखण्ड (३) पुष्करवर द्वीप (४) वारूणीवर द्वीप (५) क्षीरवर द्वीप (६) घृतवर द्वीप (७) इक्षुवर द्वीप (८) नन्दीश्वर द्वीप.

[ગુ૦] ત્યાં આઠમા નંદીશ્વર દ્વીપના મધ્ય ભાગમાં ચારે દિશાઓમાં અંજનગિરિ નામના કાળા વર્ણના ચાર પર્વતો છે. એ દરેકના ઉપર ચારે દિશાઓમાં ચાર વાવડીઓ છે. તેમાં પ્રત્યેક વાવડીની વચ્ચે દહીંના જેવા સફેદ રંગના દધિમુખ નામના પર્વતો છે. વળી પ્રત્યેક બબ્બે વાવડીઓ વચ્ચે લાલરંગના રતિકર નામના બે બે પર્વતો છે.

આઠ દ્વીપ કયા કયા ?

આ તિર્છાલોકમાં જંબૂદ્વીપ પ્રમુખ અસંખ્યાતા દ્વીપો છે, અને લવણસમુદ્ર પ્રમુખ અસંખ્યાતા સમુદ્રો છે. જેમાં આઠ દ્વીપ આ પ્રમાણે છે:– (૧) જંબુદ્વીપ, (૨) ધાતકીખંડ, (૩) પુષ્કરદ્વીપ, (૪) વારુણીવર દ્વીપ, (૫) ક્ષીરવરદ્વીપ, (૬) ઘૃતવરદ્વીપ, (૭) ઇક્ષુવરદ્વીપ, (૮) નંદીશ્વરદ્વીપ.

[सं०] एवं चैकैकाञ्जनगिरेः समन्तात् चत्वारो दधिमुखाः अष्टौ च रतिकराः सन्ति । मीलिते जाता द्विपञ्चाशत् गिरयः ते च पृथक् २ नामसंख्यया चत्वारोऽञ्जनगिरयः (४) षोडश दधिमुखाः (१६) द्वात्रिंशद्रतिकराः (३२) तेषामुपर्येकैकं जिनभवनमस्तीति द्विपञ्चाशज्जिनचैत्यानि सन्ति तेषु जिनचैत्येषु प्रत्येकं चतुर्विंशत्यधिकशतं जिनबिम्बानि सन्ति, सर्वेषां मिलितेऽष्टचत्वारिंशदधिकचतुःषट्शतानि जिनबिम्बानि भवन्ति (६४४८) ॥

[हिन्दी] इस प्रकार एक एक अंजनगिरि पर्वत के [illegible] चार दधिमुख और आठ आठ रतिकर पर्वत हैं । अंजनगिरि [illegible] पर्वत हैं । चारों दिशाओं को मिलाने से (५२) पर्वत होते हैं । [illegible] सोलह दधिमुख और बत्तीस रतिकर पर्वत [illegible] (५२) हैं । [illegible] ऊपर एक २ जिनमन्दिर हैं । इन मन्दिरों में [illegible] चन्द्रानन, वारिषेण, वर्धमान आदि तीर्थंकरों की प्रतिमा [illegible] प्रतिमाओं की संख्या [६४४८] [illegible]

" प्रतिमाओं की [illegible] छोटी [illegible] की हैं । ये सब प्रतिमाएं [illegible] शाश्वती [illegible]

ह्निकामहोत्सवं कुर्वन्ति। जल–चन्दन–पुष्प–धूपाद्यष्टविधद्रव्यैर्जिनबिम्बानि पूजयन्ति, जिनगुणान् गायन्ति, स्तुवन्ति नाटकं च विदधति। इत्थमष्टदिनावधि महोत्सवं समाप्य पुनः स्वस्थानं गच्छन्ति ॥

[हिन्दी] वे सारे जिनचैत्य चार चार दरवाजों वाले हैं। प्रत्येक मन्दिर शाश्वत रहनेवाले प्रवर तोरणों आदि से अलंकृत हैं। ये शाश्वत जिनालय अत्यन्त भव्य एवं सुन्दर हैं। वहां चौसठों इन्द्र बहुत से देवी और देवताओं के साथ बढ़ती हुई भावनाओं के साथ अष्टाह्निका महोत्सव करते है। इन दिनों में सब जल, चन्दन, पुष्प, धूप आदि अष्टविध द्रव्यों से जिनबिम्बों की पूजा करते हैं। जिनेश्वर भगवान के गुणों को गाते हैं, उनकी स्तुति करते हैं एवं वहां नाटक भी करते हैं। इस प्रकार आठ दिनों तक इस महोन्सव को करके फिर अपने अपने स्थान को चले जाते हैं ॥

"इस प्रकार का उत्सव चौमासी तथा भगवान के कल्याणक प्रमुख का भी करते हैं। यह बात श्री जीवाभिगम सूत्र तथा ज्ञाताधर्मकथा सूत्र में कही है ॥"

[ગુ०] દરેક જિનાલય ચાર ચાર દરવાજાવાળા છે. શાશ્વત રહેનારાં અને સુંદર તોરણોથી વિભૂપિત છે. એ શાશ્વત જિનભવનો ભવ્ય અને સુંદરતાથી યુક્ત છે. ત્યાં ચોસઠ ઇન્દ્રો દેવ–દેવીઓના પરિવાર સાથે ભાવના–ભક્તિથી ભરપૂર હૃદયથી અઠ્ઠાઇ મહોત્સવ કરે છે. અષ્ટ દ્રવ્યોથી જિનેન્દ્ર-પૂજન કરે છે જિનેશ્વર ભગવાનના ગુણગાન કરે છે. ભાવભરી સ્તુતિ અને નૃત્ય પણ કરે છે. આ પ્રમાણે આઠે દિવસ ઉત્સવ કરીને દરેક પોતપોતાના સ્થાને જાય છે.

આવો ઉત્સવ ચોમાસી અને તીર્થંકર ભગવંતોના કલ્યાણક પ્રમુખ પ્રસંગોમાં પણ કરે છે. આ વાત શ્રી જીવાભિગમ સૂત્ર તથા જ્ઞાતાસૂત્રમાં પણ કહેલી છે.

[मं०] एवं श्रावकैरपि श्रीमत्तीर्थंकरप्रकाशितेऽस्मिन् पर्वणि समागते धर्मकर्मणि यत्नो विधेयः तथा चास्मिन् पर्वणि श्रावकाणां कृत्यान्याह :—

[हिन्दी] इस प्रकार से श्रावकों को भी श्रीमत्तीर्थंकर द्वारा प्रकाशित इस पर्युषण पर्व के आने पर धर्म कर्म के सम्पादन करने में प्रयत्न करना चाहिये।

और इस पर्व में श्रावकों के क्या कर्तव्य–कृत्य हैं, उन्हें बताते हैं:—

[ગુ૦] આ રીતે શ્રાવકોએ પણ શ્રીમદ્ તીર્થંકર દ્વારા કહેવાયેલ આ પર્યુષણ પર્વ આવે ત્યારે ધર્મ–કર્મના સંપાદનમાં વિશેષ પ્રયત્ન કરવો જોઈએ.

આ પર્વમાં શ્રાવકોએ શું શું ધર્મ–કર્મ કરવાં જોઈએ તે કહું છું:-

पर्युषण पर्वः—

[हिन्दी] "यह पर्युषण पर्व सब पर्वों में बड़ा पर्व है। इसके समान दूसरा कोई भी पर्व नहीं है, इस लिये विशेष करके, प्रमाद का त्याग कर धर्म [illegible] करना चाहिये, क्यों कि यह मनुष्य जन्म, उत्तम जाति, उत्तम कुल, [illegible] बताया धर्म बारम्बार मिलना कठिन है। [illegible] तो भव व्यर्थ है, प्रमाद में यह जीवन नहीं बिताना चाहिये। [illegible] फिर चोरासी लाख जीवायोनियों में भ्रमण करते हुए [illegible]

इस लिये इस पर्व में तो अवश्य [illegible] सफल कर लेना चाहिये॥

विरुद्ध न हो।" देव अरिहंत, गुरु निर्ग्रंथ, केवलिभाषित दयामूल धर्म, इन तीनों तत्त्वों को अन्तःकरण से पालन करने वाले ही श्रावक, सही अर्थों में श्रावक हैं।"

[ગુ૦] દુનિયામાં સૌ ધર્મ, ધર્મ એમ કહે છે પણ ધર્મ શું ચીજ છે તેને ઓળખવો અને જાણવો એ બહુ મુશ્કેલ વસ્તુ છે. પાખંડી લોકો પોતાનું પેટ ભરવા માટે ધર્મના જુદી જુદી રીતે અર્થો કરે છે, પરંતુ આ પાખંડીઓનું કહેવું બધું અસત્ય છે; કારણ કે તેમને ધર્મનો માર્ગ પણ હાથ લાગ્યો નથી. સાચો ધર્મ એ કહેવાય જેમાં હિંસા વગેરે આશ્રવોનો ત્યાગ હોય અને જે કેવળીઓના વચનોથી વિરુદ્ધ ન હોય. "દેવ અરિહંત, ગુરુ નિર્ગ્રંથ, અને કેવળીઓએ કહેલો દયા જેના મૂળમાં છે એવો ધર્મ—આ ત્રણે તત્ત્વોનું અંતઃકરણપૂર્વક પાલન કરનારા શ્રાવકો જ ખરા અર્થમાં શ્રાવકો છે."

आश्रव–कषाय–रोधः कर्तव्यः श्रावकैः शुभाचारैः ।
सामायिक–जिनपूजा–तपोविधानादि–कृत्यपरैः ॥ १ ॥

[सं०] तत्राश्रवाः पञ्च ते चामी,–प्राणातिपात–मृषावादाऽदत्तादान–मैथुन–परिग्रहास्तेषां रोधो निरोधः अर्थात्तत्यागः कर्तव्यः ।

[हिन्दी] आश्रव कषायों को रोकना चाहिये। सामायिक, जिनपूजा, तप के विधानादि कृत्य करने में शुभ आचरण से युक्त श्रावकों को तत्पर रहना चाहिये। आश्रव पांच हैं, वे हैं...(१) प्राणातिपात (२) मृषावाद (३) अदत्तादान (४) मैथुन (५) परिग्रह; इन पांचो का रोध अर्थात् त्याग करना चाहिये।

[ગુ૦] આશ્રવ–કષાયોને રોકવા જોઈએ. સામાયિક, જિનપૂજા, અને તપના વિધાનો વગેરે શુભકૃત્યોમાં સારા આચરણવાળા શ્રાવકોએ હંમેશ તત્પર રહેવું જોઈએ. આશ્રવ પાંચ છે. (૧) પ્રાણાતિપાત, (૨) મૃષાવાદ, (૩) અદત્તાદાન, (૪) મૈથુન, (૫) પરિગ્રહ આ પાંચેયનો રોધ એટલે ત્યાગ કરવો જોઈએ.

दाने

[हिन्दी] इस मत में प्रथम द्वि इन्द्रिय आदि जीवों की विराधना (उन्हें उपयोग सहित मारना) श्रावकों को छोड़ देना चाहिए. क्योंकि "सभी दानों में अभयदान ही श्रेष्ठ है. ऐसा "सूयगडांगजी सूत्र में कहा है" तथा अन्यत्र भी कहा है।

"प्राणातिपात के अन्तर्गत दो इन्द्रियों वाले, तीन इन्द्रियों वाले, चार इन्द्रियों वाले, पांच इन्द्रियों वाले व त्रस जीव, और एक इन्द्रिय वाले पृथ्वीकायादि स्थावर-[illegible] जीव, इनको बिना अपराध के मारने का श्रावकों को त्याग करना चाहिये। और फिर पर्युषण महापर्व में तो विशेष करके, उपयोग सहित [illegible] मारने का त्याग करना चाहिये, क्योंकि इसके सभी में भी अभयदान ही श्रेष्ठ [illegible] है।

[ગુજ૦] આ મતમાં બેઈન્દ્રિય વગેરે [illegible] વિરાધના (તેમને ઉપયોગ સાથે મારવા) શ્રાવકોએ [illegible] કે "બધા દાનોમાં અભયદાન જ શ્રેષ્ઠ છે" [illegible] કહ્યું છે તથા બીજે પણ કહ્યું છે.

बराबर सोना (सुवर्ण) किसी को दान में देवें और एक सम्पूर्ण पृथ्वी का दान देवें, और एक मनुष्य किसी भी प्राणी को अभयदान देवें तो भी प्रथम के दोनो दानी अभयदान देने वाले के आगे हीन हैं, क्यों कि इस संसार में अहिंसा के तुल्य कुछ भी नहीं है ॥ २ ॥

[ગુ૦] મરવાવાળા મનુષ્યને કોઈ કરોડ રૂપિયાની આજીવિકા આપી દે, તો પણ તે તેને લેવાની ઇચ્છા નહીં કરે; કેમ કે સૌને પોતાનો પ્રાણ સૌથી વહાલો છે. મર્યા પછી તે ધન શું કામમાં આવશે? "

શ્રીકૃષ્ણ યુધિષ્ઠિરને કહે છે કે હે યુધિષ્ઠિર, ! કોઈ માણસ મેરુ પર્વત જેટલું સોનું કોઇને દાનમાં દે, કોઈ આખી પૃથ્વી દાનમાં આપે અને એક માણસ કોઇ પ્રાણીને અભયદાન આપે તો પહેલા બન્ને દાની અભયદાન આપવાવાળા માણસ કરતાં નીચા છે. કારણ કે આ સંસારમાં અહિંસા જેવું શ્રેષ્ઠ કાંઇ પણ નથી. ૨.

[हिन्दी] " इस संसार में मरने (मृत्यु) के समान भय नहीं हैं, पैदल चलने के समान दुःख नहीं है, भूखों मरने के समान तकलीफ (वेदना) नही हैं, दरिद्रता के समान मानहीनपना नही हैं तथा संसार के सभी प्राणी सुख के अभिलाषी हैं, कोई भी दुःख का अभिलाषी नहीं होता हैं।

अतः श्रावकों को चाहिये कि वे कुव्यापार नहीं करें, विना छानें पानीं को काम में न लें, इस पर्युषण पर्व में तो खास करके हिंसा के कार्य न करें, केवल भोजन के विना काम नहीं चलता अतः कार्य, उपयोगपूर्वक खाने जितना ही आरंभ करें। किन्तु ज्यादा आरंभ नहीं करे। उसमें भी कंडे (छाणा) लकडी देख के जीव-जन्तु रहित काम में लेवे। चूल्हे को वर्तनो के स्थान को अच्छी तरह देख लेवें, जल के वर्तन खुले न रक्खें, चंदोवा (वितान) बांधे विना रसोई इत्यादि कार्य न करें, इस तरह जीवदया का पालन करते हुए इस भव में ही सुखप्रद हों तो परभव में सुखप्रद हों. इस में क्या आश्चर्य? अर्थात दूसरे भव में तो सुख देने वाले होंगे ही।

[ગુ૦] આ સંસારમાં મૃત્યુ જેવો કોઇ ભય નથી, પગે ચાલવ જેવું કોઇ દુઃખ નથી, ભૂખે મરવા જેવી કોઇ વેદના નથી, અને ગરીબાઈ જેવું કોઇ અપમાનકારક નથી. સંસારમાં સૌ પ્રાણી સુખના અભિલાષી છે. કોઈ દુઃખ ઇચ્છતું નથી.

એટલા માટે શ્રાવકોએ કોઈ વિરુદ્ધ આચરણ ન કરવું જેમકે: ગળ્યા વિનાના પાણીનો ઉપયોગ ન કરવો જોઈએ. આ ચાતુર્માસમાં તો ખાસ કરીને હિંસા થાય એવું કામ કોઈ ન કરે. પાણી અને ભોજન વિના ચાલતું નથી. તેથી ઉપયોગ જેટલું જ લેવું પણ વધારે લેવું નહીં. તેમાં છાણાં, લાકડાં વગેરે ખાસ તપાસીને [illegible] ઉપયોગ કરવો. ચૂલા અને વાસણ રાખવાની જગ્યા [illegible] વાસણ ઉઘાડાં ન રાખો. ચૂલાના ઉપરના ભાગમાં [illegible] બાંધ્યા સિવાય રસોઈ ન કરો. આ રીતે [illegible] આ ભવમાં સુખ મેળવે: તો પછી [illegible] આશ્ચર્ય ? મતલબ કે આ ઉપદેશના [illegible] આચરણ કરો જ.

[सं०] सच कीदृशः—कण्ठन्यस्त—रक्त—करवीरमालो रक्त—वस्त—परिधानो, रक्त चन्दनानुलिप्त—गात्रः पुरस्ताद्वाद्यमान—वध्य—डिंडिमः इत्थं विविध—विडम्बनाभिर्विडम्ब्यमानं तं चौरं दृष्ट्वा राज्ञीभिः पृष्टं, किमकार्यमनेनाकारीति ॥

[हिन्दी] उस चोर के कण्ठ में लाल कणेर के फूलों की माला थी, उसके वस्त्र भी लाल थे, उसके शरीर पर लाल चन्दन का लेप लगा हुआ था। वह कठिन रज्जुओं से बंधा हुआ था, उसके आगे एक राजपुरुष ढिंढोरा पीटता हुआ चल रहा था। (वह ढिंढोरेवाला उच्च स्वर में कह रहा था:—देखो रे लोकों! "जा कोई भी उस की तरह चोरी करेगा उसका यही हाल होगा।)"

इस तरह की तकलीफ व अपमान पाता हुआ वह चोर वध्य स्थल को ओर ले जाया रहा था। ऐसे चोर को देख कर राजा की इन चारों रानियोंने पूछा, हे महाराज! इसने क्या अकृत्य किया है?

[ગુ०] એ ચોરના ગળામાં લાલ કણેરના ફુલની માળા હતી, એનાં વસ્ત્રો પણ લાલ હતાં અને એના શરીર ઉપર લાલ ચંદનનો લેપ કરેલો હતો. તેને કઠણ દોરડાઓથી બાંધ્યો હતો અને તેની આગળ એક રાજકર્મચારી ઢંઢેરો પીટતો ચાલતો હતો અને ઊંચે સ્વરે લોકોને કહેતો હતો કે "જે કોઈ આની જેમ ચોરી કરશે તેના આવા હાલ થશે."

આ પ્રમાણે તકલીફ અને અપમાન પામતા તે ચોરને વધ્યસ્થળે લઇ જવામાં આવતો હતો. આવા ચોરને જોઇને રાજાની એ ચારે રાણીઓએ પૂછ્યું "હે મહારાજ! આ માણસે શું ગુન્હો કર્યો છે?"

[सं०] तदा एकेन राजपुरुषेण तासां पुरः कथितं परद्रव्यापहारेण राजविरुद्ध-मनेन कृतमिति ततः सञ्जातकृपया एकया राज्या विज्ञप्तो राजा। स्वामिन्! यो भवता मम प्राग्वरः प्रतिपन्नः सोऽधुना दीयतां येनाहमेकदिनमुपकरोमि चौरम्। तदा कथंचिद्राज्ञा प्रतिपन्नं च तद्वचः।

[हिन्दी] तब एक राजपुरुषने बताया कि इस चोरने दूसरों के धन को चुराया है, इस तरह राजा के नियमों के विरुद्ध करने से यह दण्डित हुआ है। (प्राणदण्ड के लिये ले जाया रहा है) तब एक रानी के मन में यह सुन कर दया उत्पन्न हुई। उसने राजा से निवेदन किया कि हे स्वामी! आपने मुझे पहले जो एक वर देने को

कहा था कि अब आप मुझे दें, ताकि मैं इस चोर का एक दिन सत्कार करूं। राजाने विस्मित होकर उस रानी का कहना मान लिया। (उस दिन वह चोर वधस्थल [illegible] नहीं गया और राजा के वचन से पहली रानी के प्रासाद में [illegible] हुआ।)

[ગુ૦] ત્યારે એક રાજપુત્રે કહ્યું કે "આ ચાણક્ય [illegible] છે. આથી રાજ્યના નિયમોની વિરુદ્ધનું કામ કરવા માટે તેને [illegible] કરવામાં આવી છે, ને [illegible] દેવા માટે તેને વધસ્થાને [illegible] આવે છે." આ સાંભળીને એક રાણીના મનમાં દયા [illegible] રાજાને પ્રાર્થના કરી કે—"સ્વામી! આપે મને [illegible] માગવાનું કહેલું તે આજે હું માગું છું. [illegible] તેને [illegible] આપવા [illegible]." [illegible] કહેલ [illegible] માની લીધું અને રાજાની આજ્ઞાથી [illegible] રાણીના મહેલમાં [illegible]

[सं०] ततः पञ्चम्या दुर्भगया राज्ञ्या पञ्चमदिने राज्ञः समीपमागत्य विनयनम्रतया दीनवचसा नृपो विज्ञप्तः । स्वामिन् ! मम दुर्भगाया उपरि भवदीया तादृशी कृपा नास्ति तेन मया कदापि भवन्तो न याचिताः । अधुनाऽस्य चौरस्य जीवितदानं मया त्वं याच्यसे तदा राज्ञापि जीवितप्रदानपूर्वकं चौरोऽस्यै प्रदत्तोऽनया च तं चौरं स्वगृहे नीत्वा सामान्यभोजनेन भोजयित्वा कथितं "मया तुभ्यं जीवितं प्रदत्तं पुनः चौर्यं मा कार्षीः ॥

[हिन्दी] तब पांचवी दुर्भगा रानीनें पांचवे दिन राजा के पास आकर सविनय कहा, "हे स्वामी ! मुझ अभागिन पर आपकी वैसी कृपा नहीं है, अतः मैंने कभी भी आप से वर नहीं प्राप्त किया । अब इस चोर को "जीवनदान" देने की मेरी प्रार्थना है । राजानें भी चोर को 'जीवनदान' देनें की उसकी प्रार्थना स्वीकार की । और वह चोर रानी को सौंप दिया । रानी उसे अपनें महल में ले गई, उसे उसनें सामान्य भोजन कराकर कहा, हे चोर ! मैंने तुझे जीवन से अभयदान दिलाया है, अब तुम्हें मृत्यु का भय नही है, अब से तुम फिर कभी भी चोरी का काम मत करना ।

[ગુ०] પાંચમે દિવસે પેલી અભાગી પાંચમી રાણીએ રાજાની પાસે જઇને સવિનય પ્રાર્થના કરી: "હે સ્વામી ! મારી અભાગણી પર આપની એવી કોઇ કૃપા થઇ નથી તેથી મને કોઇ વરદાન મળ્યું નથી. પણ આ ચોરને આપ "જીવનદાન" આપો એવી મારી પ્રાર્થના છે-તેને આપ છોડી મૂકો." રાજાએ તે ચોરને જીવનદાન દેવાની રાણીની પ્રાર્થનાનો સ્વીકાર કર્યો અને તે ચોરને રાણીને સોંપી દીધો. રાણી એને પોતાના મહેલમાં લઇ ગઈ તેને તેણે સામાન્ય ભોજન કરાવીને પછી કહ્યું: "હે ચોર ! મેં તને જીવનદાન અપાવ્યું છે. હવે તને મૃત્યુનો કોઇ ભય નથી, માટે હવેથી તું કદી ચોરી કરીશ નહિ."

[सं०] ततोऽसौ हृष्टस्तदा सपत्नीभिर्हसितं नास्य त्वया किञ्चित्सुखकारि कृतं तासां च परस्परं बहूपकारविषये विवादे संजाते राजा स एव चौरः समाहूय पृष्टोऽहो कथा तव बहूपकारः कृतः ? इति ।

[हिन्दी] इस से वह चोर प्रसन्न हो कर चला गया । इसके बाद उस रानी की सपत्नियोंने पांचवी रानी का मजाक उड़ाया । उन्होंने कहा कि तुमने हमारे बराबर इस चोर का कोई उपकार नहीं किया । हम से वह चोर ज्यादा उपकृत हुआ है ।

इन सब सबसे ज्यादा उस चोर पर किसने उपकार किया ? इस विषय पर उन पांचो में वादविवाद हुआ । इस पर राजाने उस चोर को ही निर्णय के लिये बुलाया । राजाने चोर से पूछा, स्वामी ! इन पांचों रानियों में से सबसे अधिक तुम्हारा उपकार किसने किया ?

[ગુ૦] આથી તે ચોર પ્રસન્ન થઈને બોલ્યો [illegible] પાંચમી રાણીની સેવાચાકરીએ [illegible] તે ચોર ઉપર અભયદાન [illegible] ઉપકાર નથી કર્યો, [illegible] મોટો ઉપકાર કર્યો છે. આથી રાજા [illegible] આ પાંચ રાણીઓ [illegible] રાજાએ તે ચોરને જ તેના નિર્ણય માટે [illegible] "આ પાંચ રાણીઓમાં કોણે વધારે ઉપકાર [illegible]

शास्त्रों का खूब पठन, ये सब वस्तुएँ अभयदान के पुण्य की सोलहवीं कला की भी बराबरी नहीं कर सकती है। अर्थात् इन तपादि कार्यों का फल अभयदान के पुण्य के आगे तुच्छ हैं ॥ ७ ॥

[ગુ૦] "હે યુધિષ્ઠિર! હજારો કપિલા ગાયોનું બ્રાહ્મણોને દાન કરવાથી જેટલું ફળ મળતું નથી તેટલું કોઇ એક પ્રાણીને જીવનદાન દેવાથી મળે છે. ॥ ૬ ॥ ખૂબ ઇચ્છાનુસાર કરેલું તપ, તીર્થયાત્રા અને તીર્થસેવન, વેદ વગેરે શાસ્ત્રોનું અધ્યયન—આ બધી વસ્તુઓ અભયદાનના પુણ્યની સોળમી કળાની પણ બરોબરી કરી શકતાં નથી. એટલે કે આ બધાં તપોનું પુણ્ય અભયદાનના પુણ્ય આગળ તુચ્છ છે. ॥ ૭ ॥

[सं०] हेम–धेनु–धरादीनां, दातारः सुलभा भुवि ।
दुर्लभः पुरुषो लोके, यः प्राणिष्वभयप्रदः ॥ ८ ॥
सप्तद्वीपां सरत्नां च, दद्यात् मेरुं च काञ्चनम् ।
यस्य जीवदया नास्ति, सर्वमेतन्निरर्थकम् ॥ ९ ॥

[हिन्दी] इस संसार में सुवर्ण, गाय और पृथ्वी को दान देने वाले लोग सरलता से मिल सकते हैं, किन्तु प्राणियों को अभयदान देने वाला व्यक्ति मिलना कठिन है ॥ ८ ॥

चाहे कोई सात द्वीप रत्नों से भर कर दान में दे दे, सोने का मेरुपर्वत दान में दे दे किन्तु जिसके चित्त में दया न हो, उसके ये सब दान निरर्थक है ॥ ९ ॥

विशेषः—भारत में भी कहा है। (यह शांति पर्व में कहा है) कि मनुष्य को त्याग, भोग और उसकी शोभा की वृद्धि इत्यादि सारे कार्य 'अभयदान' से ही सफल होते है ॥

[ગુ૦] આ સંસારમાં સોનું, ગાય અને પૃથ્વીનું દાન કરવાવાળા લોકો સરળતાથી મળી શકે છે, પણ પ્રાણીઓને અભયદાન દેનાર વ્યક્તિ મળવી કઠણ છે. ॥ ૮ ॥

ભલે કોઇ સાત બેટ રત્નોથી ભરીને દાનમાં દઇ દે, સોનાનો મેરુપર્વત દાનમાં દઇ દે, પણ જેના ચિત્તમાં દયા ન હોય એનાં એ બધાં દાન નિરર્થક છે. (આ શાન્તિપર્વમાં કહ્યું છે.)

મહાભારતમાં પણ કહ્યું છે કે–'મનુષ્યના ત્યાગ, તેજ અને શોભાની વૃદ્ધિ વગેરે બધાં કાર્ય 'અભયદાન'થી જ સફળ થાય છે.

[सं०] अहिंसा परमो धर्म–स्तथाऽहिंसा परं तपः ।
अहिंसा परमं ज्ञानं, अहिंसा परमं पदम् ॥१०॥

अहिंसा परमं दानं, अहिंसा परमो दमः ।
अहिंसा परमो यज्ञ–स्तथाऽहिंसा परं फलम् ॥११॥

[हिंदी] अहिंसा उत्कृष्ट धर्म है, अहिंसा उत्कृष्ट तप है, अहिंसा उत्कृष्ट ज्ञान है। अहिंसा ही उत्कृष्ट स्थान है ॥१०॥ अहिंसा उत्कृष्ट दान है, अहिंसा उत्कृष्ट इन्द्रिय दमन है, अहिंसा उत्कृष्ट यज्ञ है और अहिंसा ही उत्कृष्ट फल है ॥११॥

शास्त्रों का खूब पठन, ये सब वस्तुएँ अभयदान के पुण्य की सोलहवीं कला की भी बराबरी नहीं कर सकती है। अर्थात् इन तपादि कार्यों का फल अभयदान के पुण्य के आगे तुच्छ हैं ॥ ७ ॥

[ગુ૦] "હે યુધિષ્ઠિર! હજારો કપિલા ગાયોનું બ્રાહ્મણોને દાન કરવાથી જેટલું ફળ મળતું નથી તેટલું કોઇ એક પ્રાણીને જીવનદાન દેવાથી મળે છે. ॥ ૬ ॥ ખૂબ ઇચ્છાનુસાર કરેલું તપ, તીર્થયાત્રા અને તીર્થસેવન, વેદ વગેરે શાસ્ત્રોનું અધ્યયન–આ બધી વસ્તુઓ અભયદાનના પુણ્યની સોળમી કળાની પણ બરોબરી કરી શકતાં નથી. એટલે કે આ બધાં તપોનું પુણ્ય અભયદાનના પુણ્ય આગળ તુચ્છ છે. ॥ ૭ ॥

[सं०] हेम–धेनु–धरादीनां, दातारः सुलभा भुवि ।
दुर्लभः पुरुषो लोके, यः प्राणिष्वभयप्रदः ॥ ८ ॥
सप्तद्वीपां सरत्नां च, दद्यात् मेरुं च काञ्चनम् ।
यस्य जीवदया नास्ति, सर्वमेतन्निरर्थकम् ॥ ९ ॥

[हिन्दी] इस संसार में सुवर्ण, गाय और पृथ्वी को दान देने वाले लोग सरलता से मिल सकते हैं, किन्तु प्राणियों को अभयदान देने वाला व्यक्ति मिलना कठिन है ॥ ८ ॥

चाहे कोई सात द्वीप रत्नों से भर कर दान में दे दे, सोने का मेरुपर्वत दान में दे दे किन्तु जिसके चित्त में दया न हो, उसके ये सब दान निरर्थक है ॥ ९ ॥

विशेषः–भारत में भी कहा है। (यह शांति पर्व में कहा है) कि मनुष्य को त्याग, भोग और उसकी शोभा की वृद्धि इत्यादि सारे कार्य 'अभयदान' से ही सफल होते हैं ॥

[ગુ૦] આ સંસારમાં સોનું, ગાય અને પૃથ્વીનું દાન કરવાવાળા લોકો સરળતાથી મળી શકે છે, પણ પ્રાણીઓને અભયદાન દેનાર વ્યક્તિ મળવી કઠણ છે. ॥ ૮ ॥

ભલે કોઇ સાત બેટ રત્નોથી ભરીને દાનમાં દઇ દે, સોનાનો મેરુપર્વત દાનમાં દઇ દે, પણ જેના ચિત્તમાં દયા ન હોય એનાં એ બધાં દાન નિરર્થક છે. (આ શાન્તિપર્વમાં કહ્યું છે.)

મહાભારતમાં પણ કહ્યું છે કે-'મનુષ્યના ત્યાગ, ભોગ અને શોભાની વૃદ્ધિ વગેરે બધાં કાર્ય 'અભયદાન'થી જ સફળ થાય છે.

[सं०] अहिंसा परमो धर्म–स्तथाऽहिंसा परं तपः ।
अहिंसा परमं ज्ञानं, अहिंसा परमं पदम् ॥१०॥

अहिंसा परमं दानं, अहिंसा परमो दमः ।
अहिंसा परमो यज्ञ,–स्तथाऽहिंसा परं पदम् ॥११॥

[हिन्दी] अहिंसा उत्कृष्ट धर्म है, अहिंसा उत्कृष्ट तप है, अहिंसा उत्कृष्ट ज्ञान है। अहिंसा ही उत्कृष्ट स्थान है ॥१०॥ अहिंसा उत्कृष्ट दान है, अहिंसा उत्कृष्ट इन्द्रिय दमन है, अहिंसा उत्कृष्ट यज्ञ है और अहिंसाही सबसे बडा ठिकाना है ॥११॥

[ગુ૦] "અહિંસા શ્રેષ્ઠ ધર્મ છે, અહિંસા શ્રેષ્ઠ તપ છે, અહિંસા પરમ જ્ઞાન છે. અહિંસા જ ઉત્કૃષ્ટ સ્થાન છે. ॥ ૧૦ ॥

અહિંસા ઉત્કૃષ્ટ દાન છે, અહિંસા ઉત્કૃષ્ટ ઇન્દ્રિયદમન છે, અહિંસા ઉત્કૃષ્ટ યજ્ઞ છે અને અહિંસા જ સૌથી મોટું પદ છે. ॥ ૧૧ ॥

[सं०] उदकं नैव पातव्यं, रात्रौ च हे युधिष्ठिर ।
तपस्वीनां विशेषेण, गृहिणां च विवेकनाम् ॥१२॥

अस्तं गते दिवानाथे, आपो रुधिरमुच्यते ।
अन्नं मांससमं प्रोक्तं, मार्कण्डेन महर्षिणा ॥१३॥

[हिन्दी] हे युधिष्ठिर ! अहिंसा व्रतधारी मानवों को श्रावकों को और विवेकी पुरुषोंको तथा खासकर तपस्वी साधुओं को रात्रि में जल नहीं पीना चाहिये ॥१२॥ क्योंकि मार्कण्डेय ऋषिनें बताया है कि सूर्य अस्त हो जाने के बाद पानी खून के समान माना जाता है, और अन्न मांस के बराबर कहा गया है ॥१३॥

विशेषः–रात्रि को जल ढोलना भी नहीं चाहिये क्योंकि इससे अनेक जीवों का नाश होता है। त्यागी पुरुषों को भी अगर जल से काम पड़े तो थोड़े से जलसे काम निकाल लेना चाहिये। गृहस्थों को विवेकसे जल ढोलना चाहिये। इसी तरह रात्रि भोजन भी वर्जनीय है।

खासकर पर्युषण पर्वमें रात को भोजन का त्याग करना ही चाहिये। अगर हो सके तो चार महिना चौमासे में रात को नहीं खाना चाहिये, क्योंकि अगर खाने में कीड़ी आजाय तो मानव बुद्धिहीन होवे, जूँ (यूका) खानें में आवे तो जलोदर रोग हो, कोली (करोलिया) खाने में आवे तो रक्तपीतिया कोढ़ रोग हो, माखी खानें में आवे तो वमन (उलटी, कै) हो जाय।

और भी कहा है कि रात्रि को खाने वाले लोग मरनें के बाद प्रायः (घूघू) उल्लू, वागुल, चमगादड़, बिलाड़, गर्दभ इत्यादि योनियों को प्राप्त होते हैं। जो लोग इन दिनों में रात्रिभोजन का त्याग करते हैं, उन्हें एक पक्षकी तपस्या का लाभ होता है।

[ગુ૦] "હે યુધિષ્ઠિર! અહિંસા વ્રતધારી માણસોએ, શ્રાવકોએ અને વિવેકી પુરુષોએ તથા ખાસ કરીને તપસ્વી સાધુઓએ રાત્રે પાણી નહીં પીવું જોઇએ. ॥ ૧૨ ॥ કારણ કે માર્કંડેય ઋષિએ કહ્યું છે કે સૂર્યાસ્ત પછી પાણી લોહીની બરોબર અને અન્ન માંસની બરોબર ગણવામાં આવે છે. ॥ ૧૩ ॥

"રાત્રે પાણી ઢોળવું પણ ન જોઇએ. કારણ કે તેથી અનેક જીવોનો નાશ થાય છે. ત્યાગી પુરુષોને પણ જો પાણીની જરૂર પડે તો થોડામાં થોડા પાણીથી કામ પતાવી લેવું જોઇએ. ગૃહસ્થોએ વિવેકથી પાણી ઢોળવું જોઇએ. એ રીતે રાત્રિ-ભોજન પણ વર્જ્ય છે.

ખાસ કરીને પર્યુષણ પર્વમાં રાત્રિ-ભોજનનો ત્યાગ કરવો જોઇએ. બની શકે તો ચોમાસાના ચાર મહિના રાત્રે જમવું ન જોઇએ. કારણ કે જો ખાવામાં કીડી આવી જાય તો માણસ બુદ્ધિહીન થઇ જાય; જૂ આવી જાય તો જળોદરનો રોગ થાય, કરોળિયો ખાવામાં આવે તો રક્તપિતિયા કોઢ રોગ થાય, માખી ખાવામાં આવે તો ઉલટી થઇ જાય.

વળી એમ પણ કહ્યું છે કે રાત્રે ભોજન કરવાવાળા લોકો મર્યા પછી મોટે ભાગે ઘુવડ, બગલા, કાનકડિયાં, બિલાડા, ગધેડાં વગેરે યોનિમાં જન્મ પામે છે. જે માણસો આ દિવસોમાં રાત્રિ-ભોજનનો ત્યાગ કરે છે તેમને એક પખવાડિયાની તપસ્યાનો લાભ મળે છે."

[सं०] अतः सुश्रावकेणात्र पर्वणि खनन-पेषण-वस्त्रक्षालनाद्यारम्भो विवर्जनीयः। तैलिक-[illegible]-भाड़-कर्मकादिषु वाचा, धनव्ययेन चारम्भो निवारणीयः, स्व-

शक्त्या बन्दिमोक्षश्च कार्यः, ग्राम–नगर–मध्येऽमारिघोषणा कारयितव्या येन केनापि प्रकारेण जीवरक्षा कार्या ॥

[हिन्दी] इसलिये सुश्रावक को इस पर्युषण पर्वमें खोदना, पीसना, वस्त्र धोना आदि कार्यों को नहीं करना चाहिये, और घाणी निकलवाना आदि तेल निकालने के कार्य, लोहार के कार्य, माटी कर्म (चूडीगर–भडभूंजा के कर्म) इत्यादि कार्यों को वचन से अथवा धन खर्च करके भी बन्द कराने चाहिये। अपनी शक्ति के अनुसार बन्दी मोचन कार्य करना चाहिये, गांव और शहर के मध्यमें अभयदान की घोषणा करानी चाहिये और किसी भी तरह से जीवों की रक्षा करनी चाहिये ॥ इस प्रकार पर्युषण पर्वमें विशेष करके प्रथम आश्रवका त्याग करना चाहिये।

[ગુ૦] એટલા માટે સારા શ્રાવકોએ આ પર્યુષણ પર્વમાં ખોદવું, દળવું, વસ્ત્રો ધોવાં વગેરે કામો ન કરવાં જોઇએ. વળી ઘાણી કઢાવવી તથા ઘાણી ચલાવવી, લુહારની ભઠ્ઠી ચલાવવી, ભાડભૂંજાનું કામ વગેરે કાર્યો સમજાવીને અથવા પૈસા ખરચીને પણ બંધ કરાવવાં જોઇએ. પોતાની શક્તિ અનુસાર કેદીઓને છોડાવવાનું કામ પણ કરવું જોઇએ. ગામ અને શહેરમાં 'અભયદાન'ની ઘોષણા કરાવવી જોઇએ અને કોઈ પણ રીતે જીવોનું રક્ષણ કરવાનું કામ કરવું જોઇએ. આ રીતે પર્યુષણ પર્વમાં ખાસ કરીને પહેલા આશ્રવનો ત્યાગ કરવો જોઇએ.

[मं०] द्वितीयाश्रवपरित्यागे मृषावचनमत्र पर्वणि न वक्तव्यं गालिप्रदानादि–कठिनवाणी न वाच्या सर्वथा वाक्शुद्धिः कार्या।

[हिन्दी] द्वितीय आश्रव त्याग में निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिये। पर्युषण पर्वके आने पर विशेषतः झूठ न बोलें, गाली नहीं देवें, कठोरवचन नहीं बोलें, सब तरह से वचनशुद्धि करें। झूठी साक्षी नहीं भरें, मिश्र वचन नहीं कहना।

विशेषः–वसुराजाने थोड़ा ही मिश्रवचन कहा था जिससे वह नरक में गया और अनन्ताभव संसार बढ़ा लिया, जिसकी कथा आत्म प्रबोध–प्रमुख ग्रन्थों में प्रसिद्ध है, इसलिये यहां नहीं लिखी।

झूठ बोलने वाला मृत्यु के उपरान्त नये जन्म में मूक (गूंगा) होता है, वह महा दुःख देखता है। कहा भी है :–

[ગુ૦] બીજા આશ્રવના ત્યાગમાં નીચેની બાબતોનું ધ્યાન રાખવું જોઇએ.

પર્યુષણ પર્વ આવે ત્યારે ખાસ કરીને જુઠું ન બોલે. ગાળ ન દે, કઠોર વચનો ન બોલે, ખોટી સાક્ષી ન દે, અને મિશ્રવચનો ન કહે એમ બધી રીતે વચનશુદ્ધિ કરે.

વસુ રાજાએ થોડાંક જ મિશ્ર વચનો કહ્યાં હતાં તેથી તે નરકમાં ગયો અને અનન્તાભવ સંસાર વહોરી લીધો જેની કથા આત્મપ્રબોધ વગેરે ગ્રંથોમાં પ્રસિદ્ધ છે તેથી અહીં લખી નથી.

ખોટું બોલવાવાળા મૃત્યુ પછી નવા જન્મમાં મુંગા થાય છે અને મહાદુઃખને પામે છે. કહ્યું છે કે–

[सं०] वयणम्मि जस्स वयणं, निच्चमसच्चं वहइ वच्चरसो ।
सुद्धीए जलसण्हं, कुणमाणं तह संति बुहा ॥ १ ॥
चित्तं रागादिभिः श्लिष्टमलीकवचनैर्मुखम् ।
जीवघातादिभिः कायो, गंगा तस्य पराङ्मुखी ॥ २ ॥

[हिन्दी] जिस मनुष्य के मुख में असत्य वचन रहता है, उसके मुंहसे निरन्तर वर्चरस (विष्टा) बहती है। अतः वचनशुद्धि के लिये सत्य सम्भाषण करना चाहिये यही जल स्नान भी है, ऐसा पंडितजन कहते है ॥ १ ॥

अन्यमत के विद्वान् कहते हैं कि जिस मनुष्य का चित्त राग आदि मोहों से व्याप्त है, और जिसका मुख झूंठे वचनों से व्याप्त है व जिसका शरीर जीवों के घातआदि पाप कार्यों से व्याप्त है, उस से गंगा भी पराङ्मुख रहती है। अर्थात् ऐसा पातकी अगर गंगा स्नान करके पवित्र होना चाहे तो वह नहीं हो सकता, क्योंकि स्वयं गंगा भी ऐसे प्राणी से मुंह फेर लेती है ॥ २ ॥

इसलिये जैन श्रावकों को इस आश्रव का अवश्य त्याग करना चाहिये। ऐसा करने से आत्मा को अत्यधिक सुख होता है।

[ગુ૦] "જે મનુષ્યના મુખમાં અસત્ય વચન રહે છે તેના મોઢામાંથી હંમેશાં વર્ચરસ (વિષ્ટા) વહે છે." વચનશુદ્ધિને માટે હંમેશા સાચું સંભાષણ કરવું જોઇએ સાચું જલસ્નાન જ એ છે એમ પંડિતજન કહે છે. ॥ ૧ ॥

અન્ય મતના વિદ્વાનો કહે છે કે જે માણસનું ચિત્ત રાગ વગેરે મોહોથી વ્યાપ્ત છે, જેનું મોઢું જુઠા વચનોથી વ્યાપ્ત છે અને જેનું શરીર જીવોના ઘાત વગેરે પાપકર્મોથી વ્યાપ્ત છે. તેનાથી ગંગા પણ મોઢું ફેરવી જાય છે. અર્થાત્ એવો પાપી જો ગંગાસ્નાન કરીને પવિત્ર થવા ઇચ્છે તો પણ તે થઈ શકતો નથી. ખુદ ગંગા પણ એવા પ્રાણીઓથી પરાઙ્મુખ થઈ જાય છે. ॥ ૨ ॥

આથી જૈન શ્રાવકોએ આ આશ્રવનો અવશ્ય ત્યાગ કરવો જોઇએ. એવું કરવાથી આત્માને ઘણું વધારે સુખ થાય છે.

[सं०] तृतीयाश्रवपरित्यागे पर–धन–ग्रहणं विवर्जनीयं, द्रव्यस्य हि जन्तूनां वाह्य–प्राण–रूपत्वात्तदपहारकस्य च मरण–रूप–कष्ट–हेतुत्वात्।

[हिन्दी] तीसरे आश्रव के परित्याग में दूसरों का धन लेना आता है, अतः दूसरों का धन नहीं चुराना चाहिए "उनकी वस्तुएँ इधर उधर नहीं करना चाहिये, ओछे तोल या माप नहीं रखने चाहिएं। गिरवी रक्खी हुई या थापण धरोहर रक्खी हुई वस्तु नहीं दबाना चाहिए, किसी के विश्वासघात नहीं करना. दाण नहीं चुराना, कोई भी वस्तु इधर उधर नहीं छिपाना, ये पांच मोटी चोरियों का त्याग तो अवश्य करना चाहिये"।

विशेषः—मानवों का बाह्यप्राण धन में रहता है, अतः धन चुराने से उस प्राण को कष्ट पहुंचता है, अतः एक तरह की हिंसा होती है। इसलिये धन के अपहारक (चुरानेवाले को) नियम से फांसी आदि मरणप्रद कष्ट दिये जाते हैं, उसका विश्वास उठ जाता है इस सबका कारण चौर कर्म है, अतः विवेकी पुरुषों को इस तीसरे आश्रव का त्याग करना चाहिये॥

[ગુ૦] ત્રીજા આશ્રવના પરિત્યાગમાં બીજાનું ધન નહીં લેવાનું આવે છે, એટલે કે બીજાનું ધન નહીં ચોરવું જોઇએ, તેમની વસ્તુઓ આડી અવળી નહીં કરવી જોઇએ. ઓછા તોલ અથવા માપ નહીં રાખવા જોઇએ. ગિરવી મુકેલી અથવા થાપણ મુકેલી કોઇની વસ્તુ નહીં દબાવવી જોઇએ. કોઇની સાથે વિશ્વાસઘાત ન કરવો, દાણચોરી ન કરવી, કોઇપણ વસ્તુ જ્યાં ત્યાં ન છુપાવવી—આ પાંચ મોટી ચોરીઓનો ત્યાગ અવશ્ય કરવો જોઇએ."

મનુષ્યોનો બાહ્ય પ્રાણ ધનમાં રહે છે, તેથી ધન ચોરવાથી તેના પ્રાણને કષ્ટ પહોંચે છે અને તેથી એક જાતની હિંસા થાય છે. એટલા માટે ધનના ચોરવાવાળાને નિયમથી ફાંસી વગેરે મરણ નિપજાવે તેવાં કષ્ટો આપવામાં આવે છે. તેની ઉપરનો વિશ્વાસ ઊઠી જાય છે. આ બધાનું કારણ ચૌરકર્મ છે; માટે વિવેકી પુરુષોએ આ ત્રીજા આશ્રવનો સર્વથા ત્યાગ કરવો જોઇએ.

[सं०] चतुर्थाश्रवपरित्यागेऽत्र पर्वणि ब्रह्मचर्यं पालनीयं स्त्रीसङ्गो विवर्ज्य इत्यर्थः। परस्त्रीसेवनं तु लोकद्वयविरूद्धत्वात् सुश्रावकेणावश्यमेव वर्ज्यम् ॥

[हिन्दी] चौथे आश्रव में परस्त्रीसेवन वर्ज्य है, परन्तु पर्युषण पर्व के दिनों में स्वस्त्रीसेवन भी वर्ज्य हैं। इन आठ दिनों में तो पूर्णतः ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करना चाहिये। परस्त्रीगमन करनेवाले प्राणी इस लोक में विश्वास (परतीती) खो देते हैं, और उनकी इज्जत आबरू का सत्यानाश हो जाता है, तथा उनके धन का. कुल का एवं शरीर का क्षय हो जाता है, ऐसा सोचकर परस्त्रीगमन को अवश्य छोडना चाहिये। उसका दूसराभव भी परस्त्रीगमन से नष्ट हो जाता है। अतः श्रावकों को इन दिनों में शीलपालनें में तत्पर रहना चाहिये।

शील के परिपालन से ही सीता, द्रौपदी सुलसा, रेवती. चंदनबाला आदि स्त्रियां इस संसारमें शाश्वत प्रसिद्धि को प्राप्त हुई। उनके नाम आजभी चतुर्विध संघ द्वारा प्रातः काल के प्रतिक्रमण आदि में निरन्तर लिये जाते हैं।

[ગુ૦] ચોથા આશ્રવમાં પરસ્ત્રીસેવન વર્જ્ય છે, પરંતુ પર્યુષણ પર્વના દિવસમાં તો સ્વસ્ત્રીસેવન પણ વર્જ્ય છે. આ આઠ દિવસોમાં તો પૂર્ણ-પણે બ્રહ્મચર્ય વ્રતનું પાલન કરવું જોઇએ. પરસ્ત્રીગમન કરવાવાળા લોકો આ લોકમાં વિશ્વાસ ખોઇ બેસે છે અને અને તેમની ઇજ્જત—આબરૂનો સર્વનાશ થઇ જાય છે. તથા તેમના ધનનો, કુળનો તેમ જ શરીરનો ક્ષય થઇ જાય છે. આવું વિચારીને પરસ્ત્રીગમનને અવશ્ય છોડી દેવું જોઇએ. પરસ્ત્રીગમન કરનારનો બીજો ભવ પણ નષ્ટ થઇ જાય છે એટલા માટે શ્રાવકોએ આ દિવસોમાં શીલ પાળવામાં તત્પર રહેવું જોઇએ.

શીલના પરિપાલનથી જ સીતા, દ્રૌપદી, સુલસા, રેવતી, ચંદન-બાળા, વગેરે સ્ત્રીઓ આ સંસારમાં કાયમી પ્રસિદ્ધિ મેળવી ચૂકી છે.

એમનાં નામ આજ પણ ચતુર્વિધ સંઘ પ્રાતઃકાળના પ્રતિક્રમણ વગેરેમાં નિરંતર લે છે.

[सं०] पञ्चमाश्रवपरित्यागे धन-धान्यादि-परिग्रह-प्रमाणं कार्यम्। परिग्रह-तृष्णा अपरिमिता न धार्या इच्छापरिमाणं विधेयमित्यर्थः।

तथा पुनरस्मिन् पर्वणि कषायरोधः कर्तव्यः। कषायाश्चत्वारः क्रोध-मान-माया-लोभाख्यास्तेषां परित्यागो विधेयः॥

[हिन्दी] पांचवे आश्रव के त्याग में अपरिमित परिग्रह का प्रमाण करना चाहिये। संसार में परिग्रह का थाह नहीं है, अतः विना प्रमाण निश्चित किये कार्य नहीं चल सकता। अप्रमाण हो तो लालच बहुत दौड़ता है। अतः प्रमाण से परिग्रह करे, ताकि ज्यादा तृष्णा न दौड़े।

फिर इस पर्युषण पर्वमें कषायरोध भी करना चाहिये। कषाय चार हैः—क्रोध, मान, माया, और लोभ. इनका परित्याग करना चाहिये॥

[ગુ૦] પાંચમા આશ્રવના ત્યાગમાં, શ્રાવકોએ પરિગ્રહનું પ્રમાણ નક્કી કરવું જોઈએ. સંસારમાં પરિગ્રહનો છેડો નથી, માટે પરિગ્રહ નિશ્ચિત કર્યા વિના ચાલતું નથી, પ્રમાણ નક્કી ન હોય તો બહુ લાલચ થયા કરે છે. માટે પ્રમાણપૂર્વક પરિગ્રહ કરવો, જેથી તૃષ્ણા વધારે ન દોડે.

વળી આ પર્યુષણ પર્વમાં કષાયરોધ પણ કરવો જોઇએ. કષાય ચાર છે. ક્રોધ, માન, માયા અને લોભ. આ ચારનો પરિત્યાગ કરવો જોઇએ.

[सं०] क्रोधोदये हि कलहोत्पत्तिश्चिरन्तनप्रीतिनाशश्च, मानोदये विनयनाशश्च। तथा च सद्ध्यानवतामपि मुनीनां केवलाप्तौ अन्तरायः स्यात्, राजर्षि-बाहुबलिवत्, एवं मायोदये लोभोदयेऽपि च बहवो दोषा उत्पद्यन्ते, अतश्चत्वारोऽपि कषायास्त्याज्याः॥ उक्तं च "कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणयनासणो। माया मित्ताणि नासेइ, लोहो सव्वविणासणो ॥१॥ तस्माच्छुभ आचारो येषान्ते शुभाचारास्तैः श्रावकैराश्रव-कषाय-रोधः कर्तव्यः इत्युक्तम्।

[हिन्दी] क्रोध के उदय होने पर प्रीति का नाश हो जाता है। मान (अहंकार) करने से विनय का नाश हो जाता है। कपट करने से मित्रता नष्ट हो जाती है, लोभ करने से सारी समृद्धि नष्ट हो जाती है। अत्यन्त ध्याननिमग्न मुनियों के केवलज्ञानादि प्राप्ति में भी ये क्रोधादि अन्तराय कर देते हैं।

अतः ज्यादातर कलह उठनें देना नहीं, अगर हो तो भी उसे उपशम कर देना चाहिये। उदाहरण के तौर पर दमसान मुनिको केवलज्ञान प्राप्त होने के समय में क्रोध आने से वह ज्ञान रुक गया। इसी तरह बाहुबलजीको मान आजाने से वे १२ द्वादश मास तक काउस्सग्ग में रहे, कपट करनें से आषाढाभूति अणगार चारित्र भ्रष्ट होकर नटवी के यहां रहे, लोभ के उदयसे सिंह केसरियामुनि रात्रिभर भ्रमण करते रहे, तथा मम्मण शेठ वगेरह दुर्गति को प्राप्त हुए। ऐसा समझकर कषायाश्रव का परिहार करना चाहिये।

[ગુ૦] ક્રોધનો ઉદય થવાથી પ્રીતિનો નાશ થાય છે. અહંકાર કરવાથી વિનયનો નાશ થાય છે. કપટ કરવાથી મિત્રતાનો નાશ થાય છે. લોભ કરવાથી બધી સમૃદ્ધિ નષ્ટ થઈજાય છે. અત્યંત ધ્યાનનિમગ્ન મુનિઓના કેવળજ્ઞાન પ્રાપ્તિમાં પણ આ ક્રોધ વગેરે દુર્ગુણો આડા આવે છે.

માટે, મોટે ભાગે કંકાસ થવા દેવો નહીં, અને થાય તો પણ તેને શમાવી દેવો જોઇએ. દાખલા તરીકે દમસાર મુનિને કેવળજ્ઞાન પ્રાપ્ત થવાના સમયમાં ક્રોધ આવવાથી તે જ્ઞાન થતું અટકી ગયું. એ જ પ્રમાણે બાહુબલિજીને અભિમાન આવી જવાથી તેઓ ૧૨ માસ સુધી કાઉસ્સગ્ગમાં રહ્યા. કપટ કરવાથી આષાઢાભૂતિ અણગાર ચારિત્રભ્રષ્ટ થઇને નટડીને ઘેર રહ્યા; લોભના ઉદયથી સિંહકેસરિયા મુનિ રાત્રિભર ભ્રમણ કરતા રહ્યા તથા મમ્મણશેઠ વગેરે દુર્ગતિને પ્રાપ્ત થયા. એવું સમજીને કષાયાશ્રવનો પરિહાર કરવો જોઇએ.

[मं०] अत्र पुनरत्र पर्वणि यत्कर्तव्यं तदेव श्रावकविशेषणद्वारेणाह, कीदृशैः श्रावकैः सामायिक–जिनपूजा–तपोविधानादिकृत्यपरैः सामायिकं च जिनपूजा च तपश्च सामायिक–जिनपूजा–तपांसि तेषां विधानं करणं तदादीनि तत्प्रभृतीनि यानि कृत्यानि कार्याणि तेषु तत्परैरित्यर्थः। एतावता अत्र पर्वणि सुश्रावकैः सामायिकं कार्यम्। तत्स्वरूपश्चेदम्.—

समता सर्वभूतेषु, संयमः शुभभावना।
आर्तरौद्र–परित्याग–स्तद्धि सामायिकव्रतम् ॥१॥
दिवसे दिवसे लक्खं, देइ सुवण्णस्स खंडियं एगो।
एगो पुण सामाइयं, करेइ न पहुप्पए तस्स ॥ २ ॥

उनसे दक्षिणा में एक २ सुवर्णमुद्रा प्राप्त करें। यह सुन ब्राह्मणने राजा से स्त्री के कथनानुसार याचना की। तत्काल राजाने ठीक ऐसा ही हो, कह कर इस बात का पट्टा (लिखित प्रमाण) कर दिया। बहुत दिनों के बाद ब्राह्मण के मन में लोभ ने घर कर लिया। उसने सोचा कि अगर मैं नित्य बहुत से घरो में भोजन करुं तो ज्यादा सुवर्ण मुद्राएँ प्राप्त होगी। ऐसा विचार कर वह नित्य बीस घरो में भोजन करने लगा।

[ગુ૦] આ જોઇને શ્રેણિક રાજાને બહુ આશ્ચર્ય થયું. તેણે ભગવાનને પૂછયું: "આ માણસ કોણ છે?" ભગવાને કહ્યું કે એ એક દેવ હતો. પૂર્વ ભવમાં એ બ્રાહ્મણ હતો. એકવાર એક રાજા તેની ઉપર પ્રસન્ન થયો અને તેની ઇચ્છામાં આવે તે માગવા કહ્યું. બ્રાહ્મણે કહ્યું કે તે પોતાની પત્નીને પૂછીને પછી માગશે બ્રાહ્મણે ઘેર જઇને પોતાની સ્ત્રીને પૂછયું કે આપણા ઉપર રાજા પ્રસન્ન થયા છે અને માગવાનું કહ્યું છે, તો શું માગવું? ત્યારે સ્ત્રીએ કહ્યું કે તમે એમ માગો કે આપણે લોકોને ઘેર રોજ વારાફરતી જમવા જઇએ અને તેમની પાસેથી આપણને રોજ એકેક સોનામહોર દક્ષિણામાં મળે. આ સાંભળી બ્રાહ્મણે સ્ત્રીના કહેવા પ્રમાણે રાજા પાસે માગણી કરી. તરત જ રાજાએ તમારા કહેવા પ્રમાણે જ થશે. એમ કહીને તેને એ અંગેનો પટ્ટો લખી દીધો. ઘણા દિવસો પછી પણ બ્રાહ્મણના મનમાં લોભે ઘર કર્યું. તેણે વિચાર્યું કે જો હું રોજ ઘણા ઘરોમાં ભોજન કરું તો મને ઘણી સોનામહોરો મળે. એમ વિચારીને તે હંમેશાં વીશ ઘરોમાં ભોજન કરવા લાગ્યો.

[हिन्दी] इस तरह नित्य २० स्वर्णमुद्राएं अर्जित करने लगा। ज्यादा खानेसे शरीर में रक्तपित्तिया कुष्ठ रोग हो गया। कुटुम्बियो ने उसे अलग कर दिया। वह कोढ़ी खिसियाना हो कर इस पर विचार करने लगा कि ये सारे कुटुम्बी जन स्वार्थी है। ऐसा जान कर एक दिन उसने न्याति को इकट्ठा किया। वह कहने लगा, मैं एक ज्ञातिभोजन करना चाहता हूं और प्रत्येक को एक स्वर्णमुद्रा भी देना चाहता हूं। अतः आप सब मिल कर बाजार से सामान ला कर अलग से रसोई बना कर भोजन कर लें मैं हाथ नहीं लगाऊंगा। न्याति के लोगों ने इसे मंजूर किया। जब रसोई तैयार हो गयी तो उस कोढ़ी ने गुप्त रीति से उस में अपने शरीर की पीप मिला दी। इस से रसोई खाने वाले सब कोढ़ी हो गये। यह बात लोगों में प्रगट हो

गया। वह वहां उनसे धर्माख्यान सुन रहा था। इसी समय में एक कुष्ट रोग से पीडित व्यक्ति वहां आया। वह भगवान से कहने लगा कि हे प्रभु! आप मर जाओ। इतना कह कर उसने अपने शरीर से निकलने वाली पीप का लेप भी भगवान के शरीर से लगाया। यह देख श्रेणिक राजा को क्रोध आया। उसने विचार किया कि यह दुष्ट यहां से बाहर निकले तो इसे मैं सजा दूं। राजा के मन के भीतर बात उस कोढीने समझ ली। वह श्रेणीक राजा से बोला "तुम मत मरना" उसने अभयकुमार से कहा, "मरो या जिन्दे रहो" इतना कह कर वह कोढी समवसरण से बाहर निकला। श्रेणिक राजाने अपने सैनिको को संकेत किया कि वे इसे पकड ले। जब सैनिक उसे पकडने दौडे तब वह आकाश में उड गया।

[ગુ૦] એક વાર રાજગૃહી નગરીમાં શ્રેણિક રાજા ભગવાન શ્રી મહાવીરસ્વામીને વંદન કરવા ગયા. તે ત્યાં તેમની પાસેથી ધર્મદેશના સાંભળી રહ્યા હતા. એ વખતે એક કુષ્ટ રોગથી પીડાતો માણસ ત્યાં આવ્યો. તે ભગવાનને કહેવા લાગ્યો કે "હે પ્રભુ! તમે મરી જાઓ." આટલું કહીને તેણે પોતાના શરીરમાંથી નીકળતા પા[illegible]નો લેપ પણ ભગવાનના શરીરે કર્યો. આ જોઇને શ્રેણિક રાજાને તેણે વિચાર કર્યો કે આ દુષ્ટ અ[illegible] બ[illegible] નીકળે [illegible]
કરું. રાજાના મનની વાત પેલો [illegible] ગયે
રાજાને કહ્યું કે "તમે મરશો [illegible] વ[illegible] ર[illegible]
"મરો કે જીવતા રહો." આટ[illegible]
બહાર નીકળી ગયો. શ્રેણિક ર[illegible] ાતા
સંકેત કર્યો. જ્યારે સૈનિકો તે[illegible]
ઊડી ગયો.

[हिन्दी] यह देख श्रेणीक राजा [illegible]
"यह कौन पुरुष है? भगवानने [illegible]
ब्राह्मण था। एक बार एक राजा [illegible]
ब्राह्मण! मांग, जो तुझे चाहिये वह मैं [illegible]
कर याचना करूंगा। ब्राह्मणने घर जा[illegible]
नुकसान हुआ है सो क्या मांगा [illegible]
[illegible] सब लोगों के घर में निरन्तर

उनसे दक्षिणा में एक २ सुवर्णमुद्रा प्राप्त करें। यह सुन ब्राह्मणने राजा से स्त्री के कथनानुसार याचना की। तत्काल राजाने ठीक ऐसा ही हो, कह कर इस बात का पट्टा (लिखित प्रमाण) कर दिया। बहुत दिनों के बाद ब्राह्मण के मन में लोभ ने घर कर लिया। उसने सोचा कि अगर मैं नित्य बहुत से घरो में भोजन करुं तो ज्यादा सुवर्ण मुद्राएँ प्राप्त होगी। ऐसा विचार कर वह नित्य बीस घरो में भोजन करने लगा।

[ગુ૦] આ જોઇને શ્રેણિક રાજાને બહુ આશ્ચર્ય થયું. તેણે ભગવાનને પૂછયું: "આ માણસ કોણ છે?" ભગવાને કહ્યું કે એ એક દેવ હતો. પૂર્વ ભવમાં એ બ્રાહ્મણ હતો. એકવાર એક રાજા તેની ઉપર પ્રસન્ન થયો અને તેની ઇચ્છામાં આવે તે માગવા કહ્યું. બ્રાહ્મણે કહ્યું કે તે પોતાની પત્નીને પૂછીને પછી માગશે બ્રાહ્મણે ઘેર જઇને પોતાની સ્ત્રીને પૂછયું કે આપણા ઉપર રાજા પ્રસન્ન થયા છે અને માગવાનું કહ્યું છે, તો શું માગવું? ત્યારે સ્ત્રીએ કહ્યું કે તમે એમ માગો કે આપણે લોકોને ઘેર રોજ વારાફરતી જમવા જઇએ અને તેમની પાસેથી આપણને રોજ એકેક સોનામહોર દક્ષિણામાં મળે. આ સાંભળી બ્રાહ્મણે સ્ત્રીના કહેવા પ્રમાણે રાજા પાસે માગણી કરી. તરત જ રાજાએ તમારા કહેવા પ્રમાણે જ થશે. એમ કહીને તેને એ અંગેનો પટ્ટો લખી દીધો. ઘણા દિવસો પછી પણ બ્રાહ્મણના મનમાં લોભે ઘર કર્યું. તેણે વિચાર્યું કે જો હું રોજ ઘણા ઘરોમાં ભોજન કરું તો મને ઘણી સોનામહોરો મળે. એમ વિચારીને તે હંમેશાં વીશ ઘરોમાં ભોજન કરવા લાગ્યો.

[हिन्दी] इस तरह नित्य २० स्वर्णमुद्राएं अर्जित करने लगा। ज्यादा खानेसे शरीर में रक्तपित्तिया कुष्ठ रोग हो गया। कुटुम्बियो ने उसे अलग कर दिया। वह कोढ़ी खिसियाना हो कर इस पर विचार करने लगा कि ये सारे कुटम्बी जन स्वार्थी हैं। ऐसा जान कर एक दिन उसने न्याति को इकट्ठा किया। वह कहने लगा, मैं एक ज्ञातिभोजन करना चाहता हूं और प्रत्येक को एक स्वर्णमुद्रा भी देना चाहता हूं। अतः आप सब मिल कर बाजार से सामान ला कर अलग से रसोई बना कर भोजन कर लें मैं हाथ नहीं लगाऊंगा। न्याति के लोगों ने इसे मंजूर किया। जब रसोई तैयार हो गयी तो उस कोढ़ी ने गुप्त रीति से उस में अपने शरीर की पीप मिला दीं। इस से रसोई खाने वाले सब कोढ़ीं हो गये। यह बात लोगों में प्रगट हो

गयीं। अब वह कोढी निन्दित हो कर तीर्थ यात्रा को चला गया। मार्ग के पर्वत में द्रह आया उस में वह मरने हेतु गिरा।

[ગુ૦] આ પ્રમાણે તે રોજ વીશ સોનામહોરો કમાવો લાગ્યો. વધારે ખાવાથી તેના શરીમમાં રક્તપિત્તિયો કોઢ થયો. સગાં સંબંધીઓએ તેને જુદો કાઢ્યો. તે કોઢિયો ખસિયાણો પડી જઇને વિચારવા લાગ્યો કે આ સગાંસંબંધીઓ સ્વાર્થી છે. તેથી તેણે એક દિવસ આખી જ્ઞાતિને એકઠી કરી અને તેને કહેવા લાગ્યો કે "હું એક જ્ઞાતિભોજન કરવા ચાહું છું અને પ્રત્યેક જ્ઞાતિજનને એકેક સોનામહોર દાનમાં આપવા ઇચ્છું છું. માટે આપ સૌ બજારમાંથી સામાન લાવી જુદી રસોઇ બનાવો અને જમી લ્યો. હું રસોઇને હાથ પણ લગાડીશ નહિ"

જ્ઞાતિના માણસોએ તેની વાત મંજૂર રાખી. જ્યારે રસોઈ તૈયાર થઇ ગઈ ત્યારે તે કોઢિયાએ છાની રીતે પોતાનું પરૂ તેમાં ભેળવી દીધું; આથી જમવાવાળા બધા કોઢિયા થઇ ગયા. આ વાત પ્રગટ થઇ ગઇ. હવે તે કોઢિયો નિશ્ચિંત થઇને જાત્રા કરવા ચાલ્યો ગયો. રસ્તામાં એક પર્વતની તળેટીમાં સરોવર આવ્યું તેમાં તે મરવાની ઇચ્છાથી પડ્યો.

[हिन्दी] सौभाग्य से पानी का स्पर्श होते ही उसका कुष्ट रोग चला गया। शरीर स्वच्छ निर्मल बन गया। अनन्तर साधु महाराज की संगति से समकित को प्राप्त हुआ। कालधर्मानुसार देवलोक में देव बना। वही यह देवता पूर्व भव के रूप से मुझे वन्दन करने आया व मेरे शरीर से चन्दन लगाया। हे श्रेणीक! तुम्हें वह पीप नजर आई और मुझे मरने का कहा, उसका तात्पर्य यह है कि "अब आप मोक्ष पधारो यहां कुछ नहीं है।" फिर तुम्हे जीवित रहने का कहा, इस का तात्पर्य यह है कि परलोक में तुम्हें सुख नहीं है अतः तुम मृत्युलोक में ही रहो। अभयकुमार को यहां तथा वहां (परलोक) दोनों में सुख है, इससे उसे "जियो अथवा मरो" ऐसा कहा।

भगवान की यह बात सुनकर श्रेणीक बोला "हे भगवान! मुझे परलोक में क्या दुःख है?" भगवान बोले कि तूं मर के नरक में जायगा वहां, "चौरासी हजार वर्ष तक दुःख देखेगा।

[ગુ૦] સદ્‌ભાગ્યે પાણીનો સ્પર્શ થતાં જ તેનો કોઢ ચાલ્યો ગયો.

શરીર સ્વચ્છ અને નિર્મળ થઇ ગયું. પછી સાધુ મહારાજોની સંગતિથી તેને સમકિત પ્રાપ્ત થયું અને દેવ બની ગયો. એ આ દેવ પૂર્વભવના રૂપે મને વંદન કરવા આવ્યો અને મારે શરીરે તેણે ચંદન લગાવ્યું. હે શ્રેણિક! તને તે ચંદન પરૂ લાગ્યું. તેણે મને મરવાનું કહ્યું તેનું તાત્પર્ય એ છે કે 'હવે આપ મોક્ષે જાઓ, અહીં હવે કાંઇ નથી" એમ તે કહેવા માગતો હતો. વળી તમને જીવતા રહેવાનું કહ્યું તેનું તાત્પર્ય એ છે કે પરલોકમાં તમને સુખ નથી માટે તમે મૃત્યુલોકમાં જ રહો. અભયકુમારને અહીં તથા પરલોકમાં બન્નેમાં સુખ છે તેથી તેને "જીવો અથવા મરો" એમ કહ્યું.

ભગવાનની આ વાત સાંભળીને શ્રેણિકે કહ્યું: 'હે ભગવાન! મને પરલોકમાં શું દુઃખ છે?" ભગવાને કહ્યું: 'તું મરીને નર્કમાં જઇશ અને ચોરાશી હજાર વર્ષ સુધી દુઃખ દેખીશ."

[हिन्दी] यह बात सुनते ही श्रेणीक राजा विलाप करता हुआ बोला, कि आपके चरण सेते हुए भी मुझे नरक होंगा? अब तो कोई उपाय बताईये, जिससें नरक में न जाऊं। भगवानने कहा कि "तप कर!" राजा बोला "मेरी शक्ति नहीं है तो कपिला दासी से दान दीला, प्रभुने कहा, यह सुन राजाने दासी को दान देने कहा। दासी बोली, मै नियम नही तोड़ सकती। इस पर राजाने क्रोधित हो दासी के हाथ सें चाटु बांध दिया। इस पर दासी कहनें लगी कि मै दान नहीं देती हूं यह दान राजा का चाटु देता हैं। यह बात भी राजा से नहीं बनी। तब राजानें दूसरा उपाय पूछा। भगवान्ने बताया कि कालकसूरिया कसाई को भैंसें मारने सें तूं रोक दे तो नरक में नहीं जावेगा। राजाने कालकसूरिया कसाई को जीवहत्या से मना किया, पर वह माना नहीं। तब राजानें उसे एक खड्डे में डाल दिया। वह कसाई मिट्टी के भैंसे बनाकर मारने लगा।

[ગુ૦] આ વાત સાંભળતાં જ શ્રેણિક રાજા વિલાપ કરતો બોલ્યો: "આપના ચરણ સેવવા છતાં મને નરક મળશે? તો પછી એવો કોઇ ઉપાય બતાવો જેથી મને નરક ન મળે." ભગવાને કહ્યું: "તપ કર." રાજાએ કહ્યું: "મારી શક્તિ નથી." ભગવાને કહ્યું "તો કપિલા દાસી પાસે દાન અપાવ." આ સાંભળી રાજાએ દાસીને દાન દેવાનું કહ્યું: દાસીએ

કહ્યું: 'હું મારો નિયમ નહીં તોડી શકું." આથી રાજાએ ક્રોધિત થઇને દાસીના હાથ સાથે દાન દેવાનો ચાટવો બાંધી દીધો. આથી દાસી કહેવા લાગી કે "હું દાન દેતી નથી, પણ દાન રાજાનો ચાટવો દે છે." આ વાત પણ રાજાથી બની નહીં તેથી રાજાએ બીજો ઉપાય પૂછ્યો. ભગવાને કહ્યું કે "કાલકસૂરિયા કસાઇને ભેંસો મારતાં તું રોકી શકે તો તું નરકમાં નહિ જા." રાજાએ કાલકસૂરિયા કસાઇને જીવહત્યા કરવાની મનાઇ કરી, પણ તે માન્યો નહિ. ત્યારે રાજાએ તેને એક ઊંડા ખાડામાં નખાવ્યો. તો તે કસાઇ ત્યાં પણ ગારાની ભેંસો બનાવીને તેને મારવા લાગ્યો.

[हिन्दी] तब राजाने उसे कुए में लटका दिया। इस पर वह अपने शरीर का मैल उतार कर भैंसे बना कर मारने लगा। इतना दण्ड देने पर भी वह कसाई माना नहीं। अब राजाने भगवान से तीसरा उपाय पूछा। इम भगवानने कहा कि पुण्याश्रावक की सामायक जो ले लेवे तो नरक में नहीं जावेगा। राजा पुण्याश्रावक के पास गया और बोला, "जो तुम्हारे धन लेना हो सो मुझ से ले लें, और मुझे एक सामायक दे दें।" तब पुण्याश्रावकने कहा कि जिस एक सामायक के फल का भगवान् आदेश देंगे वही मैं दूंगा। दोनों तब भगवान के पास जाकर फल पूछने लगें, भगवानने उत्तर दिया." कोई एक लाख खंडी एक वर्ष तक निरन्तर दान में देवे, तो वह भी एक सामायक के फल के तुल्य नहीं होता हैं।"

[ગુ૦] ત્યારે રાજાએ તેને કૂવામાં લટકાવ્યો. તો તે ત્યાં પણ પોતાના શરીરનો મેલ ઉખાડીને તેની ભેંસો બનાવીને તેને મારવા લાગ્યો. આટલો દંડ દેવા છતાં પણ તે કસાઇ માન્યો નહીં, ત્યારે રાજાએ ભગવાનને ત્રીજો ઉપાય પૂછ્યો. ત્યારે ભગવાને કહ્યું કે પુણ્યાશ્રાવકની એક સામાયિકનું ફળ તું લઈ લે તો તુ નરકમાં નહિ જાય. રાજા પુણ્યાશ્રાવકની પાસે ગયો અને બોલ્યો: "તારે જેટલું ધન મારી પાસેથી લેવું હોય તેટલું લે, પણ મને તારી એક સામાયિકનું ફળ આપ." ત્યારે પુણ્યાશ્રાવકે કહ્યું કે "જે એક સામાયિકના ફળ માટે ભગવાન આદેશ દેશે તે હું તમને આપીશ." બન્ને પછી ભગવાનની પાસે ગયા અને પૂછવા લાગ્યા, ત્યારે ભગવાને જવાબ આપ્યો: 'કોઇ પુરુષ એક લાખ ખાંડી સોનું એક વર્ષ સુધી રોજ દાનમાં આપે તો પણ તે એક સામાયિકના ફળની બરોબર થતું નથી."

[हिन्दी] यह सुन राजा बोला कि महाराज ! इतना धन तो मेरे घर में भी नहीं है, फिर सामायिक कैसे आवे ? इतना कह कर वह विलाप करने लगा। तब भगवानने कहा "अरे ! तूं क्यों विलाप करता है, आने वाली चौवीसी में तुम भी मेरे जैसे ही तीर्थंकर बनोगे।" यह बात सुनकर राजा हर्षित हुआ।

अतः हे भव्यो ! सामायिक का इतना फल जानकर पर्युषणा पर्व में विशेष करके सामायिक करना चाहिये ॥

[ગુ૦] આ સાંભળી રાજા બોલ્યો કે 'મહારાજ ! આટલું ધન તો મારા ઘરમાં પણ નથી, તો પછી સામાયિકનું ફળ કેમ આવે ? એમ કહીને તે વિલાપ કરવા લાગ્યો ત્યારે ભગવાને કહ્યું કે 'તું શા માટે વિલાપ કરે છે ? હવે પછી આવવાવાળી ચોવીશીમાં તું પણ મારા જેવો જ તીર્થંકર થઇશ." આ વાત સાંભળીને રાજા આનંદ પામ્યો.

માટે હે ભવ્ય લોકો ! સામાયિકનું આવું ફળ જાણીને વિશેષે કરીને પર્યુષણ પર્વમાં સામાયિક કરવી જોઇએ.

[सं०] आदिपदात्पौषधः कार्यः पौषधफलमिदम् :—

"पोसहि य सुहे भावे, असुहाइं खवेइ नत्थि संदेहो।
छिंदई निरय–तिरियगइ, पोसह–विहि–अप्पमत्तेणं ॥"

[हिन्दी] और पौषधव्रत भी करना चाहिये पौषध का फल निम्न हैः—जो धर्म को पुष्ट करे उसका नाम पोसह है। इस व्रत करने से मनुष्य नरक तिर्यंच की गति में नहीं जावे, दुःख भी प्राप्त नहीं करे। वह महापुण्य उपार्जन (इकट्ठा) करता है ॥

[ગુ૦] વળી પૌષધવ્રત પણ કરવું જોઇએ.

પૌષધવ્રતનું ફળ નીચે મુજબ છેઃ—

જે વ્રત ધર્મને પુષ્ટ કરે તે વ્રતનું નામ પૌષધવ્રત છે. આ વ્રતને કરવાથી મનુષ્ય નરકમાં અથવા તિર્યંચની ગતિમાં જતો નથી. દુઃખ પણ પ્રાપ્ત કરતો નથી અને મહાપુણ્ય ઉપાર્જન કરે છે."

[सं०] तत्करणसामर्थ्याऽभावेऽस्मिन् पर्वणि सुश्रावकैर्यथाशक्ति जिनानां द्रव्यपूजा भावपूजा च कर्तव्या ॥ पूजाफलमिदम् :—

"सयं पमज्जणे पुन्नं, सहस्सं च विलेवणे।
सयसहस्सिया माला, अणंतं गीय–वाइए ॥ १ ॥

मनोवाक्कायशुद्धयात्र पर्वणि पूजा स्नात्रादिकं विधेयं तदवसरे च भगवतः छद्मस्थत्व–केवलित्व–सिद्धत्वरूप–मवस्थात्रयं भावनीयम्।

[हिन्दी] पर्युषण महापर्व में जिन भगवान की पूजा करना चाहिये। इससे मानवों के रोग, शोक, आपत्तियां, दौर्भाग्य आदि दोष नष्ट हो जाते हैं। यह पूजा स्वर्ग और अपवर्ग (मोक्ष) सुख को देने वाली है। पूजा करने से कई प्राणियों को केवलज्ञान हो गया हैं। कहा भी हैं कि–भगवान से मोरपिच्छ से पूजनें से (१००) शत गुणित पुण्य होता और उन पर विलेपन करने से हजार गुणित पुण्य होता है। तथा पुष्पमाला पहिनाने से लाख गुणित, और गीत नाटक आदि भक्ति करनें से अनन्तगुणा पुण्य होता है।

[ગુ૦] પર્યુષણ મહાપર્વમાં જિન ભગવાનની પૂજા કરવી જોઇએ. આનાથી લોકોના રોગ, શોક, આપત્તિયો, દુર્ભાગ્ય વગેરે દોષોનો નાશ થાય છે. આ પૂજા સ્વર્ગ અને મોક્ષના સુખને આપવાવાળી છે. આ પૂજા કરવાથી કેટલાયે પ્રાણીઓને કેવળજ્ઞાન થઇ ગયું છે. વળી એમ પણ કહ્યું છે કે ભગવાનનું મોરપીંછથી પૂજન કરવાથી સો ગણું પુણ્ય મળે છે અને તેમની પ્રતિમા ઉપર ચંદનનું વિલેપન કરવાથી હજારગણું પુણ્ય મળે છે. વળી ભગવાનને પુષ્પમાળા પહેરાવવાથી લાખગણું અને ગીત નાટક વગેરેથી ભક્તિ કરવાથી તો અનંતગણું પુણ્ય મળે છે.

[हिन्दी] भगवान की प्रतिमा को स्नान कराते वक्त और उनकी पूजा करते वक्त 'छद्मस्थावस्था' का ध्यान करना चाहिये और वस्त्र चढाते समय प्रातिहार्य युक्त "केवली अवस्था" तथा काउसग्ग और पद्मासन के समय भगवान् की "सिद्धावस्था" का ध्यान करना चाहिये। इस तरह भगवान की द्रव्यपूजा करना चाहिये यदि ऐसा न बन पडे तो प्रभात समय जिनमंदिर में जा कर शुद्ध भावसे भगवान के दर्शन करना चाहियें। भगवान की मुद्रा देखकर चैत्यवन्दन–स्तुति–स्तवनादि करना, क्यों कि दर्शन करने से पापों का नाश होता हैं, नमस्कार करनें से मनोकामना सिद्ध होती हैं, विधि से पूजन करने से तो मानवो और स्त्रियों के लिए भगवान साक्षात् कल्पवृक्ष के समान फल देते हैं। इस तरह पूजन करना चाहिये।

" ण्हवणच्चगेहि छउमत्थ,-वत्थ पडिहारगेहिं केवलियं ।
पलियंकुस्सग्गेहि य, जिणस्स भाविज्ज सिद्धत्तं ॥ "

[ગુ૦] ભગવાનની પ્રતિમાને સ્નાન કરાવતી વખતે તથા તેમની પૂજા કરતી વખતે ભગવાનની "છદ્મસ્થાવસ્થા"નું ધ્યાન કરવું જોઇએ. અને વસ્ત્ર ચડાવતી વખતે પ્રતિહારયુક્ત 'કેવળી અવસ્થા'નું, તથા કાઉસગ્ગ અને પદ્માસન વખતે ભગવાનની "સિદ્ધાવસ્થા"નું ધ્યાન કરવું જોઇએ. આ પ્રમાણે દ્રવ્યોથી ભગવાનની પૂજા કરવી જોઇએ. જો આ પ્રમાણે ન બની શકે તો વહેલી સવારે જિનમંદિરમાં જઇને શુદ્ધ ભાવથી ભગવાનનું દર્શન કરવું જોઇએ. ભગવાનનાં દર્શન કરીને ચૈત્યવંદન, સ્તુતિ, સ્તવન વગેરે બોલવાં. કારણ કે દર્શન કરવાથી પાપોનો નાશ થાય છે, નમસ્કાર કરવાથી મનોકામનાની સિદ્ધિ થાય છે અને વિધિપૂર્વક પૂજન કરવાથી તો સ્ત્રીઓ અને પુરુષોને ભગવાન સાક્ષાત્ કલ્પવૃક્ષની સમાન ફળ આપે છે.

[सं०] द्रव्यपूजासामर्थ्याभावे तु भावपूजैव कर्तव्या सा चेत्थं–प्रातः श्री जिनगृहं गत्वा शुद्धभावेन भगवद्दर्शनं कार्यं भगवन्मुद्रां विलोक्य च तद्गुणगणस्मरणं विधेयं तत्फलं यथा—

" दर्शनाद्दुरितध्वंसी वन्दनाद्वाञ्छितप्रदः ।
पूजनात्पूरकः श्रीणां जिनः साक्षात्सुरद्रुमः ॥ "

पुनः श्री–जिन–दर्शनादेव बहूनां भव्यानां बोधिबीजावाप्तिर्भवत्यार्द्रकुमारवत्तद्वृत्तान्तस्तु इत्थम् । अस्मिन् भरतक्षेत्रे समुद्रतीरे आर्द्रको नाम यवनदेशोऽस्ति । तत्रार्द्रकपुरं नाम नगरम् । तत्रार्द्रकनामा राजा बभूव । तस्य चार्द्रिका नाम्नी पट्टराज्ञी तयोरार्द्रकुमारो नाम पुत्रोऽभूत् ।

[हिन्दी] फिर श्री जिनदर्शन से ही बहुत से भव्य लोगों को बोध की प्राप्ति आर्द्रकुमारकी तरह हुई तथा बहुत से जीव मोक्ष को भी प्राप्त हुए। आर्द्रकुमार कैसे सुखी हुए इसकी कथा इस प्रकार हैं।

मगध देशमें बहुत सुन्दर राजगृही नगरी है। उसमे श्रेणीक राजा राज्य करता था। उसके चारों बुद्धियो में प्रवीण अभयकुमार नामका पुत्र था। यह पांचसौ प्रधानों के ऊपर स्वामी था। जिनने भी राज दरबार पे वे सब अभय-

कुमार को पूछ के काम करते हैं। उसी भरतक्षेत्रमें समुद्र के तट के पास एक "आर्द्रक-नाम" का अनार्य देश था। उसमे "आर्द्रकनाम" का एक शहर था। उसके राजा का नाम 'आर्द्रक' था। यह राजा म्लेच्छ था। इसकी पटरानी का नाम आर्द्रिका था। उनके 'आर्द्रकुमार' नामका एक पुत्र हुआ।

[ગુ०] વળી શ્રી જિનદર્શનથી જ ઘણા ભવ્ય લોકોને બોધિબીજની પ્રાપ્તિ આર્દ્રકુમારની જેમ થઇ છે, તથા ઘણા જીવોને મોક્ષની પ્રાપ્તિ થઇ છે. આર્દ્રકુમાર કેવી રીતે સુખી થયા તેની વાત નીચે પ્રમાણે છે.

મગધ દેશમાં રાજગૃહી નામે એક ખુબ સુંદર નગર હતું. તેમાં શ્રેણિક રાજા રાજ્ય કરતા હતા. તેને ચારે બુદ્ધિઓમાં પ્રવીણ અભયકુમાર નામે પુત્ર હતો. તે પાંચસો પ્રધાનોનો ઉપરી હતો. બીજા બધા રાજારજવાડા અભયકુમારની સલાહ લઇને રાજ્ય કરતા હતા. ભરતક્ષેત્રમાં સમુદ્રના કિનારાની પાસે એક આર્દ્રક નામે અનાર્ય દેશ હતો. તેમાં આર્દ્રક નામનું એક શહેર હતું. તેના રાજાનું નામ આર્દ્રક હતું. તે રાજા મ્લેચ્છ હતો. તેની પટરાણીનું નામ આર્દ્રિકા હતું. તેને આર્દ્રકકુમાર નામે એક પુત્ર થયો.

[सं०] स च क्रमेण सम्प्राप्तयौवनः स्वेच्छया मनोज्ञान् भोगान् भुञ्जानः सुखेन तिष्ठति स्म। तस्य चार्द्रकराजस्य श्रेणिकराजेन सह परम्परागता परमप्रीतिरभूत्। एकदा श्रेणिको नृपः प्रचुरं प्राभृतं प्रगुणीकृत्य आर्द्रकराजसमीपं निजामात्यं प्रैषीत्, सोऽमात्योऽपि कियद्भिर्दिनैस्तत्र गत आर्द्रकनृपेण बहूचादरेण सम्भाष्य तेन मंत्रिणा उपनीतानि प्राभृतानि गृहीतानि पृष्टश्च तस्मै मद्बन्धोः श्रेणिकस्य कुशलं वर्तते ततस्तेनापि तत्रत्य–सकल–कुशलोदन्तनिवेदनेन राज्ञो मनसि परमानन्दः सम्पादितः॥

[हिन्दी]वह पुत्र अनुक्रम से पालन पोषण से संवर्धित जवानी को प्राप्त होकर अनेक प्रकारके सुखो का उपभोग करता हुआ सुख से रहता था। उस आर्द्रक राजाकी श्रेणिक राजा के साथ परम्परागत परम प्रीति थी। एक बार श्रेणिक राजानें खूब उपहार देकर अपने मुख्य अमात्यको आर्द्रक राजा के पास भेजा। वह अमात्य वहां पहुंचा। म्लेच्छ राजा आर्द्रकने उसका खूब आदर सत्कार किया। उसनें भी सारे उपहार राजा को भेंट किये। तब आर्द्रकनें श्रेणिक राजा के कुशल समाचार पूछे। प्रधाननें भी सारा कुशल वृत्तान्त कहकर राजा श्रेणिक के समाचार उसे सुनाये, जिससे वह आर्द्रक राजा बहुत आनन्दित हुआ।

[ગુ૦] તે પુત્ર ક્રમે ક્રમે પાલનપોષણથી વધતો વધતો જુવાન થયો અને અનેક પ્રકારના ભોગો ભોગવતો સુખથી રહેતો હતો. તે આર્દ્રક રાજાની શ્રેણિક રાજાની સાથે વંશપરંપરાથી મૈત્રી હતી. એકવાર શ્રેણિક રાજાએ ખૂબ ભેટો લઇને પોતાના મુખ્ય પ્રધાનને આર્દ્રક રાજાની પાસે મોકલ્યો. પ્રધાન ત્યાં પહોંચ્યો ત્યારે મ્લેચ્છ રાજા આર્દ્રકે તેનો ખૂબ આદર–સત્કાર કર્યો. પ્રધાને બધી ભેટ–સોગાદો રાજાને અર્પણ કરી. પછી આર્દ્રક રાજાએ શ્રેણિકરાજાના કુશળ સમાચાર પૂછ્યા. પ્રધાને બધા કુશળ સમાચાર તથા રાજા શ્રેણિકના સમાચાર પણ તેને કહ્યા, જે સાંભળીને આર્દ્રક રાજા ઘણો આનંદ પામ્યો.

[सं०] तस्मिन्नवसरे आर्द्रकुमारो नृपं पप्रच्छ, भो तात! कः श्रेणिको येन सह तवेदृशी प्रीतिः प्रवर्तते। राजा प्रोवाच–मगधदेशस्वामी श्रेणिकनृपो विद्यते तत्कुलस्य मत्कुलस्य च परम्परयागता प्रीतिरिति एतत्पितृवचः श्रुत्वा चार्द्रकुमारोऽपि मंत्रिणमुवाच, भो मंत्रिन्! त्वत्स्वामिनः कश्चित्सम्पूर्णगुणोपेतः पुत्रोऽस्ति? तेन सह अहमपि मैत्र्यं कर्तुमिच्छामि। मन्त्र्युवाच, "श्रेणिकस्य अभयकुमारो नाम पुत्रोऽस्ति, स च सर्वकलानिधिः सर्वबुद्धिसमुद्रो मंत्रिपञ्चशताधिपो महादयावान् महादाता अतिदक्षो निर्भयो धर्मज्ञः कृतज्ञश्च विद्यते। किं बहुना ते केऽपि जगति गुणा न सन्ति येऽभयकुमारे निवासं न कृतवन्तः॥

[हिन्दी] उस अवसर पर आर्द्रकुमारने अपने पिता से पूछा "हे तात! यह श्रेणिक राजा कौन है? जिसके साथ आपकी ऐसी प्रीति है"। राजा बोला, "मगध देशका स्वामी श्रेणिक राजा है। उसके कुल की और मेरे कुल की परम्परा से प्रीति चली आ रही है"। पिता के ये वचन सुनकर आर्द्रकुमारने भी मंत्री से कहा, "हे अमात्य! क्या तुम्हारे स्वामी के भी कोई सम्पूर्ण गुणों से युक्त पुत्र है? उसके साथ मैं भी मित्रता करना चाहता हूं। मंत्री ने कहा "श्रेणिक राजा के अभयकुमार नामका पुत्र है। वह सब कलाओं की खान है, सब बुद्धियों का समुद्र है, पांचसौ प्रधानों के ऊपर स्वामी है, महादयावान् है, महादाता है, निर्भय है, धर्मज्ञ है, कृतज्ञ है, और ज्यादा क्या कहें, संसारमें जितने भी गुण हैं, वे सब अभयकुमार में निवास करते हैं।

[ગુ૦] એ વખતે આર્દ્રકુમારે પોતાના પિતાને પૂછ્યું: "હે પિતાજી!

આ શ્રેણિક રાજા કોણ છે, કે જેની સાથે આપની મિત્રતા છે ?" રાજાએ કહ્યું: " શ્રેણિક રાજા મગધદેશના સ્વામી છે. તેના કુટુંબની સાથે આપણી વંશપરંપરાથી મૈત્રી ચાલી આવે છે." પિતાનાં આ વચનો સાંભળીને આર્દ્રકકુમારે મંત્રીને પૂછ્યું: 'હે અમાત્ય! શું તમારા રાજાને કોઇ સંપૂર્ણ ગુણોથી યુક્ત પુત્ર છે? હું પણ તેની સાથે મૈત્રી કરવા ઇચ્છું છું.' મંત્રીએ કહ્યું: 'શ્રેણિક રાજાને અભયકુમાર નામના પુત્ર છે. તે બધી કળાઓના જાણકાર છે, બુદ્ધિઓનો જાણે કે સમુદ્ર છે. પાંચસો પ્રધાનોના તે ઉપરી છે. મહા દયાવાન છે, મહાદાતા છે, અત્યંત દક્ષ છે, નિર્ભય છે, ધર્મજ્ઞ છે, કૃતજ્ઞ છે. વધુ તો શું કહું, સંસારમાં જેટલા ગુણો કહેવાય છે તે બધા અમારા અભયકુમારમાં છે."

[सं०] इत्थं मंत्रिवचनादभयकुमारगुणान् श्रुत्वा आर्द्रकुमार पितुराज्ञां समादाय मंत्रिणं प्रत्युवाच, मामनापृच्छ्य त्वं स्वदेशं मा यासीः। तत्र गच्छता त्वयाभयं प्रति स्नेहद्रुमबीजतुल्यं मद्वचः श्रोतव्यमिति। ततो मंत्र्यपि तद्वचनमङ्गीकृत्य राज्ञा विसृष्टः सन् वेत्रिणा दर्शितं निवासस्थानं ययौ। अथान्यदार्द्रकनृपः प्रवरमौक्तिकादीनि प्राभृतान्यर्पयित्वा तथा स्वपुरुषं तं मन्त्रिणञ्च श्रेणिकपार्श्वे प्रैषीत्।

[हिन्दी] इस प्रकार अमात्य के वचन सुनकर आर्द्रकुमारने पिता से आज्ञा लेकर मंत्री को प्रत्युत्तर दिया, हे अमात्य! तुम मुझसे विना पूछे अपने देश मत जाना। वहां जब आप जाओ तब महाराजकुमार अभयकुमार के प्रति मेरे प्रेम के बीज रूप वचनों को सुनकर जाना। तब उस मंत्रीने भी उनके वचनों को स्वीकार करके ऐसा ही करूंगा, ऐसा कहा, फिर राजा आर्द्रक के नौकरों द्वारा प्रदर्शित अपने निवासस्थान में चला गया। अब कुछ दिनों के बाद आर्द्रक राजाने मोतियों आदि से युक्त उपहार सामग्री को देकर उसके साथ अपने पुरुषों को रक्षार्थ देकर श्रेणिक राजा के पास भेजा। तब आर्द्रकुमारने भी अभयकुमार के लिये उपहार सामग्री प्रवाल, मौक्तिक आदि अनुपम वस्तुएं भेजी।

[ગુ૦] આ પ્રમાણે અમાત્યનાં વચનો સાંભળીને આર્દ્રકકુમારે પિતાની આજ્ઞા લઇને મંત્રીને જવાબ આપ્યો કે 'હે મંત્રીજી, તમે મને મળ્યા વગર તમારા દેશમાં જશો નહિ. તમે જ્યારે જાઓ ત્યારે મહારાજકુમાર તરફનો મારા પ્રેમનો સંદેશો સાંભળીને જજો.' મંત્રીએ તેનાં વચનો

માન્ય રાખી 'એમ જ કરીશ' એમ કહ્યું અને પછી રાજાના નોકરોએ બતાવેલા પોતાના નિવાસસ્થાનમાં ચાલ્યો ગયો.

થોડા દિવસો પછી આર્દ્રક રાજાએ સાચાં મોતી સાથેની ભેટની સામગ્રી શ્રેણિક રાજા માટે તે મંત્રીને આપી, અને તેની સાથે પોતાનાં માણસો તેનું રક્ષણ કરવા માટે મોકલ્યાં. આર્દ્રકકુમારે પણ અભયકુમારને માટે ભેટ રૂપે પ્રવાલ, મોતી વગેરે અનુપમ વસ્તુઓ મંત્રી સાથે મોકલી.

[सं०] अथ स पुमान् मंत्रिणा सार्द्धं राजगृहपुरं गत्वा श्रेणिकाय अभयाय च प्राभृतान्यर्पयामास। तथा नृपपुत्र आर्द्रकुमारस्त्वया सह मैत्र्यं कर्तुमिच्छति इत्यभयाय मंत्री संदेशमुवाच। तदा जिनशासने कुशलोऽभयः स्वचेतसि इत्यचिन्तयत्, निश्चितं स कुमारो विराधितश्रामण्यत्वादनार्येषु जातोऽस्ति। परं स राजपुत्रो महात्मा नियमादासन्नभव्योऽस्ति यतोऽभव्य-दूरभव्यानां तु कदापि मया सह मैत्र्यभिलापो न भवेत्।

[हिन्दी] इसके बाद मंत्रीने उन पुरुषों के साथ राजगृही नगरी में जाकर राजा श्रेणिक को व राजकुमार अभयकुमार को सारी भेंट में प्राप्त उपहार सामग्री भेंट की। तदनन्तर कुशल समाचारों के साथ अभयकुमार को "आर्द्रकुमार तुम्हारे साथ मित्रता करना चाहता है" यह सन्देश सुनाया। अभयकुमार जिनमत के अन्दर अत्यन्त कुशल था। उसने यह सन्देश सुनकर अपने मन में विचार किया। निश्चय से यह आर्द्रकुमार भव्य है, परन्तु पूर्वजन्म में इसने किसी चारित्र्य में विराधना की है, इससे यह अनार्यजाति में उत्पन्न हुआ है। मालूम होता है कि निश्चय से यह राजपुत्र महात्मा है, और निकट भवि है, क्योंकि अभव्य और दूरभव्य इन दोनों को मेरे साथ मित्रता की अभिलाषा न हो सकती है।

[ગુ૦] ત્યારપછી મંત્રી તે રક્ષકો સાથે પોતાના રાજગૃહી નગરમાં ગયો અને રાજા શ્રેણિકને તથા રાજકુમાર અભયકુમારને બધી ભેટો—જે જે તેને મળી હતી, એક એક કરીને આપી અને કુશળ સમાચાર સંભળાવ્યા. પછી અભયકુમારને 'આર્દ્રકકુમાર તમારી સાથે મિત્રતા ઇચ્છે છે' એમ કહ્યું. અભયકુમાર જિનમતમાં અત્યંત કુશળ હતા. તેમણે આ સંદેશો સાંભળીને પોતાના મનમાં વિચાર કર્યો કે નક્કી આ આર્દ્રકકુમાર ભવ્ય છે, પરંતુ પૂર્વજન્મમાં તેણે કોઇ ચારિત્ર્યમાં વિરાધના કરી છે તેથી તેનો અનાર્યજાતિમાં જન્મ થયો છે. લાગે છે કે નક્કી આ રાજપુત્ર

મહાત્મા છે અને નિકટભવિ છે, કારણ કે અભવ્ય અને દૂરભવ્ય એ બેને મારી સાથે મિત્રતા કરવાની અભિલાષા ન થાય."

[सं०] तस्मात्केनाप्युपायेन तं जिनधर्मानुरक्तं विधाय धर्ममार्गे प्रवर्तयिष्यामि। तत्र चायमुपायोऽस्ति प्राभृतच्छलेन यदि तत्रार्हत्प्रतिमां प्रेषयामि, तद्दर्शनाद्यदि तस्य जातिस्मरणज्ञानमुत्पद्यते तदेष्टसिद्धिः स्यात्। इत्युपायं विचिन्त्य छत्रसिंहासनादिप्रातिहार्यविराजितां रत्नमयीं प्रथमजिनेन्द्रप्रतिमां मञ्जूषामध्ये धृत्वा तदग्रे सकलानि धूपघंटिकादिदेवपूजोपकरणानि मुमोच ततस्तद्द्वारे तालकं दत्त्वाऽभयो निजमुद्रया तां मञ्जूषां मुद्रयामास। अथ कियद्भिर्वासरैः श्रेणिको नृपरतमार्द्रकं सत्पुरुषं प्रियालापपूर्वकं प्रभूतैः प्राभृतैः सह विसर्जयत्।

[हिन्दी] इसलिये किसी भी उपाय से उसे जिन धर्म में अनुरक्त करूं और जिन मार्ग में प्रवृत्त करुंगा। फिर उसनें सोचा कि मैं भेंट के बहाने उसे अरिहंत की प्रतिमा भेजूं जिसके दर्शन करनें से उसे पूर्वजन्म का जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न हो जायगा। जातिस्मरण ज्ञान से इसे प्रतिबोध मिलेगा। ऐसा विचार कर उसनें रत्नमयी श्री आदीश्वर भगवान की प्रतिमा छत्र भामंडल प्रमुख आठ प्रातिहार्य युक्त पेटी में सिंहासन पर बैठाकर उसमें उनके आगे धूपबत्ती, केसर, आरती, घंटिका आदि पूजा के उपकरण रखकर पेटी बन्द करके ताला बन्द कर दिया। तदनन्तर उसके ऊपर अपनी मोहर छाप लगा दी। अब कुछ दिनों बाद श्रेणिक राजानें आर्द्रक के पुरुषों को खूब सत्कार पूर्वक भेंट आदि देकर बिदा किये।

[ગુ૦] માટે કોઈપણ ઉપાયે હું તેને જિનધર્મમાં પ્રીતિવાળો કરૂં તથા જિનમાર્ગમાં પ્રવૃત્ત કરૂં. પછી તેણે વિચાર્યું કે હું ભેટને બહાને તેને અરિહંતની પ્રતિમા મોકલું, જેનાં દર્શન કરવાથી તેને પૂર્વજન્મનું જાતિસ્મરણ જ્ઞાન ઉત્પન્ન થશે. જાતિસ્મરણ થઈ જવાથી તેને પ્રતિબોધ મળશે. એવો વિચાર કરીને તેણે રત્નમયી શ્રી આદીશ્વર ભગવાનની મૂર્તિ છત્ર-ભામંડલ પ્રમુખ આઠ પ્રાતિહાર્યવાળી પેટીમાં સિંહાસન ઉપર બેસાડીને અને તેમની સામે ધૂપસળી, કેસર, આરતી, ઘંટડી વગેરે પૂજાનો સામાન રાખીને પેટીને તાળું મારી સીલ કરી, તેની ઉપર પોતાની મહોરની છાપ લગાવી દીધી. થોડા દિવસો પછી શ્રેણિક રાજાએ આર્દ્રક રાજના માણસોને ખુબ સત્કાર ભેટ વગેરે આપીને વિદાય કર્યા.

[सं०] अभयोऽपि तां पेटीं तस्य हस्ते समर्प्य तं सत्कृत्य अमृत-तुल्य-वाण्या इत्युवाच, "एषां पेटी आर्द्रकुमारस्य पुरस्तादुपढौकयतां तथा तस्य मद्बन्धोरिदं वक्तव्यं त्वया एकान्तप्रदेशे एकाकिना स्थित्वा इयं पेटी स्वयमुद्घाट्य तदन्तर्गतं वस्तु स्वयं दृष्टव्यमन्यस्य कस्यचिन्न दर्शनीयम्। ततोऽभयोक्तं वचोऽङ्गीकृत्य स पुमान् स्वपुरं ययौ, तथा तानि च प्राभृतानि स्वस्वामिपुत्राय चार्पयामास। तथार्द्रकुमारायाभयोक्तसंदेशमाचख्यौ।

[हिन्दी] अभयकुमार ने भी आर्द्रक के राजपुरुषों में प्रधान पुरुष का खूब सत्कार कर उसे वह पेटी देकर अमृत तुल्य वाणीसे आर्द्रककुमार के लिए सन्देश दिया। यह पेटी आप आर्द्रककुमार को दें दें और उन्हे मेरा यह सन्देश कहें कि हे मेरे मित्र! तुम इस पेटी को स्वयं ही अकेले और एकान्त प्रदेश में खोलना इसके भीतरकी वस्तु का दर्शन करना पर इसे किसी को दिखाना नहीं। इसके बाद वह राजपुरुष अभयकुमार का वचन स्वीकार कर अपने नगरको गया। जो जो भी वस्तुएं भेट स्वरूप श्रेणिक राजाने भेजी थी। उन सब को उसने अपने स्वामी और स्वामीपुत्र को दे दी तत्पश्चात् उसने आर्द्रकुमार से अभयकुमारका सन्देश कह सुनाया।

[ગુ૦] અભયકુમારે પણ આર્દ્રક રાજાના માણસોમાંના મુખ્ય માણસનો ખુબ સત્કાર કરીને તેને તે પેટી આપી, અમૃતતુલ્ય વાણીથી આર્દ્રકકુમાર માટેનો સંદેશો આપ્યો. અને કહ્યું કે આપ આ પેટી આર્દ્રકકુમારને દેજો અને તેમને મારો સંદેશો કહેજો કે "હે મિત્ર! તું આ પેટી પોતે એકલો અને એકાન્તમાં ખોલજે, તેની અંદરની વસ્તુનું દર્શન કરજે પણ એ કોઇને બતાવીશ નહિ." પછી તે રાજપુરુષ અભયકુમારનો સંદેશો લઇને પોતાના શહેરમાં ગયો. જે જે વસ્તુઓ શ્રેણિક રાજાએ તેની સાથે ભેટ સ્વરૂપે મોકલી હતી તે બધી તેણે પોતાના રાજા તથા રાજકુમારને આપી દીધી. ત્યારપછી તેણે આર્દ્રકકુમારને અભયકુમારનો સંદેશો કહી સંભળાવ્યો.

[सं०] ततः कुमारः एकान्ते स्थित्वा तां पेटीमुद्घाट्य तन्मध्यस्थात्तमस्तुद्योतकारिणीं तां श्री-ऋषभस्वामि-प्रतिमां दृष्ट्वा स्वचित्ते चिन्तयामास, किमिदं किञ्चिदुत्तमं देहाभरणमस्ति तत् किं मूर्ध्नि समारोप्यं कण्ठे वा हृदये वान्यत्र वा कुत्रचिदारोप्यं. क्वापीदं दृष्टपूर्वमिव मां प्रतिभासते परं स्मृतिपथं नायाति, इत्थमन्यथं चिन्तयत आर्द्रकुमारस्य जातिस्मरणजनिका मूर्छा समजनिष्ट तदुत्पन्नजातिस्मरणः स कुमारः संप्राप्तचेतनः सन् स्वयमेव एवं निजपूर्वभवकथां चिन्तयामास। तथाहि—

[हिन्दी] आर्द्रकुमारने एकान्त में जाकर उस पेटी को अभयकुमार के कथनानुसार खोलीं। पेटी के मध्यमें प्रकाशमान श्री ऋषभस्वामी की उस प्रतिमाका दर्शनकर अपने मनमें विचारने लगा। अरे! यह क्या हैं? यह तो कोई उत्तम गहना है, जिसें मस्तक पर, कण्ठ पर या हृदय पर पहिनना चाहिये। यह तो ऐसा लगता हैं कि मैंनें पहिले कहीं देखा हो। अब मुझे याद नहीं आ रहा हैं कि इसें पहली वार कहां देखा था। इस तरह वह मनमें विकल्पकर उसे याद करने लगा। उसी समय पूर्वभव को स्मरण दिलानेंवाली मूर्छा उसे आ गयीं और वह वेसुध होकर जमीन पर गिर पड़ा। जब उसकी मूर्छा हटी, उसें चेतनता प्राप्त हुई तब उसें अपनें पूर्वजन्म का जातिस्मरण हो गया। तब वह स्वयं ही अपनें पूर्वभव की कथा इस प्रकार कहनें लगा।

[ગુ૦] પછી આર્દ્રકુમારે અભયકુમારના સંદેશા મુજબ તે પેટી એકાન્તમાં જઇને ખોલી. પેટીની અંદરની પ્રકાશમાન શ્રી ઋષભસ્વામીની તે પ્રતિમાનું દર્શન કરીને તે પોતાના મનમાં વિચારવા લાગ્યો: 'અરે, આ શું? આ તો કોઇ ઉત્તમ ઘરેણું છે, જેને માથા ઉપર, ગળામાં કે હૃદય ઉપર ધારણ કરવું જોઇએ. આ તો જાણે એવું લાગે છે કે મેં પહેલાં ક્યાંક જોયું હોય. મને અત્યારે યાદ નથી આવતું કે આને મેં પહેલાં ક્યાં જોયેલ છે. આ રીતે તે મનમાં સંકલ્પ-વિકલ્પ કરતો તેને સંભારવા લાગ્યો. એજ વખતે તેને પૂર્વભવનું સ્મરણ કરાવવાવાળી મૂર્છા આવી ગઇ અને તે બેશુદ્ધ થઇને જમીન ઉપર પડી ગયો. જ્યારે તેની મૂર્છા હટી અને તેને શુદ્ધિ આવી ત્યારે તેને પોતાના પૂર્વભવનું જાતિસ્મરણ જ્ઞાન થયું, હવે તે પોતે જ પોતાના પૂર્વભવની કથા આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો.

आर्द्रकुमार के पूर्वभव की कथा :—

[मं०] इतो भवात्तृतीये भवे मगधदेशे वसन्तपुरेऽहं 'सामायिको नाम' कुटुम्बपूर्व। मम बन्धुमती भार्याऽभूत्। एकदा सुस्थिताचार्यसमीपे तया सह अर्हद्धर्मश्रौषं। ततः समार्योऽपि अहं प्रतिबुद्धो गृहवासविरक्तः सन् तत्पार्श्वे प्रव्रज्यां गृहीतवान्। क्रमेण गुरुणा सह विहरन् एकस्मिन् पत्तनेऽगां बन्धुमती साध्व्यपि अपरसाध्वीसहिता तत्रागात्। एकस्मिन् तां पश्यन् पूर्वभोगान् स्मरन् अहं तस्यामनुरक्तोऽभूवं।

[हिन्दी] इस भव से तीसरे भव पूर्व में मगध देशके वसन्तपुर में सामायिक नामका कुटुम्बी था। मेरे बन्धुमती नामकी पत्नी थी। एक वार "बहुश्रुत सुस्थिताचार्य" विहार करते २ वहां आयें। तब हम दोंनों ने उनसे व्याख्यान और अरिहंतो का मार्ग सुना। इस धर्मको सुनकर हम प्रतिबुद्ध हुए। हम दोनों नें आचार्यश्री से विनती की और दीक्षा अंगीकार की। मेरी स्त्री तो साध्वीओं के साथ साध्वी बनी। और मैं गुरुजी के साथ रहा। पढलिखकर गीतार्थ हुआ। इस तरह क्रमसें विहार करते करते एक बार मैं किसी शहर में गया। दैवयोग सें बन्धुमती साध्वी भी दूसरी साध्वियों के साथ उसी नगर में आ गयी। मैंने अपनी पत्नी को देखा। मुझे पूर्व भोग याद आयें। मैं उससे अनुरक्त हो गया। मैंने उसे कामचेष्टाएं दिखायी।

[ગુ૦] આ ભવથી પહેલાંના ત્રીજા ભવમાં હું મગધ દેશમાં વસંતપુર નામના નગરમાં સામાયિક નામનો ગૃહસ્થ હતો. મારે બન્ધુમતી નામની પત્ની હતી. એક વાર "બહુશ્રુત સુસ્થિતાચાર્ય" ત્યાં વિહાર કરતા કરતા આવ્યા. ત્યારે અમે બન્નેએ તેમની પાસે વ્યાખ્યાન સાંભળ્યું અને અરિહંતોના માર્ગ વિષે જાણ્યું. આ ધર્મને સાંભળીને અમે પ્રભાવિત થયાં. અમે બન્નેએ આચાર્યશ્રીને વિનંતી કરી અને બન્નેએ દીક્ષા અંગીકાર કરી. મારી સ્ત્રી સાધ્વીઓની સાથે સાધ્વી બની અને હું ગુરુજીની સાથે રહ્યો, અને ભણી ગણીને (હુશિયાર) "ગીતાર્થ" થયો. આ પ્રમાણે ક્રમે ક્રમે વિહાર કરતાં કરતાં એક વાર હું કોઇ શહેરમાં ગયો. દૈવયોગથી બંધુમતી પણ બીજી સાધ્વીઓની સાથે તે જ શહેરમાં આવી. મેં મારી પત્નીને જોઇ. મને પહેલાં ભોગવેલા ભોગો યાદ આવ્યા અને મને મારી પત્નીમાં મોહ થયો. મેં તેને ઇશારા કર્યા.

[सं०] तच्चान्यसाध्व्यै आख्यत्। साऽपि प्रवर्त्तिन्यै आचख्यौ। सा पुनर्नन्तुमन्यै आचख्यौ। तदा बंधुमती विषण्णा सती प्रवर्त्तिनीं प्रोवाच "एष गीतार्थोऽपि यदि मर्यादां लङ्घेत तदा का गतिः?" असौ मां देशान्तरमपि यावद्द्रक्ष्यति तावन्मोह-प्रभावान्मयि रागं न त्यक्ष्यति तस्मात् हे भगवति! अहं निश्चितं मरणं प्रपत्स्ये येन नास्य नापि मे शीलस्खलनं जायेत। इत्युक्त्वा सा साध्वी अनशनं कृत्वा शुद्धमानसा प्राणांस्तत्याज देवत्वं च प्राप।

[हिन्दी] उसने किसी अन्य साध्वी से यह वृत्तान्त कहा, साध्वीनें प्रवर्तिनी को यह बात बताई, प्रवर्तिनी ने बन्धुमती को सुनाया। तब बन्धुमती बडी दुःखी हुई। उसने प्रवर्तिनीसें कहा, "यह गीतार्थ होकर भी अगर मर्यादा का उल्लंघन करे तो क्या उपाय हैं ?" मैं अगर देशान्तर में भी चली जाऊगी तो भी मोह प्रभाव से मुझमें अनुरक्त यह अपनें चारित्र को छोड़ देंगा, अतः हे भगवती! मैंने मृत्यु का वरण करना निश्चित किया हैं। जिस से इसका और मेरा शील खंडित न हो। इतना कहकर उस साध्वीनें अनशन करके शुद्ध भावना से प्राणों का छोड़ दिया और वह देवत्वको प्राप्त हो गयी।

[ગુ०] આ વાત તેણે બીજી સાધ્વીને કહી. તે સાધ્વીએ પ્રવર્તિનીને આ હકીકત કહી. તેણે બંધુમતીને કહ્યું. ત્યારે બંધુમતી બહુ દુઃખી થઇ અને તેણે પ્રવર્તિનીને કહ્યું કે, "ગીતાર્થ હોવા છતાં પણ જો એ મર્યાદાનું ઉલ્લઘંન કરે તો તેનો શું ઉપાય ? હું અગર બીજા દેશમાં ચાલી જાઉં તો પણ મોહથી મારામાં અનુરક્ત થયેલ તે પોતાનું ચારિત્ર છોડી દેશે. માટે હે ભગવતી, મેં મૃત્યુનું શરણુ લેવાનો નિશ્ચય કર્યો છે જેથી તેનું તથા મારું શીલ ખંડિત ન થાય." આટલું કહીને તે સાધ્વીએ અનશન કરીને શુદ્ધ ભાવનાથી પોતાના દેહને છોડી દીધો અને દેવત્વ પ્રાપ્ત કર્યું.

[सं०] ततस्तां मृतां श्रुत्वा मया व्यचिन्तितं सा महानुभावा निश्चितं व्रतभङ्गभयान्मृता अहं पुनर्भग्नस्ततो ममापि जीवितेन अलं तदाहमप्यनशनं कृत्वा विपद्य देवोऽभूवं ततश्च्युत्वाहमत्रार्यदेशे धर्महीन. समुत्पन्नोऽस्मि। साम्प्रतं यो मम प्रतिबोधकः स मे बन्धुः स एव च गुरुरस्ति केनापि भाग्योदयेनाभयकुमारमंत्रिणाऽहं बोधितः परमद्यापि मंदभाग्योऽस्मि यतस्तं द्रष्टुमसमर्थः। तस्मात्पितरमनुज्ञाप्यार्यदेशे गमिष्यामि यत्र मे गुरुरभयकुमारोऽस्ति।

[हिन्दी] इसके पश्चात् मैंने उस साध्वी को मरा हुआ सुनकर विचार किया, अहो! वह महानुभावा अपने व्रत भंग के भय से मर गई और मैं चरित्र से विचलित हो गया, अतः अब मेरे जीने से क्या? ऐसा विचारकर मैंनें भी अनशन करके मरकर देव बना। देवत्व पूर्ण करने के बाद अब मैं धर्म हीन अनार्य देश में पैदा हुआ हूँ। अब मुझे प्रतिबोध देनेवाले अभयकुमार मेरे मित्र और गुरु हैं, किसी

भाग्योदय से मैं अभयकुमार से प्रतिबोधित हुआ हूं। पर अभी भी मैं मन्द भाग्य–वाला हूं क्योंकि उनका दर्शन नहीं कर सका हूं। अतः पिताजी से आज्ञा लेकर मैं आर्यदेश में जाऊंगा, जहां मेरे गुरु अभयकुमार हैं।

[ગુ૦] પછી તે સાધ્વીના મરણના સમાચાર સાંભળીને મેં વિચાર કર્યો : 'અહો! તે મહાસાધ્વી પોતાના વ્રતભંગના ભયથી મરી ગઇ અને હું ચારિત્રથી વિચલિત થઇ ગયો. હવે મારે પણ જીવીને શું કરવું છે ? એવો વિચાર કરીને હું પણ અનશન કરીને મરી ગયો અને દેવત્વને પામ્યો. દેવપણું પૂરું કર્યા પછી હવે હું ધર્મહીન અનાર્ય દેશમાં જન્મ પામ્યો છું. હવે મને પ્રતિબોધ આપવાવાળા અભયકુમાર મારા મિત્ર તથા ગુરુ છે. કોઇક મારા ભાગ્યોદયથી જ મને અભયકુમારે પ્રતિબોધ આપ્યો છે પણ હજીએ હું દુર્ભાગી છું, કેમકે મને તેમનાં દર્શન નથી થઇ શકયાં. માટે પિતાજીની આજ્ઞા લઇને હું મગધદેશમાં જઇશ કે જ્યાં મારા ગુરુ અભયકુમાર છે.

[सं०] इत्थं मनोरथं कुर्वन् आदिमार्हतः प्रतिमां पूजयन्नार्द्रकुमारो दिवसानतिवाहयति स्म। एकदा कुमारो नृपमेवं व्यजिज्ञपत्! हे तात! स्वमित्रमभयकुमारं द्रष्टुमिच्छामि। आर्द्रकनृपोऽवादीत्, हे वत्स! त्वया तत्र गमनेच्छा न कर्तव्यास्माकमपि स्थानस्थितानामेव श्रेणिकेन सह मैत्र्यमस्ति। तदा मित्राज्ञया निरुद्धोऽभयसंसर्गं प्रत्युत्कंठितश्चार्द्रकुमारोऽपि न तस्थौ न च जगाम। तथा स आसने शयने याने भोजनेऽन्यक्रियासु चाभयकुमारेणाश्रितां दिशं नेत्रयोरग्रे चकार, पुनः किदृशो मगधदेशो राजगृहपुरं च किदृक् तत्रागमने कस्को मार्ग इत्थं पार्श्ववर्तिनो जनान् पप्रच्छ।

[हिन्दी] इस तरह मनोरथ करके आदिनाथ भगवान की प्रतिमा का पूजन करता हुआ, आर्द्रकुमार अपने दिन बिता रहा था। एक बार कुमारने राजा से निवेदन किया कि हे महाराज! मैं अपने मित्र अभयकुमार को देखना चाहता हूं। आर्द्रक राजा बोला, "हे वत्स" तुम्हें वहां जाने की इच्छा नहीं करनी चाहिये। हमारी भी इसी स्थान पर रहकर ही श्रेणिक राजा से मित्रता है। तब पिता द्वारा निरुद्ध वह आर्द्रकुमार विचलित हो गया। न तो वह वहां जा सका और न वह ठहर ही सका। अर्थात् अब उसका मन नहीं लग सका। सोते, बैठते, खाते–पीते और कोई भी काम करते वक्त वह अभयकुमार को याद करने लगा। वह राजगृही

के मार्गकी तरफ उत्कण्ठित दृष्टि से देखता रहे, जो भी लोग मिलें उनसे मगध-देशमें राजगृहपुर कैसा है ? वहां जाने का कौनसा मार्ग है ? यह पूछता रहे।

[ગુ૦] આ પ્રમાણે મનોરથ કરીને આદિનાથ ભગવાનની પ્રતિમાનું પૂજન કરતો આર્દ્રકુમાર પોતાના દિવસો વિતાવી રહ્યો હતો. એકવાર કુમારે રાજાને નિવેદન કર્યું કે "મહારાજ! હું મારા મિત્ર અભયકુમારને મળવાં ચાહું છું." આર્દ્રક રાજાએ કહ્યું: 'હે વત્સ! તારે ત્યાં જવાની ઇચ્છા નહીં કરવી જોઇએ. મારી પણ અહીં રહ્યાં રહ્યાં જ શ્રેણિક રાજા સાથે મિત્રતા છે.' પિતાએ ના પાડવાથી આર્દ્રકુમાર વિચલિત થઇ ગયો. ન તો તે ત્યાં જઇ શકયો કે ન ત્યાં ને ત્યાં રહી શકયો. તેનું મન કામમાં ચોંટયું નહીં. સૂતાં, બેસતાં, ખાતાં, પીતાં અને કોઇ પણ કામ કરતી વખતે તે અભયકુમારને યાદ કરવા લાગ્યો. તે રાજગૃહીના રસ્તા તરફ ઉત્કંઠિત દૃષ્ટિથી જોતો રહેતો અને જે કોઇ માણસ મળે તેને મગધદેશમાં રાજગૃહ શહેર કેવું છે? ત્યાં જવાનો કયો માર્ગ છે, વગેરે પૂછતો રહેતો.

[सं०] तस्मिन्नवसरे आर्द्रकनृपो दध्यौ कदापि कुमारो मामकथयित्वैव निश्चितमभयसमीपे यास्यत्यतो यत्नः कर्तव्यस्ततो नृपः पञ्चसामन्तशतानि इत्यादिशत् अहो अयं कुमारो देशान्तरं गच्छन् भवद्भी रक्षणीयः। तदा ते सामन्ता देहे छायेव तत्पार्श्वं न त्यजन्ति स्म। कुमारोऽप्यात्मानं देहधृतमिवामंस्त। ततः सोऽभयसमीपगमनं मनसि अवधार्य प्रत्यहमश्ववाहनभूमौ अश्ववाहनं कर्तुमारेभे ते सामन्ताश्च अश्वारूढा अंगरक्षकाः सन्तः पार्श्वे तस्थुः, कुमारोऽश्वं वाहयन् तेभ्यः किञ्चिदग्रे गत्वा न्यवर्त्तत।

[हिन्दी] उसकी ऐसी चेष्टाएं देखकर आर्द्रक राजा को चिन्ता हुई। कहीं यह कुमार मुझे बिना कहे ही अभयकुमार से मिलने के लिये न चला जावे, इसलिये कोशीश करना चाहिये। ऐसा सोचकर राजाने पांचसौ सामन्तों को आज्ञा दी कि आप ध्यान रखिये कि कहीं आर्द्रकुमार राजगृही तरफ न चला जाय। इसे अपनी ही सीमा में खेलने रमाने देना है। यह आज्ञा सुन पांचसौ सामन्त जिस तरह शरीर के पास छाया रहती है, उसी तरह उसके पास से नहीं हटते थे। कुमारने भी अपने को बन्दी सा ही समझ लिया। उसके बाद कुमारने सोचा कि मुझे अब अभयकुमार के समीप जाने का उपाय करना चाहिये। ऐसा विचार करके वह घुड़

दौड़ में मन लगाने लगा। कुमार जब घोडे पर बैठकर उसे दौडाता तो ५०० सामन्त भी घोड़ों पर साथ रहते। तब कुमार भी उनसे आगे निकलकर लौट जाता।

[ગુ૦] તેની આવી વર્તણુંક જોઇને આર્દ્રક રાજાને ચિંતા થઇ કે ક્યાંક આર્દ્રકુમાર મને કહ્યા વિના જ અભયકુમારને મળવા ચાલ્યો ન જાય. એ માટે કાંઇક પ્રયત્ન કરવો જોઇએ. આવો વિચાર કરીને રાજાએ પોતાના પાંચસો સામંતોને આજ્ઞા કરી કે આર્દ્રકુમાર રાજગૃહી ચાલ્યા ન જાય તેનું ધ્યાન રાખજો. તેને આપણી હદમાં જ રહેવા દેવા છે. આવી આજ્ઞા સાંભળીને એ પાંચસો જેવી રીતે શરીરની સાથે પડછાયો રહે તેમ તેની આસપાસ રહેવા લાગ્યા. કુમારે પણ પોતાની જાતને કેદી જેવી અનુભવી. ત્યારપછી કુમારે વિચાર કર્યો કે–મારે હવે અભયકુમારની પાસે જવા માટેનો કોઇક ઉપાય કરવો. વિચાર કરીને તે ઘોડા દોડાવવામાં પોતાનું મન પરોવવા લાગ્યો. કુમાર જ્યારે ઘોડા પર બેસીને તેને દોડાવતો ત્યારે એ પાંચસો સામંતો પણ ઘોડા પર તેની સાથે રહેતા. આર્દ્રકુમાર સૌની આગળ નીકળી જતો અને પછી પાછો ચાલ્યો આવતો.

[मं०] एवं चाश्वं वाहयन् सोऽधिकाधिकं ययौ पुनः पुनर्व्याघुट्यायर्यौ चेत्थं तेषां विश्वासमुत्पाद्यान्यदार्द्रकुमारो निजैः प्रतीतिमत्पुरुषैः समुद्रे यानपात्रं प्रगुणं कारयित्वा तच्च रत्नादिभिः प्रपूर्य जिनप्रतिमां च तत्रारोप्य तथैवाश्वं वाहयन् दूरगमनाददृश्यीभूय तद्यानपात्रमारुह्य आर्यदेशं ययौ, ततो यानपात्रादुत्तीर्य तां प्रतिमामभयकुमाराय संप्रेष्य सप्तक्षेत्रे धनान्युप्त्वा यतिलिङ्गं गृहीतवान्।

[हिन्दी] इस तरह वह नित्य प्रति घोडे पर घूमने लगा। यह देख सामंतोंने सोचा। राजा भ्रम मे पड़ गया है। यह कुमार तो नहीं जायगा। इस तरह ५०० सामन्तों के हृदय में कुमार के प्रति विश्वास उत्पन्न हो गया। वे लापरवाह हो गये। तब एक दिन समुद्र के किनारे स्थित जहाजवालो से कुमार बात करके आया। दूसरे दिन वह प्रतिमाजी की पेटी रत्नो से भरकर लेकर के जहाज में बैठे आर्य देशमें गया। वह मनमें सोचने लगा कि मै राजगृही कब पहुंचुगा. चारित्र के बिना दिन व्यर्थ जा रहे हैं, ऐसा जानकर उसने प्रतिमाजी को तो अभयकुमार के पास भेजी और अपने धन को सात क्षेत्रोंमें लगा दिया तब वह स्वयं चारित्र लेने को तैयार हो गया।

[ગુ૦] આ પ્રમાણે તે રોજ ઘોડા ઉપર ફરવા જવા લાગ્યો.

આ જોઈને સામંતોએ વિચાર્યું: રાજા ભ્રમમાં પડી ગયા છે. કુમાર તો ક્યાંય જાય તેવું લાગતું નથી. આ પ્રમાણે પાંચસોયે સામંતોના મનમાં કુમારની ઉપર વિશ્વાસ બેસી ગયો, અને તેથી તેઓ બેપરવા બની ગયા. પછી એક દિવસ કુમાર સમુદ્રને કિનારે નાંગરેલા વહાણવાળા સાથે વાતો કરવા ગયા અને બીજે દિવસે પ્રતિમાજીવાળી પેટીમાં રત્નો ભરી લઈને વહાણમાં બેસીને આર્યદેશમાં ચાલ્યો ગયો. તે મનમાં વિચારવા લાગ્યો કે હું ક્યારે રાજગૃહી પહોંચીશ? દીક્ષા લીધા વગરના દિવસો નકામા જાય છે એમ સમજીને તેણે પ્રતિમાજીને અભયકુમારની પાસે મોકલી દીધી, પોતે સાથે લાવેલા ધનને સાતે ક્ષેત્રમાં વહેંચી દીધું અને પોતે દીક્ષા લેવાની તૈયારી કરવા લાગ્યો.

[सं०] स च यावत्सामायिकमुच्चारयितुमारेभे तावदाऽऽकाशस्थितया देवतया उच्चैः स्वरेणोचे, यद्यपि त्वं महासत्त्वस्तथापि सांप्रतं दीक्षां मा ग्रहीः। अद्यापि ते भोगफलं कर्मास्ति तद् भुक्त्वावसरे व्रतं गृहाण, यतो भोग्यं कर्म तीर्थकृतामप्यवश्यं भोक्तव्यं, तस्माद्धे महन्! तेन व्रतेनालं, यद्गृहीतमपि त्यक्ष्यते, यथा तेन भोजनेन किं यद् भुक्तमपि वम्यते, इत्थं बहुधा निषिद्धोऽप्यार्द्रकुमारः स्वपौरुषमङ्गीकृत्य देवीवाचमनादृत्य स्वयं दीक्षामाददे।

[हिन्दी] वह जब तक सामायिक उच्चारण करे तब आकाशमें स्थित देवताने उच्च स्वर में कहा, यद्यपि तुम महासत्त्व हो तो भी इस समय दीक्षा मत लो। अभी भी तुम्हारे भोग्य कर्म अवशिष्ट है। पहले उन्हें भोग लो फिर व्रत लेना, क्योंकि भोग्य कर्म तो तीर्थंकरों को भी अवश्य ही भोगने पड़ते हैं। अतः हे महान्! दीक्षा मत लो। जिस दीक्षा को लेकर फिर तोडना पडे- वह दीक्षा किस काम की। जिस भोजन को खाकर आहार पचे नहीं वह आहार क्या काम का? किन्तु आर्द्रकुमार को उस समय जोश चढ़ा हुआ था, अतः बार बार मना करने पर भी देवी के वचनों का अनादर कर उसने दीक्षा ग्रहण करली। उस आर्द्रकुमारने मुनियों के योग्य तीक्ष्ण व्रत का पालन प्रारम्भ कर दिया।

[ગુ૦] તે સામાયિકનું ઉચ્ચારણ કરે તે પહેલાં આકાશમાં રહેલા દેવોએ તેને ઊંચે સ્વરે કહ્યું: "જો કે તું મહાસત્ત્વ છે, તો પણ હમણાં દીક્ષા ન લે. હજી પણ તારા ભોગ્યકર્મ બાકી છે. પહેલાં તેને ભોગવી લે,

પછી દીક્ષા લેજે; કારણ કે ભોગ્યકર્મ તીર્થંકરોને પણ અવશ્ય ભોગવવાં પડે છે, માટે હે મહાન જીવ, તું દીક્ષા ન લે. જે દીક્ષાને લઇને પછી તેને તોડવી પડે, તે દીક્ષા શા કામની ? જે ભોજન ખાવાથી આહાર પચે નહીં તે ભોજન કર્યું શા કામનું ? પણ આર્દ્રકુમારને તો અત્યારે જોશ ચડયું હતું એટલે વારંવાર ના પાડવા છતાં દેવોના વચનોની અવગણના કરીને તેણે દીક્ષા ગ્રહણ કરી લીધી, અને મુનિઓને યોગ્ય તીક્ષ્ણ વ્રતનું પાલન કરવાનું શરુ કરી દીધું.

[सं०] स प्रत्येकबुद्धो मुनिस्तीक्ष्णं व्रतं पालयन् भूमंडले विचरन् अन्यदा वसन्तपुरपत्तनं प्राप्य कस्मिंश्चिद्देवकुले कायोत्सर्गेण च तस्थौ। इतश्च तस्मिन्नगरे देवदत्तो नाम महाश्रेष्ठ्यभूत् तस्य धनवती नाम पत्नी आसीत्। अथ स बन्धुमतीजीवो देवलोकाच्च्युत्वा श्रीमती नाम अद्भुतरूपा तयोः पुत्री समजनि। सा च धात्रीभिर्लाल्यमाना क्रमेण रजःक्रीडोचितं वयं प्राप।

[हिन्दी] एक वार वह विहार करता करता वसन्तपुर नामक शहर में आया। वहां किसी देव मन्दिर में कायोत्सर्ग ध्यान में बैठा। इस अवसर में बन्धुमती का जीव देवलोक से च्युत होकर उसी नगरमें देवदत्त शेठ के घर में लड़की के रूप में उत्पन्न हुआ। शेठनें उसका नाम श्रीमती दिया। अनुक्रम से धाय द्वारा लालित पालित होकर सात वर्ष की हो गई। एक वार यह अपनी सहेलियों को साथ लेकर खेलती हुई उसी मन्दिर के पास गई, जहां आर्द्रकुमार तपस्वी वेशमें काउस्सग्ग ध्यानमें स्थित थे।

[ગુ૦] એક વાર તે વિહાર કરતો કરતો વસંતપુર નામે શહેરમાં આવ્યો. ત્યાં કોઇ દેવમંદિરમાં કાયોત્સર્ગ ધ્યાનમાં બેઠો. આ વખતે બંધુમતીનો જીવ દેવલોકથી ચ્યુત થઇને તે જ શહેરમાં દેવદત્ત શેઠના ઘરમાં દીકરી તરીકે જન્મ પામ્યો. શેઠે તેનું નામ શ્રીમતી પાડ્યું. કાલક્રમે ધાઇ દ્વારા પાલન–પોષણ પામેલી ને પોતાની સખીઓને સાથે લઇને રમતી રમતી તે જ મંદિરની પાસે ગઇ કે જ્યાં આર્દ્રકુમાર કાઉસ્સગ્ગ ધ્યાનમાં બેઠા હતા.

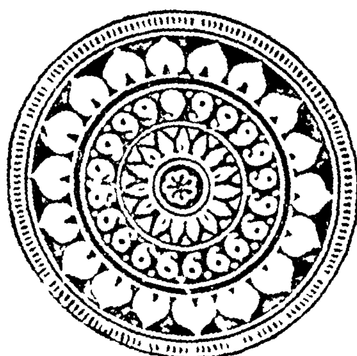
[सं०] एकदा तत्र देवकुले पौरकन्याभिर्युक्ता श्रीमती कन्या पतिरमणक्रीडया रन्तुमाययौ। तदा सर्वाः कन्या भर्तारं वृणुतेत्यूचुस्ततः ययाऽपि कोऽपीप्सितं स्तम्भादिवरा वृताः श्रीमत्योक्तं हे सख्यो! मया तु अयं पुरुषो वृतः। [इति प्रबन्धानुसारतः]

[हिन्दी] वहां एक वार ये सहेलियां और श्रीमती मिलकर "पतिवरण" का खेल खेलने लगी। तब सब कन्याओंनें अपनी अपनी रुचि के अनुकूल 'पतिवरण' किया। जैसे किसीनें यक्ष को वरा, किसीनें वृक्ष को वरा, किसीनें स्तंभ को वरा, किसीनें कुछ, किसीनें कुछ वरा। इस पर श्रीमती नामकी कन्या बोली हे सखियां! मैंने तो इन पूज्य साधुजी को ही वर लिया है।

नोटः—[यहां प्रथम व्याख्यान समाप्त हुआ।]

[ગુ૦] ત્યાં એક દિવસ શ્રીમતી અને તેની સાહેલીઓ 'સ્વયંવર'ની રમત રમવા લાગી. બધી કન્યાઓએ પોતપોતાની રુચિ પ્રમાણે પતિ પસંદ કર્યા. જેમકે કોઇએ યક્ષને, કોઇએ વૃક્ષને, કોઇએ સ્તંભને, કોઇએ કોઇ, કોઇએ કાંઇ એમ સૌએ પોતપોતાના પતિ પસંદ કર્યા. એટલે શ્રીમતી નામની કન્યા બોલી કે હું તો આ પૂજ્ય સાધુ મહારાજને જ પતિ તરીકે પસંદ કરું છું.

[પહેલા દિવસનું વ્યાખ્યાન સમાપ્ત]



अथ द्वितीय–व्याख्यान–प्रारम्भः।

[सं०] अथ साधु वृत्तं साधु वृत्तमिति देवता प्रोवाच। पुनर्गर्जितं तन्वाना सा एव देवी तत्र रत्नान्यवर्षत श्रीमती गर्जिताद्दिता तस्य मुनेः पादेऽलगत्, स मुनिः क्षणमात्रं स्थित्वाचिन्तयत्, इह तस्थुषो ममानुकूल उपसर्गोऽभूत्, अतोऽत्र न स्थेयमिति विचिन्त्य सोऽन्यत्रागात्। तदा अस्वामिकं धनं राज्ञ एवेति निश्चयं कृत्वा तानि रत्नान्यादातुं राजा तत्राजगाम। राजपुरुषास्तद् द्रव्यस्थानं नागसंकुलं ददृशुः, देवतया चोक्तं एतद् द्रव्यं तस्यै कन्यायै मया वरके प्रदत्तमस्ति।

[हिन्दी] ठीक ही वरण किया। ठीक ही वरण किया। इस तरह आकाशमार्ग से देववाणी हुई और रत्नों की वर्षा हुई। श्रीमती इस गर्जन से डरकर मुनिराज के पांव पकड़कर बैठी। मुनिनें मनमें विचार किया कि यह सुखकारी उपसर्ग हुआ है। यह चारित्र में विघ्न डालनें वाला है। अतः यहां रहना उचित नहीं, ऐसा विचार करके उसनें वहां से विहार किया. क्योंकि मुनि के प्रतिबन्धन नहीं होता है। रत्नों की वर्षा से प्राप्त धन को लेने के लिये वहां का राजा वहां आया, राजपुरुषोंने देखा धन के सांप लिपटा हुआ है। यह देख उस धन को लेने की उनकी शक्ति नहीं चली। तब राजानें कहा कि यह धन किसका है? तब आकाश से देववाणीनें उत्तर दिया कि वह धन मैने श्रीमती के विवाह के वास्ते दिया है।

વ્યાખ્યાન બીજું

[ગુ૦] "પસંદગી બરાબર છે" "પસંદગી બરાબર છે" આ પ્રમાણે આકાશવાણી થઈ અને આકાશમાંથી રત્નોની વર્ષા થઈ. શ્રીમતી આ ગર્જનાથી ડરીને મુનિરાજના પગ પકડીને બેસી ગઈ. મુનિએ મનમાં વિચાર કર્યો કે આ સુખકારી ઉપસર્ગ થયો છે અને તે ચારિત્રમાં વિઘ્નકર્તા છે: તેથી હવે અહીં રહેવું યોગ્ય નથી. એવો વિચાર કરીને તેમણે ત્યાંથી વિહાર કર્યો, કારણ કે મુનિઓએ કોઈ બંધનમાં રહેવું ઉચિત નથી. રત્નોની વર્ષાથી મળેલું ધન લેવા માટે ત્યાં શહેરનો રાજા આવ્યો. રાજપુરુષોએ જોયું કે તે ધનને સાપ વીંટળાયેલા છે. આથી તે ધન લેવાની તેમની હિંમત ચાલી નહી. રાજાએ કહ્યું કે આ ધન કોનું છે? ત્યારે આકાશવાણી થઈ કે "આ ધન મેં શ્રીમતીના વિવાહ માટે આપ્યું છે."

[सं०] इति श्रुत्वा नृपो विलक्षस्सन् स्वस्थानं ययौ। ततस्तत्सर्वं धनं श्रीमती पिता श्रेष्ठी जग्राह। अथ कियता कालेन श्रीमतीं परिणेतुं बहवो वरा अढौकन्त। तत्स्वरूपं पित्रा पुत्र्यै उक्तं तदा श्रीमती जगाद, हे तात! यो महर्षिर्मया वृतः स एव मम वरः तद्वरणे देवता यद् द्रव्यमदात् तद् द्रव्यं गृह्णता त्वयापि तदनुमतमेव ततस्तस्मै मां कल्पयित्वान्यस्मै दातुं नार्हसि उक्तं च :—

" सकृज्जल्पन्ति राजानः, सकृज्जल्पन्ति साधवः।
सकृत्कन्या प्रदीयन्ते, त्रीण्येतानि सकृत् सकृत् ॥ "

[हिन्दी] यह सुन कर राजा अपने निवास स्थान में चला गया, और वह सारा धन श्रीमती का पिता ले गया। तदनन्तर कितने समय बाद श्रीमती जब विवाह योग्य हुई तो सैकडो स्थानों पर कन्या के योग्य वर की तलाश सेठ नें आरम्भ की। यह देख कन्या श्रीमती नें अपने पिता से कहा " हे पिताजी! जिस महर्षि का मैंने खेल खेलते वरण किया था वही मेरा पति होगा, क्योंकि उसी के वरण में देवी जो द्रव्य दिया हैं वह आप लाये है। उस समय आपकी भी इसमें स्वीकृति थी। इस तरह एक बार कन्यादान की कल्पना करके अब आप दूसरे वर को मुझे देना चाहते हैं, यह योग्य नहीं है, क्योंकि कहा है :—

राजा एक बार कहते हैं, साधु एक बार ही आदेश देते हैं। इसी तरह कन्यादान भी एक ही बार किया जाता है, क्यों कि ये तीनों एक ही बार होते हैं।"

[ગુ૦] આ સાંભળીને રાજા પોતાના મહેલે ચાલ્યો ગયો અને તે બધું ધન શ્રીમતીનો પિતા લઇ ગયો. ત્યારપછી ઘણે વખતે જ્યારે શ્રીમતી વિવાહને યોગ્ય થઇ ત્યારે ઘણી જગ્યાએ શ્રીમતીના પિતાએ તેને લાયક વરની તપાસ ચલાવી. આ જાણી શ્રીમતીએ પોતાના પિતાને કહ્યું: 'પિતાજી! જે મહર્ષિને હું રમત રમવામાં વરી ચૂકી છું તે જ મારા પતિ થશે, કારણ કે તેને વરવા માટે દેવતાએ ધન આપ્યું છે અને તે તમે લાવ્યા છો, તે વખતે આપની પણ આમાં સંમતિ હતી. આવી રીતે એકવાર એકને કન્યાદાન કરવાની કલ્પના કરીને હવે આપ બીજા વરને મને આપવા ઇચ્છો છો તે યોગ્ય નથી. કહ્યું છે કે-

" રાજા એક વાર જ આજ્ઞા આપે છે, સાધુ એકવાર જ ઉપદેશ આપે છે અને એ પ્રમાણે કન્યાદાન પણ એક જ વાર દેવાય છે-આ ત્રણે એક જ વાર થાય છે."

[सं०] एतत् श्रुत्वा श्रेष्ठ्युचे स तु भ्रमर इव एकत्र नावतिष्ठतेऽतः कथं प्राप्यते पुनस्तत्रायास्यति न वा आयातोऽपि कथं ज्ञायते, किं तस्याभिज्ञानं? तदा श्रीमत्या उक्तं हे तात! मया तद्दिने गर्जितभीतया तच्चरणे विलग्नयाभिज्ञानं दृष्टमस्ति तस्मादतः परं तथा कुरु यथा प्रतिदिनं आयातश्च सर्वानपि साधून् पश्यामि। श्रेष्ठ्युवाच, इह पत्तने ये केऽपि महर्षयः समायान्ति तेभ्यस्त्वं प्रत्यहं स्वयं भिक्षां देहि येन सर्वेषां दर्शनं स्यात्। ततः सापि प्रत्यहं तथैव चक्रे। तल्लक्षणं दिदृक्षमाणा च मुनीनां चरणानवन्दत।

[हिन्दी] यह सुनकर सेठने कहा, साधु तो भ्रमर की तरह एक स्थान पर ठहरता नहीं है, सो वह मुनि वापिस यहां आवे या न आवे इसका पता कैसे चले? उसकी पहिचान भी क्या हैं? तब श्रीमती नें कहा हे पिताजी! उस दिन गर्जन के साथ जब बिजली चमकी तब उस मुनि के चरणों में लग्न और डरी हुई मैनें बिजली के प्रकाश में कुछ पहिचान के चिन्ह देखे हैं। अतः अब से ऐसा करो कि मैं प्रतिदिन आने जाने वाले साधुओं का दर्शन करूं। सेठनें कहा "इस शहर में जो कोई भी महर्षि आवे उनको प्रतिदिन भिक्षा दो जिससे सब के दर्शन हो। अब श्रीमतीनें प्रतिदिन सेठ के कहने के अनुसार साधुओं को वहेराना शुरू किया। वह प्रत्येक साधु में उन लक्षणों को देखने की इच्छा से चरण वन्दन करती थी।

[ગુ૦] આ સાંભળીને શેઠે કહ્યું: "સાધુઓ તો ભ્રમરની જેમ એક ઠેકાણે રહેતા નથી તેથી તે મુનિ હવે અહીં આવે કે ન પણ આવે. તેનો પત્તો કેવી રીતે લાગે? તેની ઓળખાણ પણ શું છે?" ત્યારે શ્રીમતીએ કહ્યું કે 'પિતાજી! તે દિવસે ગર્જનાની સાથે જ્યારે વીજળીનો ચમત્કાર થયો અને હું ડરની મારી મુનિના ચરણોને વળગી પડી ત્યારે વીજળીના પ્રકાશમાં મેં તેમને ઓળખી શકાય તેવાં ચિહ્નો જોયાં છે તેથી હવે એવું કરો કે રોજ જે જે સાધુઓ આવે તેનાં હું દર્શન કરું." શેઠે કહ્યું: 'આ શહેરમાં જે કોઇ પણ મહર્ષિ આવે તેને રોજ તું ભિક્ષા આપ, જેથી તેનાં દર્શન થાય."

હવે શ્રીમતીએ શેઠના કહેવાથી રોજ સાધુઓને વહોરાવવાનું શરૂ કર્યું. તે પ્રત્યેક સાધુને તેનાં ચરણોમાં તે ચિહ્નો જોવાની ઇચ્છાથી વંદન કરતી હતી.

[सं०] अथ द्वादशवर्षे स महामुनिर्दिग्मूढः सन् तत्रागतस्तत्पदर्शनात्तेन-

लक्षितश्च तदा श्रीमती तमृषिमुवाच। तत्र देवकुले तदा यो मया वृतः स मम वल्लभ त्वमेवासि मद्भाग्यैरेवाधुनागतोऽसि। अथ मां मुग्धां त्यक्त्वा क्व यास्यसि। यदा त्वं दृष्टनष्टोऽभूत् तद्दिनादारभ्य मम हा दुःखेन कालोऽगमत् तस्मात्प्रसादं विधाय मामंगी कुरु। एवं स्थितेऽपि मामवमन्यसे तर्हि अग्निप्रवेशं कृत्वा तुभ्यं स्त्रीहत्यापातकं दास्ये।

[हिन्दी] इस तरह साधुओं की सेवा करते हुए श्रीमती को १२ वर्ष लग गये। इसी अवसर में आर्द्रकुमार मुनि विहार करते मार्ग भूल जाने से अथवा भाग्य-योग से वसन्तपुर नगर में आये। भूख और प्यास से पीडित होने से नगर में गोचरी को गये। "कर्म भोग कहीं छिपते नहीं है" अतः श्रीमती के भाग्योदय से वे मुनि श्रीमती के घर ही गोचरी हेतु गये। श्रीमतीने आदर सत्कार से उनके चरण पकड कर कहा, 'हे महाराज! आप कहां जा रहा हैं? बहुत दिनों से मैं भी आपकी राह देख रही हूं। आज आपको देखकर प्रसन्नता हुइ है। अब मैं आप को जाने न दूंगी। उस दिन देव मन्दिर में देव वाणी के समक्ष आपका—मेरा वरण हुआ था। तब आप पांव छुड़ा कर चले गये थे। अब मेरे भाग्य से ही पुनः आपके दर्शन हुए हैं। इस लिए मुझ मुग्धा को छोड कर आप न जावे। और मेरे साथ विवाह कर मुझे स्वीकार करें। अगर आप ऐसा नहीं करेंगे तो मैं अग्नि में जल कर मर जाऊंगी और आपको स्त्री हत्या का पातक लगेगा।

[ગુ૦] આ પ્રમાણે સાધુઓની સેવા કરતાં કરતાં બાર વર્ષ વહી ગયા. આ સમયે આર્દ્રકુમાર મુનિ વિહાર કરતા કરતા માર્ગ ભૂલી જવાથી અથવા તો ભાગ્યયોગથી વસંતપુર નગરમાં આવી ગયા. ભૂખ અને તરસથી વ્યાકુળ થયેલા તે શહેરમાં ગોચરી માટે ગયા. "કર્મભોગ છાનાં રહેતાં નથી." માટે શ્રીમતીના ભાગ્યોદયથી તે મુનિ તેના ઘરે જ ગોચરી માટે ગયા. શ્રીમતીએ આદર–સત્કારથી તેમને વહોરાવ્યું. છેવટે પાછા ફરતી વખતે મુનિને ઓળખી પણ લીધા. તેથી શ્રીમતીએ તેમનાં ચરણ પકડીને કહ્યું: 'હે મહારાજ! આપ ક્યાં જાઓ છો? ઘણા દિવસોથી હું તમારી વાટ જોઇ રહી છું. આજ આપને જોઇને પ્રસન્નતા થઇ. હવે હું આપને જવા નહીં દઉં. તે દિવસે દેવમંદિરમાં દેવવાણીની સાક્ષીએ મારૂં–તમારૂં વરણ થયું હતું. ને દિવસે તમે પગ છોડાવીને ચાલ્યા ગયા હતા. હવે મારા સદ્ભાગ્યે જ ફરીવાર આપનાં દર્શન થયાં છે. માટે હવે મુગ્ધાને છોડીને આપ ચાલ્યા ન જાઓ. મારી સાથે વિવાહ કરીને

મારો સ્વીકાર કરો. જો આપ એમ નહીં કરો તો હું અગ્નિમાં પડીને બળી મરીશ અને આપને સ્ત્રીહત્યાનું પાપ લાગશે."

[सं०] तदान्यैरपि तत्पित्रादिभिर्महाजनैर्विवाहाय अभ्यर्थितः स साधुर्व्रतारंभनिषेधकं तद्देवीवचनं सस्मार। ततस्तद्भोग्यकर्मोदयादृणमोक्षमिव कर्तुं तां श्रीमतीं पर्यणैषीत्। अथ श्रीमत्या सह चिरं भोगान् भुंजानस्य तस्य क्रमेण पुत्रः सञ्जातः। स च क्रमेण वर्धमानो राजशुक इव वक्तुमुल्लसज्जिह्वोऽभवत्। तत्पुत्रे संजाते सति स आर्द्रकुमारो हर्षितः सन् श्रीमतीं प्रोवाच अतः परं ते पुत्रः सहायोऽस्तु अहं प्रव्रजामि। तदा बुद्धिनिधिः श्रीमती सुतं प्रत्ययसरं ज्ञापयितुं तूलपूणिकासहितं तर्कुमादायोपाविशत्।

[हिन्दी] तब दूसरे महाजन व (श्रीमती के) पिता आदि नें मुनि से विवाह के लिये प्रार्थना की। आर्द्रकुमार को देवी के वचन स्मरण हो आये जो प्रव्रज्या लेने के पूर्व उसने निषेध रूपसें कहे थे। उन्होंनें विचारा कि भोग्यकर्म अवशिष्ट हैं, उन्हें भोग बिना ऋणमोक्ष नहीं होगा। अतः उन्होंने विवाह की स्वीकृति दे दी। साधु वेश और ओघा मुहपत्ती आदि बांधकर खूंटी पर (टांग दिये) रख दिये।"

अब श्रीमती से विवाह कर वे विषय सुखका आनन्द लेने लगे। इस तरह समय बीत गया कालक्रम से श्रीमती के एक पुत्र हुआ। वह पुत्र भी क्रम से बढ़ता हुआ राजशुक की तरह मधुर वाणी से वार्तालाप करने लगा। जब पुत्र ५ वर्ष का हो गया, तब आर्द्रकुमार नें विचार किया कि श्रीमती को पुत्र का आधार हो गया है, और मैंने भोगावली कर्म भी भोग लिये हैं, अतः अब दीक्षा लेना ठीक है। ऐसा विचार कर श्रीमती से कहा कि अब मैं दीक्षा लूंगा, तुम्हारे भी पुत्र का आधार हो गया है। तब बुद्धि के निधान वह श्रीमती अपने पुत्र को यह बात बताने के लिये रूई की पुनिया ले कर चरखा कातने बैठी।

[ગુ०] પછી બીજા સજ્જનો અને શ્રીમતીના પિતા વગેરેએ મુનિને વિવાહ કરી લેવાની પ્રાર્થના કરી. આર્દ્રકુમારને દીક્ષા લેતી વખતે દેવીએ નિષેધના રૂપમાં જે વચનો કહ્યાં હતાં તે યાદ આવ્યાં. તેમને વિચાર્યું કે ભોગકર્મ જે બાકી છે, તે ભોગવ્યા વિના ઋણમુક્ત નહીં થાય. માટે તેમણે વિવાહની સંમતિ આપી અને સાધુવેશ, ઓઘો અને મુહપત્તિ વગેરે બાંધીને ખીંટી પર ટાંગી દીધાં.

હવે શ્રીમતી સાથે વિવાહ કરીને તે [illegible] ભોગવવા લાગ્યા.

આ પ્રમાણે ઘણો વખત વીતી ગયો. જતે દિવસે શ્રીમતીને એક પુત્ર થયો. તે છોકરો પણ મોટો થતાં મધુર વાણીથી વાર્તાલાપ કરવા લાગ્યો. જ્યારે પુત્ર પાંચ વર્ષનો થયો ત્યારે આર્દ્રકુમારે વિચાર કર્યો કે હવે શ્રીમતીને પુત્રનો આધાર થઇ ગયો છે અને મેં પણ ભોગવવાનાં કર્મો ભોગવી લીધાં છે, માટે હવે દીક્ષા લેવી જોઇએ. એવો વિચાર કરીને શ્રીમતીને તેણે કહ્યું કે "હવે હું દીક્ષા લઇશ. તમારે પણ પુત્રનો આધાર થઇ ગયો છે."

ત્યારે બુદ્ધિશાળી એવી શ્રીમતી પોતાના પુત્રને આ હકીકત ઠસાવવાને માટે રૂની પૂણીઓ લઇને કાંતવા બેસી ગઈ.

[सं०] तदा तूलकर्तनक्रियां कुर्वाणां तां विलोक्य स बालकः पप्रच्छ, हे अम्ब! एतत्पामरलोकोचितं कर्म किं प्रारब्धं? सा प्रोचे हे पुत्र! तव पिता त्वां मां च त्यक्त्वा प्रव्रज्यार्थं गन्तुमना वर्तते। गते चास्मिन् पतिहीनाया मे तर्कुरेव शरणं तदा बालको बाल्यान्मन्मनाक्षरैरुवाच अहं बद्ध्वा धारयिष्यामि कथं मे पिता यास्यति? आर्द्रकुमारोऽपि तन्मधुरं बालवचोवृन्दं श्रुत्वा सुतस्नेहादेवमुवाच, हे पुत्र! यावद्भिस्तन्तुभिर्मे पादौ नद्धौ तावन्ति वर्षाणि पुनर्गृहे स्थास्यामि। गणयित्वा बंधनानि आच्छोटय।

[हिन्दी] तब माँ को चरखा कांतती देखकर बालकने पूछाः हे माता य पामर जातियो के योग्य कर्म तूने क्यों शुरू किया हैं? वह बोली "हे पुत्र तुम्हारे पिता मुझे छोड़ कर दीक्षा लेने का विचार करते हैं। इनके चले जाने प पति हीन मेरे लिए चरखा कांतना ही अवशेष रहेगा। तब पुत्रने कहा माँ मु कोकडी दे सो मैं अपने पिताजी को ऐसा बांध दूँ कि वे कहीं भी न जावेंगे आर्द्रकुमारने भी ऐसे मधुर वचनो को सुना और उन्हे मोह उत्पन्न हो गया। "वह विचारने लगा 'अहो! मोह की गति कैसी अद्भुत हैं जिसका कहीं पार नहीं हैं।" उसने बालक से कहा, हे पुत्र! जितने तन्तुओ से तुम मेरे पैर बांधोगे उतने वर्ष में फिर घर मे रहूँगा अतः गिन कर आँटे देना।

[ગુ૦] માને રેંટિયો કાંતતી જોઇને બાળકે પૂછ્યુંઃ 'માતા! આ હલકી જાતિઓને યોગ્ય કામ કરવાનું તેં કેમ શરુ કર્યું છે?' ત્યારે તે બોલીઃ હે પુત્ર! તારા પિતા તને અને મને છોડીને દીક્ષા લેવાનો વિચાર

કરે છે. તેમના ચાલ્યા ગયા પછી પતિ વિનાની એવી મારે માટે રેંટિયો કાંતવાનું જ બાકી રહેશે.” ત્યારે પુત્રે કહ્યું: મા, તું મને કાંતેલા સુતરની કોકડી દે, જેથી હું એનાથી મારા પિતાજીને એવા બાંધી લઉં કે તે ક્યાંય જઇ ન શકે. “ આર્દ્રકુમારને પણ બાળકનાં આવાં વચનો સાંભળીને મોહ ઉત્પન્ન થઇ ગયો. તે વિચારવા લાગ્યોઃ અહો, મોહની ગતિ એવી અદ્ભુત છે કે જેનો પાર નથી. તેણે બાળકને કહ્યું: “ હે પુત્ર ! જેટલા તારથી તું મારા પગ બાંધીશ એટલા વર્ષ હું ઘર બહાર નહીં જાઉં; માટે ગણીને આંટા દેજે. ”

[सं०] ततो गणिता द्वादश बंधा अभवन्। तेन स द्वादश वर्षाणि पुनर्गृहे स्थास्ये इत्युक्त्वा अवाहयत्। अथ प्रतिज्ञापूर्णीभवनानन्तरं स वैराग्यपूर्णमानसो रात्रेः पश्चिमे प्रहरे इत्यचिन्तयत् मया प्राग्भवे मनसैव व्रतं भग्नं तेनाहमनार्यत्वं प्राप्तोस्मि अत्र भवे पुनर्व्रतं गृहीत्वा मुक्तमतः का गतिर्मे भविष्यति इदानीमपि प्रव्रज्यां गृहीत्वा तपसा आत्मानं शोधयामि इति विचिन्त्य प्रातःकाले श्रीमतीं पत्नीं स्वसुतं च संभाष्य तदनुमतिं च लात्वा साधुलिङ्गं समादाय निर्ममत्वो गृहान्निर्ययौ।

[हिन्दी] अब बालक ने आर्द्रकुमार के पैरो में आंटे देने शुरु किये तब आंटे देते देते दो आंटे छूट गये। आर्द्रकुमार ने आँटे गिने तो बारह निकले इसने बारह वर्ष तक घर में फिर रहूंगा ऐसा कहकर उस बालक को विदा किया [किसी २ पुस्तक में लिखा हैं कि वह बालक सूत की [कोकडी] गुंडी लेकर वहां गया जहां आर्द्रकुमार सोये हुए थे। उसने वहां जा कर आर्द्रकुमार के दोनों पांव शामिल कर बांधे और वह बोला. मां ! किसी तरह की चिन्ता मत करना। मैंने इनको इतना मजबूत बांधा है कि अब ये कहीं भी नही जायेंगे। यह वचन सुनकर आर्द्र-कुमार ने विचारा कि जितने आंटे यह बालक बांधता जाय बीच में न टूटें उतने वर्ष मैं फिर घर में रहूँगा। ऐसा विचार किया ही था कि तार टूट गया। तब वह लडका दौडकर माता के पास गया और आर्द्रकुमार ने तार गिनें तो वे बारह थें। अतः बारह वर्ष तक घर में रहकर गृहस्थ धर्म चलाया।

जब प्रतिज्ञा पूर्ण हुई यह जानकर एक बार रात्री के पीछले प्रहर में निद्रा भंग होने से आर्द्रकुमार के मन में विचार उठा कि देखो। मैंने चारित्ररूपी रत्न को संसाररूपी समुद्र में छोड दिया. अतः मैंने पूर्व भव में इसके [illegible]

दोष लगाया जिसके फल स्वरूप मेरा जन्म अनार्यदेश में हुआ। और अब भी इस भव में व्रत लेकर तपस्या भंग की इससे कोन जाने मेरी कैसी गति होगी।

अब मैं पुनः दीक्षा अंगीकार करके निरतिचार चारित्र का पालन करुंगा तभी मेरी आत्मा का कल्याण होगा। अगर इस बात फिर चूक गया तो मेरा पता लगाना भी मुश्किल होगा। ऐसा विचार कर प्रातःकाल होते ही तत्काल स्व स्त्री श्रीमती की तथा पुत्र की आज्ञा लेकर साधुपणा का महाव्रत अंगीकार करके विहार किया।

[ગુ૦] હવે બાળકે આર્દ્રકુમારના પગ ફરતા સુતરના આંટા દેવા શરુ કર્યા. આર્દ્રકુમારે આંટા ગણ્યા તો તે બાર નીકળ્યા. આથી 'બાર વર્ષ સુધી ઘરમાં હજી રહીશ' એમ કહીને બાળકને વિદાય કર્યો. (કોઇ કોઇ પુસ્તકમાં લખ્યું છે કે તે બાળક સુતરની કોકડી લઇને તેના પિતા સૂતા હતા ત્યાં ગયો. તેણે ત્યાં જઇને આર્દ્રકુમારના બન્ને પગ ભેગા કરીને બાંધ્યા અને બોલ્યોઃ 'મા, હવે કોઇ જાતની ચિંતા કરીશ નહિ. મેં એમના પગ એવા મજબૂત બાંધ્યા છે કે તેઓ હવે કયાંય પણ જઇ શકશે નહીં. આ વચનો સાંભળીને આર્દ્રકુમારે વિચાર્યું કે, આ બાળક દે છે તે આંટા વચ્ચે ન તુટે ત્યાં સુધી હું ઘરમાં રહીશ. એવો વિચાર જ્યાં કર્યો ત્યાં જ તાર તુટી ગયો. ત્યારે તે છોકરો દોડીને તેની માતા પાસે જતો રહ્યો. આર્દ્રકુમારે તાર ગણ્યા તો બાર હતા. આથી બાર વર્ષ સુધી ઘરમાં રહીને તેણે ગૃહસ્થધર્મ ચલાવ્યો.)

હવે પ્રતિજ્ઞા પૂરી થઇ એવું જાણીને એકવાર રાતના છેલ્લા પ્રહરમાં નિદ્રાભંગ થતાં આર્દ્રકુમારના મનમાં વિચાર ઊઠયોઃ "મેં મારી ચારિત્રરૂપી નાવને સંસારરૂપી સમુદ્રમાં છોડી દીધી, તેથી મારા જેવો મૂર્ખ કોણ હશે? હાય! હાય! મેં પૂર્વભવમાં મારા ચારિત્રવ્રતમાં મનથી દોષ કર્યો જેના ફળ રૂપે મારો જન્મ અનાર્યદેશમાં થયો. વળી આ ભવમાં પણ વ્રત લઇને તપસ્યાનો ભંગ કર્યો; હવે કોણ જાણે મારી કેવીયે ગતિ થશે!" હવે હું ફરીવાર દીક્ષા ગ્રહણ કરીને નિરતિચાર ચારિત્રનું પાલન કરીશઃ તો જ મારા આત્માનું કલ્યાણ થશે. જો આ વખતે પણ ચૂકી જઇશ તો મારો પત્તો લાગવો પણ કઠણ થઇ પડશે."

આવો વિચાર કરીને પ્રાતઃકાળ થતાં તરત જ પોતાની સ્ત્રી શ્રીમતી

તથા પુત્રની રજા લઇને તથા ઓઘો, મુહપત્તિ વગેરે સામાન લઇ સાધુપણાનું મહાવ્રત અંગીકાર કરીને વિહાર કરી ગયો.

[सं०] अथ राजगृहं व्रजन् अन्तराले चौर्यवृत्तिं कुर्वाणां स्व सामन्त–पञ्चशतीं ददर्श। तैरप्युपलक्ष्य भक्त्या वन्दितः, स साधुस्तानवादीत् युष्माभिर्महापापहेतुरेषाजीविका किमादृताः ? तैरुक्तं हे प्रभो! अस्मान् वञ्चयित्वा यदा त्वं पलायिष्टास्तदादितो लज्जया भूपतेर्मुखं न दर्शयामः। तवैवान्वेषणे लग्नाः पृथ्वीं भ्रमन्तश्चौर्यवृत्त्यैव जीवामः। मुनिरुवाच अयुक्ता वृत्तिर्भवद्भिरादृता, केनापि पुण्ययोगेनेदं मानुष्यकं प्राप्य स्वर्गापवर्गप्रदो धर्म एव सेव्यो, हिंसासत्यचौर्याब्रह्मपरीग्रहपरित्यागः कर्तव्यः॥

[हिन्दी] इस तरह ग्राम से ग्राम विहार करते २ वह आर्द्रकुमार राजगृही में पहुंचे। इसी बीच रास्ते में उन्हें चौर्यवृत्ति करके जीवन यापन करते हुए अपने पांचसौ सामन्त दिखाई दिये। सामन्तों ने भी आर्द्रकुमार को पहचानकर भक्ति से वन्दना की। तब साधु रूप आर्द्रकुमारने उनसे कहा, तुम लोग महापाप कर-आजीविका क्यों स्वीकारा ? उसने कहा "हे प्रभो! आप तो हमें ठगकर भग गये तब से लेकर आज तक हम लज्जा के कारण राजाको मुख न दिखा सके और आपको पृथ्वीतल पर ढुंढते हुए इस चौर्यवृत्ति से जीविका चला रहे हैं।" यह सुन मुनीने कहा, हे देवप्रियो! उदर पूर्ति के निमित्त ऐसे कृत्य करने तुम्हारे लिए शोभाजनक नहीं है। किसी अपूर्व पुण्य के योग से मनुष्य जन्म मिलता है। यह जन्म प्राप्त कर मानव को स्वर्ग एवं मोक्ष के देने वाले धर्म की सेवना करना चाहिये। अतः हिंसा, असत्य, चोरी, अब्रह्म–परिग्रहका परित्याग करना चाहिये।

આ સાંભળીને મુનિએ કહ્યું: 'હે દેવપ્રિયો! પેટ ભરવા માટે આવાં કૃત્યો કરવાં એ તમને શોભારૂપ નથી કોઇ અપૂર્વ પુણ્યના યોગથી આપણને આ મનુષ્યજન્મ મળ્યો છે. આ જન્મ પ્રાપ્ત કરીને માણસે સ્વર્ગ અને મોક્ષ આપવાવાળા ધર્મનું સેવન કરવું જોઇએ. અને હિંસા, અસત્ય, ચોરી, અબ્રહ્મ અને પરિગ્રહનો ત્યાગ કરવો જોઇએ.

[सं०] हे भद्रा ! यूयं स्वामिभक्ताः स्थ। प्राग्वदहं युष्माकं स्वामी, अतो ममैव मार्गं प्रपद्यध्वं। ततस्ते प्रोचुः पूर्वं त्वमस्माकं स्वाम्येवाभूः सांप्रतं तु गुरुरप्यसि यतस्त्वयास्मभ्यं धर्मो ज्ञापितोऽयास्मान् दीक्षयानुगृहाण। तत आर्द्रकुमारस्तान् प्रव्रज्य तैः सहितः श्री महावीरं वन्दितुं राजगृहाभिमुखं ययौ। मार्गं गच्छतस्तस्य गोशालो ऽभिमुखो मिलितो विवादं कर्त्तुं प्रवृत्तः। भूचराः खेचराश्चापि सहस्रशः आयाताः कौतुकार्थिनस्तस्थुः।

[हिन्दी] हे भद्रा! तुम स्वामी भक्त हो। पहिले की तरह मैं तुम्हारा स्वामी हूं, अतः मेरे ही मार्ग पर चलो, "दीक्षा अंगीकार करो इससे तुम्हारा यह भव और परभव दोंनो सुधर जायेंगे"। तब वे बोले पहिले आप ही हमारें स्वामी थे और अब गुरू हैं अतः आपने हमें धर्म का प्रतिबोध दिया है कृपा करके हमें दीक्षित किजिये। तब आर्द्रकुमारने उन सबको दीक्षा दी। फिर उन सबके साथ श्री महावीर स्वामी की वन्दना करने के लिए राजगृही की तरफ चले। रास्ते में उन्हे मंखली पुत्र गोशाल मिला। वह विवाद करने को तत्पर हुआ, "गोशाल ने सोचा कि अगर मैं विवाद करके इनको मेरे मत में ले लूं तो मेरे धर्म की वृद्धि होगी।" विवाद प्रवृत हुआ तब वहां आसपास के लोग, भूचर–खेचर आदि हजारों मानव कौतुक देखने को इकट्ठे हो गये।

[ગુ૦] હે ભદ્ર લોકો! તમે સ્વામીભક્ત છો. પહેલાંની જેમ હું તમારો સ્વામી છું. માટે તમે મારા જ બતાવેલા માર્ગ પર ચાલો. દીક્ષા અંગીકાર કરો. એનાથી તમારો આ ભવ તથા પરભવ બંન્ને સુધરી જશે." ત્યારે તેઓ બોલ્યા: 'પહેલાં આપ જ અમારા સ્વામી હતા; હવે અમારા ગુરૂ છો, તમે અમને ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો છે તો હવે કૃપા કરીને અમને દીક્ષા આપો" ત્યારે આર્દ્રકુમારે તે સૌને દીક્ષા આપી. પછી તે સૌની સાથે મહાવીરસ્વામીને વંદના કરવા માટે

રાજગૃહી તરફ ચાલ્યા. રસ્તામાં તેમને મંખલીપુત્ર ગોશાલક મળ્યો. તે વિવાદ કરવા તૈયાર થયો. ગોશાલે વિચાર્યું કે જો હું વિવાદ કરી તેને મારા મતમાં લઇ લઉં તો મારા ધર્મની વૃદ્ધિ થાય. આ વિવાદ થવાની તયારી થઇ ત્યારે ત્યાં આસપાસના લોકો અને ભૂચર-ખેચર પ્રાણીઓ વગેરે સૌ કોઇ જોવા માટે એકઠાં થઇ ગયાં.

[सं०] अथ गोशालोऽवदत् ‘भवतां तपःकष्टं वृथैव, यतः शुभाशुभफलनां कारणं नियतिरेवास्ति। ततो मुनिरवादीत् पौरुषमपि कारणं मन्यस्व। यदि सर्वत्र नियतिमेव कारणं मन्यसे तर्हि अभीष्टसिद्ध्यर्थं सर्वाः क्रियाः वृथा प्रसज्येरन्। तथाहि हे नियतिवादिन्! सर्वदा स्वस्थाने एव किं न तिष्ठसि? भोजनावसरे च भोजनाद्यर्थं च कथमुद्यमं करोषि? एवं स्वार्थसिद्धये नियतिवत्पौरुषमपि साधयस्मि। अर्थसिद्धौ नियतेरपि पौरुषमाधिक्यं भजते।

[हिन्दी] तब गोशाले ने कहा, हे आर्द्रकुमार ! [“महावीर स्वामी में बड़ा फरक आया है, पहिले तो ये साधु धर्म को ठीक से पालते थे अब तो ढोंगी हो गये हैं पहिले वे अकेले रहते थे, किसी से बोलते नहीं थे, अब तो परिषद (समाज) इकट्ठी करते हैं।” यह सुनकर मुनिने कहा, “अरे गोशाल ! ऐसा मत कहो. पहिले तो भगवान छद्मस्थ थें और अब केवली हो गये हैं. तीर्थंकर नामकर्म उदय हुए हैं. अतः सभा में बैठकर देशना देते हैं. और महान् उपकार करते हैं, भाव से तो वे अब भी अकेले ही हैं। तूं बडे पुरुषोंके लिए अवर्णवाद मत बोल।”] तब गोशाल ने कहा कि अरे ! आर्द्रकुमार ! तुम वृथा ही तपस्या का कष्ट उठाते हो क्योंकि शुभाशुभ फल को देने वाली नियति (होनहार) ही है। अतः होनहार को मान कर चलो तो सारी क्रियाओं के कष्ट से मुक्त हो जाओगे। उद्यम का क्या काम है। तब मुनि ने कहा कि हे नियतिवादी ! अगर तुम उद्यम को नहीं मानकर सर्वत्र नियति को ही मानते हो तो अपनी अभीष्ट सिद्धि के लिए सारी क्रियाएँ फजूल ही करते हो “तुम गाँव में गोचरी को क्यों जाते हो” सर्वदा एक ही स्थान पर रहो, नहीं तो तुम भोजन के समय मुख मे रोटी पहुंचाने का उद्यम क्यों करते हो रोटी का कौर मुख मे क्यों चबाते हो. अपने आप बिना उद्यम के पेट में जायगा. फिर तुमने यह समाज मे भेजन क्यों लगाया है क्योंकि होनहार तो होगी ही !

છે? પહેલાં તો તેઓ સાધુ ધર્મને બરાબર પાળતા હતા અને હવે તો ઢોંગી થઇ ગયા છે. પહેલાં તેઓ એકલા રહેતા હતા, કોઇની સાથે બોલતા નહોતા અને હવે તો સભાઓ ભરે છે. આ સાંભળીને મુનિએ કહ્યું: 'અરે ગોશાલ, એવું ન કહો. પહેલાં તો ભગવાન છદ્મસ્થ હતા અને હવે તો કેવળી થઇ ગયા છે. તીર્થંકર નામકર્મ ઉદય થયું છે માટે તેઓ સભામાં બેસીને ઉપદેશ આપે છે, અને લોકો ઉપર મહાન ઉપકાર કરે છે. ભાવથી તો હજી પણ તેઓ એકલા જ છે. તું મહા-પુરુષોને માટે અવર્ણવાદ ન બોલ.]

ત્યારે ગોશાલે કહ્યું: 'આર્દ્રકુમાર, તમે નકામા તપસ્યાનું કષ્ટ ઉઠાવો છો; કારણ કે શુભાશુભ ફળને દેવાવાળી નિયતિ જ છે. માટે નિયતિને માનીને જ ચાલો તો બધાં દુઃખોથી મુક્ત થઈ જશો. ઉદ્યમ કરવાનું શું પ્રયોજન છે?'

ત્યારે મુનિએ કહ્યું કે હે નિયતિવાદી! તમે ઉદ્યમને ન માનતાં બધે ભાગ્યને જ માનો છો તો પછી તમારી ઇચ્છેલી વસ્તુઓ મેળવવા માટે પ્રયત્નો નકામા જ કરો છો. તમે ગામમાં ગોચરી માટે શા માટે જાઓ છો? હંમેશાં એક જ સ્થાન પર કેમ બેઠા રહેતા નથી? ભોજન કરતી વખતે મોઢામાં રોટલી પહોંચાડવાનો પ્રયત્ન શા માટે કરો છો? રોટલીનો કોળિયો મોઢામાં શા માટે ચાવો છો? પોતાની મેળે જ પ્રયત્ન કર્યા સિવાય પેટ ભરાઇ જશે. વળી તમે આ તમારું માથું શા માટે મૂંડાવ્યું છે? થવાનું છે તે તો થશે જ.

[हिन्दी] अतः स्वार्थसिद्धि के लिए नियति की अपेक्षा उद्यम करना ठीक है। विना महेनत के कोई काम नहीं बनता, जिस काम को हम कर ले उसका फल ही नियति हैं। वह कार्य भी उद्योग से उत्पन्न होता हैं। जैसा २ शुभाशुभ कर्म बन्धन होता है उसी के अनुसार पाप और पुण्य का उदय होता हैं। ये कर्म ही आश्रव तथा संवर के कारण बनकर बन्धते हैं, अगर ऐसा नहीं तो 'सो जाना, बैठना, चलना, हंसना' इत्यादि क्रियाओं का नाश हो जायेगा। अतः नियति से भी उद्यम बलवान हैं ऐसा मानना चाहिये।"

[ગુ૦] માટે, સ્વાર્થસિદ્ધિને માટે ભાગ્યની ઉપર આધાર રાખવા કરતાં ઉદ્યમ કરવો જ ઠીક છે. વિના પ્રયત્ન કોઇ કામ થતું નથી. આપણે

જે કામ કરીએ તેનું ફળ, એ જ ભાગ્ય છે. તે કામ પણ ઉદ્યોગથી જ ઉત્પન્ન થાય છે. જેમ જેમ શુભાશુભ કર્મનું બંધન થતું જાય છે તેમ તેમ પાપ અને પુણ્યનો ઉદય થાય છે. આ કર્મો જ આશ્રવ અને સંવરનાં કારણ થઇને બંધન બાંધે છે. જો એમ ન હોય તો સૂવું, બેસવું, ચાલવું, હસવું વગેરે ક્રિયાઓનો નાશ થઇ જાય. માટે ભાગ્ય કરતાં પણ ઉદ્યમ બળવાન છે, એમ માનવું જોઇએ.

[मं०] तथाहि-आकाशात्पानीयं पततित परं भूखननादपि तद्भवेत। ततो नियतिर्बलीयसी परं नियतेरपि पौरुषं बलीयः एवं स मुनिर्गोशालं निरुत्तरीचक्रे तदा जय जय शब्दं कुर्वद्भिर्लोकैः एवं खेचरैश्च तस्य महामुनेर्बह्वी प्रशंसा कृता। तत आर्द्रऋषिर्हस्ति—तापसाश्रमसमीपे आययौ तत्रस्थास्तापसा एकं महान्तं हस्तिनं हत्वा तन्मांसं भुञ्जाना बहून् दिवसान् व्यतीयन्ति। ते चैवमूचुः एकस्यैव हस्तिनो हननं वरम्, यत एकजीवघातेन भूयान् कालोऽतिगम्यते। मृगतित्तिरमत्स्याद्यैर्धान्यैश्च बहूनि न तथा 'तस्मात्तद्भक्षणं न युक्तं बहुपापसद्भावात्'

[हिन्दी] देखो! आकाश से भी जल गिरता है परन्तु पृथ्वी खोदने से उसमें से भी जल प्राप्त होता है, यह ठीक है कि नियति बलवान है फिर भी नियति से पौरुष बलवान है, इस तरह की अनेकानेक युक्तियों से आर्द्रऋषि ने गोशाल को निरुत्तर कर दिया तब आकाश से जय जयकार हुआ और सुनाई दिया कि "आर्द्रकुमार मुनि जीते और गोशाल हारा" तब वहां उपस्थित सभी लोगोंने मुनि की खूब प्रशंसा की। इस तरह गोशाल को हरा कर मुनी हस्ति तापस के आश्रम (मठ) के पास आये। ये हस्ती तापस इस मत की प्ररूपणा कर रहे थे कि धान्य आदि में हजारों कणों मे हजारों जीव होते हैं उन्हे भक्षण करने से हजारों अनेकों जीवों की हत्या का पाप लगता है। इसमें तो यह अच्छा है कि एक हाथी को मारकर खा ले तो एक जीव हत्या का ही पाप लगेगा। इस तरह से अहिंसा की उनकी प्ररूपणा थी। वे कहते थे कि मृग, तीतर, मत्स्य आदि धान्य आदिका भक्षण करना ठीक नहीं है क्योंकि इसमें बहुत पाप लगता है।

પ્રયુક્તિવાળી દલીલોથી આર્દ્રઋષિએ ગોશાલને નિરુત્તર કરી દીધો, ત્યારે આકાશમાંથી જય જયકાર થયો અને સંભળાયું કે "આર્દ્રકુમાર મુનિ જીત્યા અને ગોશાલ હાર્યા." ત્યારે ત્યાં હાજર રહેલ સ્ત્રીવર્ગે મુનિની ઘણી પ્રશંસા કરી. આ પ્રમાણે ગોશાલને હરાવીને મુનિ હસ્તિ તાપસના આશ્રમે આવ્યા. આ હસ્તિ તાપસ એવા મતનો પ્રચાર કરતા કે અનાજના હજારો કણોમાં હજારો જીવો હોય છે. તેનું ભક્ષણ કરવાથી હજારો જીવોની હત્યા કરવાનું પાપ લાગે છે. એના કરતાં તો એક હાથીને મારીને ખાઇ લઇએ તો એક જ જીવની હત્યા કરવાનું પાપ લાગે. આવી રીતની અહિંસાનો તે પ્રચાર કરતો હતો. તેઓ કહેતા કે હરણ, તેતર, માછલાં વગેરે મારવાં અને અનાજનું ભક્ષણ કરવું એ બરાબર નથી, કારણ કે એમાં ઘણું પાપ લાગે છે."

[સં०] तदा च ते मिथ्याधर्मनिष्ठास्तपस्विनो मारणार्थमेकं महामतङ्गजं बबन्धुः। यत्र शृंखलबद्धः स गज आसीत्तेनैव मार्गेण करुणानिधिः स महर्षिर्जगाम। तदा स हस्ती मुनिपञ्चशतीयुतं बहुभिर्जनैर्वन्द्यमानं तं महर्षिं दृष्ट्वा लघुकर्मत्वादित्यचिन्तयत्। अहमप्येतं मुनिं वन्देयं यदि बद्धो न भवेयम्, बद्धस्तु किं कुर्याम्? एवं चिन्तयतस्तस्य महर्षेर्दर्शनात्सद्योऽयःशृंखला व्यशीर्यत। अथ स हस्ती निरर्गलः सन् तं मुनिं वन्दितुमभ्यागात् तदा लोका एष मुनिर्हतो हत इति ब्रुवाणाः पलायांचक्रिरे।

[हिन्दी] इस तरह यह मुनी हाथी को मारने से 'हस्तीतापस' ऐसा विख्यात हुआ। एक वार मिथ्याधर्म निष्ठा में निमग्न उस 'हस्ती तापस' ने एक जवान हाथी भक्षण करने के लिए बांध कर रखा। इधर आर्द्रकुमार पांचसौ मुनियों समेत उधर से जा रहे थे उस हाथी के लघु कर्म अवशिष्ट थे अतः उस हाथी ने विचार किया कि मैं अगर बन्धन में न होता ऐसे भव्य मुनीका वन्दन अवश्य करता। अब बन्धन में पडा हुआ हूं अतः क्या करूं? इस तरह वह चिन्तना कर रहा था की उसकी लोह शृंखलाएं टूट गयी। अब हाथी शृंखला रहित हुआ, वह मुनीराज को नमस्कार करने के लिए आया। तब आसपास के लोग परस्पर यह कहते हुए भागने लगें कि यह हाथी आज मुनीराज को मारेगा।

[ગુ०] આ પ્રમાણે આ મુનિ હાથીને મારવાનો ઉપદેશ કરતા હતા તેથી "હસ્તિ તાપસ" ના નામની પ્રખ્યાત થયા હતા. એક વાર મિથ્યા

ધર્મનિષ્ઠામાં નિમગ્ન થયેલા તે હસ્તિ તાપસે એક જુવાન હાથીને મારીને ખાવા માટે બાંધીને રાખ્યો હતો. આ બાજુ આર્દ્રકુમાર પાંચસો મુનિઓ સાથે ત્યાંથી જઈ રહ્યા હતા. હાથીના લઘુકર્મ ભોગવવાં બાકી હતાં તેથી તે હાથીએ વિચાર કર્યો કે જો હું બંધનમાં ન હોત તો આવા ભવ્ય મુનિને જરૂર વંદન કરત. પણ બંધનમાં પડ્યો છું એટલે શું થાય ? આવી રીતે તે વિચાર કરતો હતો ત્યાં તેની લોઢાની સાંકળો તૂટી ગઇ. હાથી જ્યારે મુક્ત થયો અને મુનિરાજને વંદન કરવા માટે આવ્યો, ત્યારે આજુબાજુના લોકો અંદર અંદર એમ કહેતા કહેતા ભાગવા લાગ્યા કે જરૂર આ હાથી મુનિરાજને મારી નાખશે.

[सं०] मुनिस्तथैव तस्थौ गजोपि नम्रीकृतकुम्भस्थलः सततं मुनिं नमति स्म. पुनः शुंडादण्डं प्रसार्य मुनिपादौ स्पृष्ट्वा परमं सुखं प्राप । ततः स गजः समुत्थाय भक्त्या मुनिं पश्यन् अव्याकुलः सन् अरण्यानीं प्रविवेश । तदत्यद्भुतं तत्प्रभावं दृष्ट्वातिरोषं प्राप्ताः ते तापसा अपि आर्द्रकुमारसाधुना प्रत्यबोध्यन्त । ततस्तेऽपि तापसाः श्री-वीरसमवसरणं गत्वा दीक्षां जगृहुः ।

[हिन्दी] मुनी आर्द्रकुमार उसी समय कायोत्सर्ग ध्यान में खड़े होगये । हाथी भी मुनियों के पास आकर अपना कुंभस्थल (मस्तक) नमाकर नमस्कार करके अपनी सूंड को लम्बी कर मुनिराज को वांदकर प्रसन्न हुआ । फिर वह हाथी वहां से उठकर प्रसन्न चित्त से जंगल में चला गया । इस अद्भुत चमत्कार को देखकर सभी कुपित वे तपस्वी मुनि के पास आकर वाद करने को तत्पर हुए और मुनि ने भी उन्हें हेतु, युक्ति, प्रमाण आदि से प्रतिबोध दिया । तदनन्तर वे सब तपस्वी श्री महावीर स्वामी के पास मुनि द्वारा भेजे गये । और वहां उन्होंने दीक्षा अंगीकार की।

ઓને મુનિએ મહાવીરસ્વામી પાસે મોકલ્યા. ત્યાં સૌએ દીક્ષા અંગીકાર કરી.

[सं०] अथ श्रेणिकराजाऽपि तथा गजमोक्षणं तापसप्रतिबोधं च श्रुत्वाभयकुमारयुक्तस्तत्रागात् । मुनिर्भक्त्या वंदमानं राजानं धर्मलाभाशिषं ददौ । अथ शुद्धभूतले आसीनं मुनिं राजा पप्रच्छ, हे भगवन् ! हस्तिमोक्षणान्मम महदाश्चर्यं समजनि । मुनिरुचे हे राजन् ! हस्तिमोक्षणं न दुष्करं किन्तु आमतन्तुपाशमोक्षणं मां दुष्करं प्रतिभासते। राज्ञा पृष्टं स्वामिन ! तत्कथं ? तदा मुनिः सकलामपि स्वां कथां कथयामास । तत आर्द्रकुमारोऽभयं भाषितवान् त्वं मम निष्कारणोपकारी धर्मबांधवोऽभूः । हे मित्र ! त्वत्प्रेषिताहत्प्रतिमादर्शनादहं जातिस्मरणं प्राप्य जिनधर्मानुरक्तोऽभूवम् ।

[हिन्दी] अब श्रेणिकराजा भी उसी तरह से हाथी का मोक्ष और तापसोंका प्रतिबोध सुनकर अभयकुमार के साथ मुनि (आर्द्रकुमार) का वन्दन करने आये। उन्होंने भक्ति युक्त चित्त से मुनि को वन्दन किया । मुनि ने उनको धर्मलाभ की आशीष दी। फिर शुद्ध भूतल पर बैठे मुनि को राजाने पूछा, "हे भगवन् ! हाथी के मोक्ष को सुनकर मुझे महान् आश्चर्य हुआ हैं। मुनि बोले, "हे राजा ! हाथी को छुड़ाने का कार्य इतना कठिन नहीं हैं जितना कि कच्चे सूत के तारों को छुडाना कठिन है। राजाने पूछा महाराज यह कैसे ? तब मुनि ने अपनी सारी कहानी कह सुनायी। फिर आर्द्रकुमार ने अभयकुमार से कहा, "आप मेरे विनाकारण के उपकार करने वाले धर्म भाई हो । हे मित्र ! तुम्हारे द्वारा भेजी गई जिन भगवान की प्रतिमा के दर्शन से ही मुझे पूर्वभवों का बोध हुआ और मैं जिन धर्म में अनुरक्त हुआ।

[ગુ૦] હવે શ્રેણિક રાજા પણ એ જ પ્રમાણે હાથીનો મોક્ષ તથા તપસ્વીઓનો ઉપદેશ સાંભળીને અભયકુમારની સાથે મુનિ આર્દ્રકુમારને વંદન કરવા આવ્યા. તેમણે ભક્તિયુક્ત ચિત્તથી મુનિને વંદન કર્યું. મુનિએ તેમને "ધર્મલાભ"ની આશિષ આપી. પછી શુદ્ધ ભૂમિ પર બેઠેલા મુનિને રાજાએ પૂછ્યું: 'હે ભગવન્! હાથીના મોક્ષ વિષે સાંભળીને મને ઘણું આશ્ચર્ય થયું છે. મુનિ બોલ્યા: 'હે રાજા, હાથીને છોડાવવાનું કામ એટલું કઠણ નથી એટલું કાચા સૂતરના તારોથી છૂટવું કઠણ છે.' રાજાએ પૂછ્યું: 'મહારાજ, એ કેવી રીતે ?' ત્યારે મુનિએ તેને પોતાની આખી કહાણી કહી સંભળાવી. પછી આર્દ્રકુમારે અભય-

કુમારે કહ્યું કે “ આપ મારા ઉપર વિનાકારણ ઉપકાર કરવાવાળા મારા ધર્મભાઇ છો. હે મિત્ર; તમે મોકલેલી જિન ભગવાનની પ્રતિમાના દર્શનથી જ મને પૂર્વભવનું જ્ઞાન થયું અને હું જિનધર્મમાં અનુરક્ત થયો.

[सं०] ईदृगोपायं विना मम जैनधर्मप्राप्तिः कुतः। अनार्यत्वमहापंके निमग्नोहं त्वयोद्धृतस्त्वत्प्रसादादेव च मे चारित्रावाप्तिर्जाता। ततः श्रेणिकाभयकुमारादयः सर्वेपि लोकास्तमृषिं वंदित्वा तुष्टमानसाः स्वस्थानं ययुः। ततो मुनी राजगृहपुराभ्यर्णे समवसृतं श्रीवीरस्वामिनमभिवंद्य तच्चरणकमलसेवया स्वकीयं जन्म सफलीकृत्य क्रमेणायुःक्षये शिवं प्राप। [इति श्री-जिनदर्शनमाहात्म्ये आर्द्रकुमारदृष्टान्तः]

[हिन्दी] इस तरह के उपाय के विना मुझे जैन धर्म की प्राप्ति कैसे होती। मैं अनार्यत्व के महान् कीचड़ में पडा हुआ था, आपने ही वहां से मेरा उद्धार किया. तुम्हारी कृपा से मुझे चारित्र की पुनः प्राप्ति हुई। इस तरह सारी कथा सुनकर श्रेणिक राजा और अभयकुमार आदि सब आनन्द को प्राप्त हुए, मुनि को वन्दन कर प्रसन्नचित्त से अपने २ स्थान को चले गये। तदन्तर स्वयं आर्द्रकुमार मुनि ने राज-गृही में जा कर महावीरस्वामी के चरणो मे वन्दन किया। उनके चरणों की सेवा से अपने जीवन को सफल बना कर क्रमशः उम्र के समाप्त होने पर मोक्ष को प्राप्त हुआ। (यह श्री जिनदर्शन माहात्म्य को बताने वाला आर्द्रकुमार का दृष्टान्त पूरा हुआ)

[ગુ૦] આ જાતના આપે કરેલા ઉપાય વિના મને જૈનધર્મની પ્રાપ્તિ કેવી રીતે થાત? હું અનાર્યત્વના મહાન કીચડમાં પડ્યો હતો. આપે જ ત્યાંથી મારો ઉદ્ધાર કર્યો છે. અને આપની જ કૃપાથી મને ચારિત્રની પુનઃ પ્રાપ્તિ થઇ છે.”

[શ્રી જિનદર્શન માહાત્મ્યને દર્શાવતું આર્દ્રકુમારનું દૃષ્ટાંત પૂરું થયું.]

विशेष :—

इस लिए हे भव्यो ! जो शुद्ध भावना से जिन भगवान की प्रतिमा का निरन्तर दर्शन करेगा वह आर्द्रकुमार की तरह अनन्तानन्त शाश्वत सुख को प्राप्त होगा।

जिनेश्वर भगवान् की प्रतिमाजी के दर्शन से और भी कई लोग प्रतिबोध को प्राप्त हुए हैं। इनमें "सिज्जंभव भट्ट" की कथा श्रोतव्य हैं:—

राजगृही नगरी में एक सिज्जंभव नाम का ब्राह्मण रहता था। वह वैसे तो पढा लिखा था परन्तु अज्ञान वश पाप दोष को नहीं जानता था। वह अपने धर्म को जानकर निरन्तर हवन किया करता था। एक बार अवसर देखकर जम्बूस्वामी के शिष्य प्रभवस्वामी ने विचार किया कि मेरे पाट पर बैठने योग्य कौन हैं? उन्होने श्रुत–बोध से यह बात समझ ली और सिज्जंभव ब्राह्मण को इसके योग्य समझा। अब सिज्जंभव को प्रतिबोध देना आवश्यक था। अतः उन्होनें अपने २ साधुओं को उस ब्राह्मण के घर भेजा और कहा कि तुम लोग उसके दरवाजे पर जा कर जोर से संस्कृत भाषा में "अहो कष्टमहोकष्टं तत्त्वं न ज्ञायते परं" ऐसा कहना। (अरे बडे दुःख की बात हैं की महान तत्त्व की वस्तु को नही जानता) इस तरह से साधु कह कर उसकें दरवाजे से वापस लौट आये। ब्राह्मण ने जब यह सुना तो उसे बहुत क्रोध आया। उसने कहा, कि मुझ से ज्यादा तत्त्व को जानने वाला कौन हैं? और वह क्रोधावेश में इन साधुओं के पिछे दौडा। वह वहां पहुंचा जहां प्रभवस्वामी विराजमान थें वहां उसनें प्रभवस्वामी से कहा "तत्त्व क्या वस्तु है?" "गुरू ने कहा, "जीवहत्या न करना, यही तत्त्व हैं, तब वह फिर बोला, "आप मुझे तत्त्व नही बताओं तो मैं इसी समय आपका सिर काट दूंगा।"

[ગુ૦] માટે હે ભવ્ય જીવો ! જે શુદ્ધ ભાવનાથી જિન ભગવાનની પ્રતિમાનું નિરંતર દર્શન કરશે તે આર્દ્રકુમારની જેમ અવિચલ અને અનંતાનંત શાશ્વત સુખને પામશે.

જિનેશ્વર ભગવાનની પ્રતિમાના દર્શનથી બીજા પણ ઘણા લોકોને પ્રતિબોધ થયો છે, જેમાં "સિજ્જંભવ ભટ્ટ"ની કથા સાંભળવા જેવી છે.

રાજગૃહી નગરીમાં એક સિજ્જંભવ નામનો બ્રાહ્મણ રહેતો હતો. તે આમ તો ભણેલો—ગણેલો હતો, પણ અજ્ઞાનવશ પાપદોષને જાણતો નહોતો. તે રોજ ધર્મ સમજીને હવનક્રિયા કર્યા કરતો હતો. એકવાર અવસર જોઈને જમ્બૂસ્વામીના શિષ્ય પ્રભવસ્વામીએ વિચાર કર્યો કે હવે મારી પાટ ઉપર બેસવાવાળો કોણ છે? તેમણે શ્રુતબોધથી આ વાત સમજી લીધી અને સિજ્જંભવ બ્રાહ્મણને તેણે યોગ્ય જાણ્યો. હવે સિજ્જંભવને ઉપદેશ દેવો જરૂરી હતો. તેથી તેમણે પોતાના બે સાધુઓને તે બ્રાહ્મણને ઘેર મોકલ્યા અને કહ્યું કે તમે લોકો તેના ઘરના દરવાજે જઈને જોરથી બૂમ પાડીને સંસ્કૃત ભાષામાં "अहो कष्टमहोकष्टं तत्त्वं न ज्ञायते परं" (અરે, દુઃખની વાત છે કે ખરા તત્ત્વની વસ્તુને કોઈ જાણતું નથી.) એમ કહેજો અને પછી ચાલ્યા આવજો. આ પ્રમાણે તે સાધુઓ કહીને તેના દરવાજેથી પાછા ચાલ્યા આવ્યા.

બ્રાહ્મણે જ્યારે આ સાંભળ્યું ત્યારે તેને ઘણો ક્રોધ આવ્યો. તેણે કહ્યું: 'મારા કરતાં તત્ત્વને વધારે જાણવાવાળો બીજો કોણ છે?' ક્રોધાવેશમાં આવીને તે સાધુઓની પાછળ દોડ્યો, અને જ્યાં પ્રભવસ્વામી બિરાજમાન હતા ત્યાં આવ્યો. તેણે સ્વામીને પૂછ્યું: "તત્ત્વ શું વસ્તુ છે?" ગુરુએ કહ્યું: 'જીવહત્યા ન કરવી એ જ ખરું તત્ત્વ છે.' [illegible] તેણે કહ્યું: 'તમે મને તત્ત્વ નહિ બતાવો તો આ જ ક્ષણે હું તમારું માથું ધડથી જુદું કરી નાખીશ.'

स्वीकार की। फिर गुरूजी के पास बारह अंग पढ़ें। गुरूने आचार्यपदवी से सिज्जंभव को अलंकृत किया। प्रभव स्वामी कालक्रम से समाधि लेकर देव लोक को प्राप्त हो गयें। इधर पीछे से उस गर्भवती स्रीके बालक उत्पन्न हुआ। उसका नाम "मनक" दिया गये। लडका धीरे धीरे आठ वर्ष का हुआ। एक दिन बालक 'मनक' अपने साथियों के साथ खेल रहा था तो कुछ साथी उससे लड़ पड़े। इन में से एक लड़के ने कहा! अरे बिना बाप के, तूं मुझे क्यों मारता हैं। यह बात सुनकर मनक माँ के पास आया, और बोला–माताजी! "मेरे पिता है या नही?" "माँ रोती हुई बोली, बेटा, बाप बिना बालक कैसे हो, "बालक बोला माँ! पिताजी कहां गये हैं? माँ बोली, बेटा! तूं जब गर्भ में था तब तुम्हारे पिताजी को एक जैन साधु ने भ्रम में डाल दिया और अपने साथ ले जा कर साधु बना दिया। अभी भी ऐसा सुना जाता हैं कि तुम्हारे पिता साधुओं के "मालिक" हैं।" "मनक ने जब यह सब सुना तों माता की आज्ञा लेकर वह पिता से मिलने के लिए निकला।

[ગુ૦] ત્યારે ગુરુએ કહ્યું: 'હે મૂર્ખ, તત્ત્વ તો તારે ઘેર જ યજ્ઞના સ્તંભની નીચે છે.' આટલું સાંભળતાં તરત જ, એજ પગે પાછો પોતાને ઘેર પહોંચ્યો. ઘેર આવ્યો અને તેણે યજ્ઞના થાંભલાને ઉખાડી નાખ્યો. તેની નીચેથી ભગવાન શ્રી શાન્તિનાથ સ્વામીની પ્રતિમા નીકળી, જેને જોઇને તેને ઘણું આશ્ચર્ય થયું. તે પાછો ગુરુજીની પાસે આવ્યો અને ગુરુજીને તે પ્રતિમા દેખાડી. ત્યારે ગુરુએ કહ્યું: જુઓ, જેવી શાન્ત મુદ્રા આ પ્રતિમાની છે તેવી શાન્ત મુદ્રામાં રહેવાનું તમે સ્વીકાર કરો તો તત્ત્વની પ્રાપ્તિ થાય. સિજ્જંભવે પ્રતિમાનું દર્શન શાન્તચિત્તથી કર્યું અને દર્શન કરતાં જ તેને પ્રતિબોધ (જ્ઞાન) થઇ ગયો. એનું મિથ્યાત્વ નષ્ટ થઇ ગયું. અને તે મિથ્યાત્વ છોડીને પોતાને ઘેર આવ્યો. એણે પોતાની ગર્ભવતી સ્રીને કહ્યું કે 'હવે હું દીક્ષા ગ્રહણ કરૂં છું. તું હવે ઘર સંભાળજે.' એમ કહીને તેણે દીક્ષા ગ્રહણ કરી. અને તે પછી ગુરુજીની પાસે જઇને શાસ્રનાં બારે અંગનું અધ્યયન કર્યું. ગુરુજીએ પણ તેને આચાર્યપદવીથી અલંકૃત કર્યા. પ્રભવસ્વામી કાલક્રમે સમાધિ લઇને દેવલોકને પ્રાપ્ત થયા.

અહિં બ્રાહ્મણ ને ગર્ભવતી સ્રીને પુત્ર અવતર્યો જેનું નામ "મનક" પાડવામાં આવ્યું. છોકરો ધીરે ધીરે આઠ વર્ષનો થયો. એક દિવસ

બાળક 'મનક' પોતાના સાથીઓ સાથે રમતો હતો તેવામાં કેટલાક સાથીઓ તેની સાથે લડી પડ્યા. તેમાંથી એક બાળકે કહ્યું: "અરે ન બાપા! તું મને શું મારતો હતો?" આ વાત સાંભળીને મનક પોતાની માની પાસે આવ્યો અને બોલ્યો 'માતાજી. મારે પિતા છે કે નહીં?' મા રોતી રોતી બોલી: 'બેટા, બાપ વિના બાળક કેમ થાય?' બાળકે કહ્યું: 'તો પછી મારા પિતાજી ક્યાં છે?' મા બોલી: 'બેટા. તું જ્યારે ગર્ભમાં હતો ત્યારે એક જૈન સાધુએ તેમને ભ્રમમાં નાખી દીધા હતા અને સાધુ બનાવીને તેમને પોતાની સાથે લઇ ગયા હતા. હવે સાંભળ્યું છે કે તારા પિતા તો સાધુઓના મોટા ગુરુ છે.'

મનકે જ્યારે આ બધું સાંભળ્યું ત્યારે તે માતાની રજા લઇને પોતાના પિતાને મળવા નીકળ્યો.

[हिन्दी] उसने सुना कि गुरु सिज्जंभवसूरीजी पाटलीपुर में विचर रहे हैं। [illegible] पाटलीपुर गया। वह वहां के नगर द्वार पर बैठा। गुरु बाहर से [illegible] कि दरवाजे पर ही इस बालक से मिले। मनक ने उन साधु को वन्दन [illegible] कि बताइये इनमे सिज्जंभव सूरीजी कौन हैं। साधुओ ने कहा यहां [illegible] उपयोग दृष्टी से गुरु ने अपने पुत्र को पहचान लिया। वे उसे उपाश्रय में [illegible] उन्होने उससे पूछा. "तूं यहां क्यो आया है?" "मैं आपसे मिलने के लिए आया हूं।" तब सिज्जंभवसूरी ने कहा, "अगर तूं वास्तविक मिलाप करना चाहता है तो तुझे आश्रवो का त्याग करना पडेगा। तब 'मनक' ने गुरु [illegible] के प्रतिबोध पाकर दीक्षा स्वीकार की। दूसरे साधुओं को भीतर का भेद मालूम नहीं हुआ। उन्हे यह भी पत्ता न चला कि मनक स्वयं सूरीजी का पुत्र हैं। [illegible] उपयोग दृष्टि से देखा तो उसे मालुम हुआ कि मनक की आयुष [illegible] [illegible] हैं। यह जानकर उन्होने सर्व शास्त्रो के [illegible] सात सौ गाथाओ से युक्त "दशवैकालिक सूत्र" बनाया। यह सूत्र [illegible] सीखाया। तदनन्तर मनक ने चारित्र धर्म की [illegible] किया और वह देवलोक को प्राप्त हुआ। उसके [illegible] देखकर सूरीजीकी आंखों से आंसु आ गये। [illegible] 'महाराज! आप [illegible] [illegible]

आश्चर्य की बात है", "साधु बोले, महाराज! क्या आश्चर्य है? तब सूरिजी ने कहा, "इस साधुने स्वल्प दिनों मे ही अपनी आत्मा का कल्याण कर दिया।" इतना कह कर मनक का सारा पिछला वृत्तान्त कह सुनाया।

[ગુ૦] તેણે સાંભળ્યું કે ગુરુ સિજ્જંભવસૂરિજી પાડલીપુરમાં વિચરી રહ્યા છે. મનક પાડલીપુર ગયો, અને નગરના દ્વાર પર બેસી ગયો. ગુરુજી બહારથી પાછા આવી રહ્યા હતા. દરવાજામાં જ તે બાળકને મળ્યા. મનકે સાધુઓને વંદન કરીને પૂછયું કે કહો, આમાં સિજ્જંભવસૂરિજી કોણ છે? સાધુઓએ કહ્યું 'આ રહ્યા.' પછી શ્રુત ઉપયોગ દૃષ્ટિથી ગુરુએ પોતાના પુત્રને ઓળખી લીધો. તે તેને ઉપાશ્રયમાં લઇ આવ્યા. તેમણે તે બાળકને પૂછયું: 'તું અહીં શા માટે આવ્યો છે?" બાળક બોલ્યોઃ 'હું તમને મળવા આવ્યો છું.' ત્યારે સિજ્જંભવસૂરિએ કહ્યું કે 'જો તું ખરેખર જ મને મળવા ચાહતો હો તો તારે બધા આશ્રવોનો ત્યાગ કરવો પડશે.' મનકે ગુરુમહારાજ પાસેથી ઉપદેશ ગ્રહણ કરીને દીક્ષા લીધી. બીજા સાધુઓને અંદરના ભેદની કાંઇ ખબર પડી નહિ. તેમને એ પણ ખબર ન પડી કે મનક સૂરિજીનો પુત્ર છે. હવે ગુરુએ જ્યારે ઉપયોગદૃષ્ટિથી જોયું ત્યારે તેમને જણાયું કે મનકનું આયુષ્ય હવે ફક્ત છ મહિનાનું જ બાકી રહ્યું છે. આ જાણીને તેમણે બધા શાસ્ત્રોના સારરૂપ અને સાધુઓના આચારરૂપ સાતસો ગાથાઓવાળું 'દશવૈકાલિક સૂત્ર' રચ્યું. આ સૂત્ર તેમણે મનકને છ મહિનાની અંદર શીખવી દીધું. ત્યાર પછી મનકે ચારિત્રધર્મની આરાધનાપૂર્વક સમાધિ લીધી અને કાળ કરીને દેવલોકને પામ્યો. તેની અમરલોકની પ્રાપ્તિનો વૃત્તાંત દિવ્યદૃષ્ટિથી જોઇને સૂરિજીની આંખોમાં આંસુ આવ્યાં. આ જોઇને બીજા સાધુઓ બોલ્યાઃ હે મહારાજ! આપ જેવા વિસ્મયપુરૂપ પણ જો મોહને વશ થઇ જાય તો બીજાઓ થાય તેમાં શું આશ્ચર્ય? "ગુરુએ કહ્યું: એ મોહ નથી પણ આશ્ચર્યની વાત છે" સાધુઓએ કહ્યું: 'મહારાજ, શું આશ્ચર્ય છે?' ત્યારે સૂરિજીએ કહ્યું કે આ સાધુએ ઘણા ઓછા વખતમાં જ પોતાના આત્માનું કલ્યાણ કરી લીધું. આમ કહીને તેમણે મનકની આખી વાત તેમને કહી સંભળાવી.

[हिन्दी] तब साधुओंने कहा, "हे महाराज! आपने हमें तो यह बात कभी

नहीं जनाई ?" गुरु ने कहा कि अगर मैं आपको पहले ऐसा जना देता तो इसकी आत्मा का कल्याण नहीं होता। फिर उन्होंने कहा, यह "दशवैकालिक सूत्र" मनक के लिए ही बनाया था अतः अब इसे नष्ट कर दें। तब श्री संघने अर्ज की कि यह ग्रन्थ आने वाले समय में स्वल्प बुद्धिवाले जीवों के उपयोग मे आवेगा तब इससे महान उपकार होगा। संघ के द्वारा ऐसी विनती करने पर गुरु महाराजने उस ग्रन्थ को कायम रखा। कई वर्षों के बाद श्री सिज्जंभवसूरीजी भी भव्य जीवों को प्रतिबोध देते हुए समाधि से काल धर्मानुसार देवलोक को प्राप्त हुए। अतः श्री जिन प्रतिमा के दर्शन के लाभ से मिथ्यात्व नष्ट हो जाता है। और मन निर्मल हो जाता है। इस लिए इस पर्युषण महापर्व में दर्शन, पूजा अवश्य करना चाहिये जिससे सुख की प्राप्ति हो।

[इति श्री जिनप्रतिमा–दर्शनोपरि–सिज्जंभवसूरि–कथानकम्]

[ગુ૦] ત્યારે સાધુઓએ કહ્યું: 'હે મહારાજ! આપે તો અમને આ વાત ક્યારેય પણ કહી નહિ!' ગુરુએ કહ્યું કે તે હું તમને પહેલેથી આ જણાવી દેત તો તેના આત્માનું કલ્યાણ ન થાત." પછી તેમણે કહ્યું કે આ દશવૈકાલિકસૂત્ર મેં મનકને માટે જ રચ્યું હતું. તેથી હવે તેનો નાશ કરી નાખવો જોઈએ. ત્યારે શ્રી સંઘે તેમને અરજ કરી કે "આ ગ્રંથ હવે જે સમય આવશે. તેમાં થોડી બુદ્ધિવાળા જીવોના [illegible] આવશે તો તેનાથી તેમના ઉપર મોટો ઉપકાર થશે." સંઘ [illegible] વિનંતી થતાં ગુરુમહારાજે તે ગ્રંથને રહેવા દીધો.

કેટલાએક વર્ષો પછી શ્રી સિજ્જંભવસૂરિજી પણ ભવ્ય જીવોને પ્રતિબોધ દેતા થકા સમાધિથી કાળધર્મ પ્રમાણે દેવલોકને [illegible].

શ્રી જિન ભગવાનની પ્રતિમાના દર્શનના લાભથી મિથ્યાત્વ નષ્ટ થાય છે અને મન નિર્મળ થઈ જાય છે. માટે. આ પર્યુષણ [illegible] દર્શન. પૂજા. અવશ્ય કરવાં જોઈએ. જેથી સુખની પ્રાપ્તિ [illegible]

[ઇતિ શ્રી જિનપ્રતિમા દર્શન માહાત્મ્યમાં [illegible]

पशु तुल्य हैं। अगर कोई प्राणी बिना मन के भी भगवान की वाणी को सुनता हैं वह भी रोहिण्या चोर की तरह आत्मा का कल्याण कर लेता हैं।

रोहिण्या चोर की कथा :—

राजग्रही नगरी के बाहर 'वैभारगिरि' नाम का एक पर्वत था। उस पर्वत की सीमा में बहुत सुन्दर एक गुफा थी। उस गुफा में महापापी, चंडाल स्वभाववाला, परस्त्रीगामी, परधनापहारक सर्व प्रसिद्ध "लोहखुर" नामका एक चोर रहता था। वह चौर राजगृही में निरन्तर चोरिया किया करता था परन्तु किसी के भी दृष्टिगोचर नहीं होता था। इस चोर के पुत्र का नाम 'रोहिणेय' था। यह रोहिणेय भी धीरे २ चौर्य कार्य में प्रवीण हो गया। एक बार लोहखुर बिमार पड़ा। वह मरने जैसा हो गया। उसने अपने पुत्र रोहिणेय को अपने पास बुलाकर कहा, "प्रीणाति यः सुचरितैः पितरं स पुत्रः" जो अपने पिता को अपनी करनी से प्रसन्न करें वही पुत्र है। अतः हे पुत्र ! मैं तुम्हे एक बात कहता हूं जो तूं उसे मानें तो मेरा पुत्र है। पुत्र ने कहा "पिताजी ! कहिये ऐसा कौन मूर्ख हैं जो अपने पिता की आज्ञा नहीं मानें, आप जो कहेंगे वही मैं करूंगा। आपकी आज्ञा कभी भी नहीं छोड़ूँगा। पिता ने कहा, "हे पुत्र ! यहां एक "महावीर स्वामी" नाम का ऐन्द्र जालिक आया हैं वह समोसरण में बैठ कर लोगों को इकट्ठा करके धर्मोपदेश देता है, उस की बात तूं कानों से मत सुनना। पुत्र ने कहा कि हे पिताजी ! मैं उनकी बातें नहीं सुनुंगा। आप आनन्द में रहो। पुत्र का ऐसा वचन सुनकर लोहखूर प्रसन्नचित्त हो प्राणो को छोड़ दिया।

[ગુ૦] વળી આ પર્વ આવે ત્યારે ભગવાને ઉપદેશેલાં શાસ્ત્રોની વાણી સાંભળવી જોઇએ. જે માણસોએ જિન ભગવાનની વાણીને સાંભળી નથી તે માનવરૂપે પશુ જેવા છે કોઇ પ્રાણી અનિચ્છાએ પણ જિન ભગવાનની વાણી સાંભળી લે, તો રોહિણ્યા ચોરની જેમ તેના આત્માનું પણ કલ્યાણ થઇ જાય છે.

રોહિણ્યા ચોરની કથા.

રાજગૃહી નગરીની બહાર 'વૈભારગિરિ' નામનો એક પર્વત હતો. તે પર્વતની તળેટીમાં ઘણી સુંદર એક ગુફામાં મહા પાપી અને ચંડાળ જેવા સ્વભાવવાળો, પરસ્ત્રીગામી, બીજાના ધનનું હરણ કરવાવાળો અને

લોકોમાં ગવાયેલો એક પ્રસિદ્ધ 'લોહખુર' નામનો ચોર રહેતો હતો. તે ચોર રાજગૃહીમાં હંમેશ ચોરીઓ કર્યા કરતો હતો. પણ કોઇની નજરે પડતો નહોતો. આ ચોરના પુત્રનું નામ 'રોહિણેય' હતું. આ રોહિણેય પણ ધીરે ધીરે ચોરવિદ્યામાં પ્રવીણ થઇ ગયો. એકવાર લોહખુર બીમાર પડ્યો, ને મરવા જેવો થઇ ગયો. તેણે તેના પુત્ર રોહિણેયને પાસે બોલાવીને કહ્યું : " प्रीणाति यः सुचरितैः पितरं स पुत्रः " "જે પોતાના પિતાને પોતાનાં કામોથી ખુશ કરે તે જ સાચો પુત્ર છે. માટે હે પુત્ર ! હું તને એક વાત કહું છું, તે તું માને તો મારો સાચો પુત્ર કહેવાય." પુત્રે કહ્યું : "પિતાજી, કહો, એવો કોણ મૂર્ખ હશે જે પોતાના પિતાનું કહ્યું નહિ માને ? આપ જેમ કહેશો તે પ્રમાણે જ હું કરીશ. આપની આજ્ઞાનું કદી ઉલ્લંઘન નહીં કરું " પિતાએ કહ્યું: " હે પુત્ર, અહીં " મહાવીર સ્વામી" નામનો એક ઇન્દ્રજાળી આવ્યો છે, ને સમોવસરણમાં બેસીને લોકોને ભેગા કરીને ધર્મોપદેશ આપે છે: તેની વાત કદી સાંભળતો નહીં." દીકરાએ કહ્યું કે " પિતાજી, હું તેની વાત કદી નહીં સાંભળું. આપ નિશ્ચિંત રહેજો." પુત્રનું આવું વચન સાંભળીને "લોહખુર" પ્રસન્ન થયો અને પોતાના પ્રાણનો ત્યાગ કર્યો.

[हिन्दी] मरने के अनन्तर वह नरक लोक को प्राप्त हुआ। "[illegible] ऐसे पापी भी अनेक हैं जो स्वयं धर्म कभी भी नही सुनने और [illegible], उसे भी मना करें, उन पापियों के लिए नरक के सिवाय कौन सा [illegible]।" अब रोहिणेय भी पिता की और्ध्वदैहिक क्रिया कर्म से निवृत्त हो पुनः [illegible] करने लगा। एक बार महावीर स्वामी विहार करते करते [illegible] निकलता था उसी मार्ग में समोसरण परिषद इकट्ठी [illegible] किया। इतने में ही सामने रोहिणेय आया। उसने समोसरण देखा, [illegible] करने लगा कि यही ऐन्द्रजालिक महावीर स्वामी है। [illegible] यह नहीं तो पिताजी की आज्ञा का भंग हो जायगा। [illegible] पर [illegible] दूसरा रास्ता भी नहीं है फिर भी इनका [illegible] है। ऐसा विचार करते करते [illegible] उसके पाव में कांटा लग गया। [illegible] हाथसे कांटा निकालने लगा, [illegible]

पड़े, १. देवता आँखे नहीं (टमकारते) फुरकाते हैं। २. देवताओं की फुलमालाएँ नहीं कुम्हलाती हैं। ३. देवता पृथ्वीसे चार अंगुल ऊंचे रहते हैं। ४. देवताओं के शरीर में पसीना होता नही हैं। ये चार वचन भगवान के रोहिणेय के कानों में पडे। तब वह सोचने लगा कि हाय! हाय! मैंने पिता की आज्ञा का उल्लंघन किया। कांटा निकालनें का तो परिश्रम किया परन्तु महावीर के वचनरूप कांटा लग गया। अब क्या करें। वह ज्यों ज्यों पछताता हैं त्यों त्यों महावीर के सुनें हुए वचन रोहिणेय के हृदय में पक्के होते जाते हैं। अब वह कठोर हृदय करके राजग्रही नगरी में चोरी करनें के लिये गया।

[ગુ૦] મર્યા પછી તે નરકમાં ગયો. સંસારમાં એવા પાપી લોકો અનેક છે, જેઓ પોતે ધર્મકથા કદી સાંભળતા નથી પણ જે સાંભળે છે તેને પણ મના કરે છે. એવા પાપી લોકો માટે નરક સિવાય બીજું કયું ઠેકાણું છે?

હવે રોહિણેય પણ તેના પિતાની ઉત્તરક્રિયા સમાપ્ત કરીને ફરીવાર પોતાના ચોરીના ધંધામાં લાગી ગયો. એકવાર મહાવીરસ્વામી વિહાર કરતા હતા, તેમાં રોહિણેય જે માર્ગે નીકળતો હતો તે માર્ગમાં જ તેમના ઉપદેશની પરિષદ ભેગી થઇ, અને તેઓ ધર્મોપદેશ દેવા લાગ્યા. એટલામાં સામેથી રોહિણેય ચાલ્યો આવતો હતો. તેણે સમોસરણ જોઇને વિચાર કર્યો કે આજ તે ઇન્દ્રજાળી મહાવીરસ્વામી છે. જો તેની વાણી મારા કાને પડી ગઇ તો પિતાજીની આજ્ઞાનો ભંગ થશે અને મને પાપ લાગશે. પણ હવે જવાનો બીજો કોઇ માર્ગ પણ નથી અને અહીંથી પસાર થઇશ તો આનાં વચનો કાને પડી જશે તો તે ઠીક પણ નહિ થાય. એવો વિચાર કરીને કાનોમાં આંગળીઓ ભરાવીને તેણે ત્યાંથી દોટ મૂકી. પણ દૈવયોગે તેને પગમાં કાંટો વાગ્યો, તેથી તે ચાલવામાં અસમર્થ થઇ ગયો. તે જ્યારે એક હાથે કાંટો કાઢવા લાગ્યો ત્યારે ભગવાનનાં નીચેનાં વચનો તેને કાને પડ્યાં: (૧) દેવતાઓની આંખો ફરકતી નથી. (૨) દેવતાઓની ફૂલની માળાઓ કદી કરમાતી નથી. (૩) દેવતાઓ પૃથ્વીથી ચાર આંગળ ઊંચે રહે છે. (૪) દેવતાઓના શરીરમાં પરસેવો થતો નથી. આ ચાર ભગવાનનાં વચનો રોહિણેયના કાને પડ્યાં ત્યારે તે વિચાર કરવા લાગ્યો: હાય હાય! મેં મારા પિતાની આજ્ઞાનું

ઉલ્લંઘન કર્યું. પગનો કાંટો મેં કાઢી નાખ્યો પણ મહાવીરના વચન રૂપી કાંટો મારા હૃદયમાં પેસી ગયો. હવે હું શું કરું! તે જેમ જેમ પસ્તાતો જતો હતો તેમ તેમ મહાવીરસ્વામીનાં સાંભળેલાં વચનો તેના હૃદયમાં ઉતરીને પાકાં થતાં જતાં હતાં. છતાં તે કઠોર હૃદય કરીને રાજગૃહીમાં ચોરી કરવા ગયો.

[हिन्दी] उसी दिन नगर के सारे साहूकारोंने इकट्ठे होकर श्रेणिक राजा से निवेदन किया, हे राजन्! आपके राज्य में चोरों का उपद्रव ज्यादा बढ़ गया है। घरमें बैठे हुए ही हमें दरिद्र बनाता जा रहा है। यह सुन राजाने कोतवालको बुलाकर कहा, "क्यों जी! नगर में यह क्या उत्पात है? तुम चोर को पकड़ नहीं सके।" कोतवालने कहा, "महाराज! मुझे मालुम है यह चोर रौहिणेय है। परन्तु यह चौर्य कार्य में इतना दक्ष है कि पकड़ मे नहीं आ सका है। यह भी पता नहीं चलता कि यह कब आता है और कब जाता है। मैं तो इसे पकड़ने में अपने को असमर्थ पाता हूं। आप चाहें तो मुझे कोतवाल पदसे [illegible] हो। तब राजाने अभयकुमार की तरफ देखा, तब अभयकुमार ने कहा, "मैं इस चोर को सात दिन में पकड़कर के हाजर कर दूंगा, अगर मैं ऐसा न [illegible] चोर की सजा मुझे मिले।" ऐसी प्रतिज्ञा कर उसने नगर के [illegible] का पता लगाने हेतु नियुक्त किये। तो भी नगर में चोरी [illegible] नहीं आया। इस तरह चौकसी रखने पर भी छः दिनों तक चोर नहीं [illegible]

चरों को भेजकर सारा वृतान्त जाना। उसने चोर का वृतांत सत्य पाया। तब चोरने पुनः निवेदन किया कि महाराज! यदि अभयकुमार की बात ही रखनी हो तो आप भले ही मृत्य दण्ड दे दो।

[ગુ૦] તે જ દિવસે શહેરના બધા શેઠિયાઓએ ભેગા થઇને શ્રેણિક રાજાને ફરિયાદ કરી કે "હે રાજન્! આપણા રાજ્યમાં ચોરોનો ઉપદ્રવ ઘણો વધી પડયો છે. ઘરમાં બેઠા બેઠા અમે દરિદ્ર બનતા જઇએ છીએ." આ સાંભળીને રાજાએ કોટવાળને બોલાવ્યો અને કહ્યું: 'કેમ ભાઇ! શહેરમાં આ શો ઉત્પાત છે? તમે ચોરને પકડી શકતા નથી?' કોટવાળે કહ્યું: 'મહારાજ, મને ખબર છે કે એ ચોર રોહિણેય જ છે, પણ ચોરવિદ્યામાં એ એટલો પ્રવીણ છે કે અમારી પકડમાં આવતો નથી. એ પણ ખબર રહેતી નથી કે એ કયારે આવે છે, ને કયારે જાય છે. હું તેને પકડી શકીશ નહિ એમ મને લાગે છે. આપ ચાહો તો મને કોટવાળ પદેથી મુક્ત કરી શકો છો.' ત્યારે રાજાએ અભયકુમાર સામે જોયું. અભયકુમારે કહ્યું: 'હું આ ચોરને સાત દિવસમાં પકડીને આપની સમક્ષ હાજર કરીશ. જો હું એમ ન કરી શકું તો ચોરને જે સજા થાય તે મને મળે.' આવી પ્રતિજ્ઞા કરીને તેણે ચોરને પકડવા માટે શહેરમાં સર્વત્ર ચોકીદારો ગોઠવી દીધા. તો પણ શહેરમાં ચોરી થઇ અને ચોર હાથ પણ ન આવ્યો. આવી રીતે ચોકસાઇ રાખવા છતાં છ દિવસ સુધી ચોર હાથમાં આવ્યો નહીં. સાતમે દિવસે બધા રસ્તા ઉપર ચોકીદારો ગોઠવ્યા અને તે ઉપરાંત મહોલ્લે મહોલ્લે પણ ચોકીદારો ગોઠવી દીધા. શહેરના કોટની બહાર પણ માણસો ગોઠવ્યા હતા. સાંજ થતાં જ ચોર ચોરી કરવા માટે શહેરમાં ઘુસ્યો. સૈનિકોએ તેને આકારથી ઓળખ્યો. જેવો તે કોઇ શેઠિયાના ઘરમાં ચોરી કરવા ઘુસ્યો તેવો જ લોકોએ શોરબકોર કરી મૂકયો. બૂમબરાડા થતાં જ ચોર ઘરો ઉપરથી વાંદરાની જેમ કુદતો કુદતો કોટ સુધી ગયો અને કોટ ઉપરથી બહાર કુદી પડયો. તરત જ સૈનિકોએ તેને પકડી લીધો, અને અભયકુમાર પાસે હાજર કર્યો. અભયકુમાર પ્રસન્ન થયા. તે તેને રાજા સમક્ષ લઇ ગયા. રાજાએ ચોરને પૂછયું કે "તું કયાં રહે છે?" "મહારાજ! હું સાલગાંવનો રહેવાસી છું; મારું નામ દુર્ગચંદ છે. મારે ઘેર દીકરીનાં લગ્ન છે તેથી ચીજ-વસ્તુ લેવા માટે શહેરમાં આવ્યો હતો અને સાંજે મારે ગામ જઇ

રહ્યો હતો ત્યાં સૈનિકોએ "ચોર, ચોર," કહીને મને પકડી લીધો. હવે આપની ઇચ્છામાં આવે તેમ કરો. મને દંડ દેવો હોય તો આપ માલિક છો, હું શું કરી શકું!" રાજાએ ગુપ્તચરોને મોકલીને બધી હકીકત જાણી. તેમના કહેવા ઉપરથી ચોરની વાત સાચી જણાઇ. ત્યારે ચોરે ફરી નિવેદન કર્યું કે "મહારાજ, છતાંય આપને અભયકુમારની વાત સાચી લાગતી હોય તો આપ મને મૃત્યુદંડ આપી શકો છો."

[हिन्दी] राजा विचार करनें लगा कि, "अपनें अन्याय कैसे करें?" उन्होंने अभयकुमार की तरफ देखा। अभयकुमारने विचार किया कि यह चोर चतुर है और साथ ही साथ कपटी भी है अतः इसी के मुख से सत्य स्वीकार करना चाहिये। ऐसा विचार कर राजा से कहा, "हे राजन्! मैंने गलती की है, यह तो साहूकार है इसकी इज्जत कम हुई अतः मैं इसका सम्मान कर इसे विदा करूंगा।" इतना कहकर वह चोर को अपने महल में ले गया। वहां उसने उसे सुन्दर भोजन से सत्कार किया और मौका देखकर 'चन्द्रहास्य' मदिरा पिला दी। इससे भोजन करते २ ही उसे नींद आ गई। तत्काल अभयकुमार ने एक आवाज की ...

તેમણે અભયકુમારની સામે જોયું. અભયકુમારે વિચાર કર્યો કે આ ચોર પાકો છે અને સાથે સાથે કપટી પણ છે; એટલે હવે તો તેને મોઢે જ સાચું કહેવરાવવું જોઇએ. આવો વિચાર કરીને તેણે રાજાને કહ્યું: "મહારાજ, મેં ભૂલ કરી છે. આ તો શાહુકાર છે. તેની બદનામી થઇ તેથી હું હવે તેનું સન્માન કરીને પછી તેને વિદાય આપીશ." એમ કહીને તે ચોરને પોતાના મહેલમાં લઇ ગયો. તેનો સત્કાર કરીને તેને સુંદર ભોજન કરાવ્યું; અને લાગ જોઇને તેને 'ચંદ્રહાસ્ય' મદિરા પાઈ દીધી. આથી ભોજન કરતાં કરતાં જ તેને ઊંઘ આવી ગઇ. તરત જ તેણે એક હવેલીને દેવલોક જેવી શણગારી: એક ઓરડામાં અનેક પ્રકારનાં ચિત્રો ચીતરાવ્યાં, ઠેકાણે ઠેકાણે મોતીની ઝાલરો લટકાવી અને ફુલની માળાઓના ઢગલાના ઢગલા ચારે બાજુ લટકાવી દીધા, ઠેકાણે ઠેકાણે સુગંધિત ધુપથી વાતાવરણને સુવાસિત બનાવી દીધું. સુગંધી અત્તરો છંટાવ્યાં. હવેલી ઉપર સુંદર ધ્વજાઓ ફરકાવી, સુંદર ચંદરવા બંધાવ્યા અને હવેલીના મધ્યભાગમાં અનેક તોરણો યુક્ત એક મંડપ બંધાવ્યો. તેમાં એક ખુબ સુંદર છત્રપલંગ બિછાવ્યો; અને પછી સર્વાંગસુંદર સોળ વરસની સુંદરીઓ બોલાવીને તેને શૃંગાર સજાવી હાથમાં મૃદંગ આપી અને વગાડવાની આજ્ઞા કરી ઉપરાંત આઠ વેશ્યાઓને બોલાવીને ગાયન–વાદન ચાલુ કરાવ્યાં. પછી મૂર્ચ્છિત અવસ્થામાં જ તે ચોર રોહિણેયને તે મહેલમાં સૂવરાવી દીધો. બે ચાર ઘડી જતાં જ્યારે તેનો નશો ઊતર્યો અને તેણે આંખો ઉઘાડીને જોયું તો સાક્ષાત્ દેવલોક જેવું બધું નજરે પડયું. તે વિચાર કરવા લાગ્યો કે હું કયાં આવી ગયો! શું મને સ્વપ્ન તો નથી આવ્યું! એવો વિચાર કરી રહ્યો હતો એટલામાં અભયકુમારે શીખવ્યા પ્રમાણે બનાવટી દેવ–દેવીઓએ આવીને "જય જય નંદા, જય જય ભદ્રા" એવા શબ્દોથી જય જયકાર કરી એને ઘેરી વળ્યા અને નાટક કરવા તૈયાર થયા.

[हिन्दी] तत्काल ही एक "गुप्त स्थानिक देवता" आया और कहने लगा कि 'हे देवानांप्रिय! तुम यहां देवलोक में देवतारूप में उत्पन्न हुए हो, अतः अब से आप इस विमान के मालिक हो। अब आप अपने पूर्वभव को कहिये। आपने पिछले भव में क्या धर्म और कर्म किये जिससे आप देवता बने, सो जल्दी कहो, फिर आप देवताओं के योग्य भोगों का उपभोग करो। यह चोर गुप्तस्थानक देवता

के ऐसे वचन सुनकर विचार करने लगा कि "क्या यह देवलोक है या अभयकुमार की कपट क्रिया है ?" ऐसा विचार करते ही महावीर के वचन याद आये। उसने निश्चय किया कि अगर महावीर स्वामीने जो बातें कही थी वे इसमें मिल जाय तो देवलोक है नहीं तो अभयकुमार रचित कपटलीला है। ऐसा निश्चय कर उसने देवताओं की तरफ गौर से देखा। तो देखा वे देव और देवियां आंखें मटका रही हैं, उनके शरीर पर पसीना है, गले में रही हुई फूलमालाएं कुम्हला गई हैं उनके पैर भूमी से लगे हुए हैं। भगवान के कथनानुसार एक भी बात उसमें नहीं मिल रही थी। तब चोर उस मायाजाल को जान गया। अतः बोला, अरे नाटककारो! मैंने तो पूर्वभव में खूब दान दिये हैं, शील पाले हैं, सद्गुरु की सेवा की है, अरिहंत देव की पूजा की हैं, सात व्यसनों से रहित होकर व्रत और नियमों का पालन किया है, कई मन्दिरों में जिर्णोद्धार कराये हैं, इत्यादि पुण्य कार्यो से ही मैं देवता बना हूँ तब गुप्तस्थानिक देवताने कहा, "[illegible] बचपन में भी कोई पाप किया हो तो कहो!" तब चोरने कहा, "अरे! तुम बड़े मूर्ख हो, विचार तो करो कि मैंने श्रावक कुल में जन्म लिया है, वहां पाप का क्या काम? मैंने जन्म से लेकर मृत्यु तक छानकर जल पिया, [illegible] छाने जलका स्पर्श तक नहीं किया। निरन्तर पोषध, प्रतिक्रमण [illegible] संगति की हैं।

માઇ ગઇ છે અને તેમના પગો પણ જમીનને અડે છે. ભગવાનના કહેવા પ્રમાણેની એક પણ વાત મળતી આવતી નહોતી, એટલે ચોર આ માયાજાળને પામી ગયો, અને બોલ્યો : 'અરે નાટક કરનારા લોકો, મેં તો પૂર્વભવમાં ઘણું દાન આપ્યું છે, સદ્‌ગુરુની સેવા કરી છે, અરિહંતદેવની પૂજા કરી છે. સાત વ્યસનોથી મુક્ત રહીને વ્રત અને નિયમોનું પાલન કર્યું છે. કેટલાંયે મંદિરોનો જીર્ણોદ્ધાર કર્યો છે, વગેરે ઘણાં પુણ્યકર્મોને કારણે જ હું દેવ તરીકે જન્મ્યો છું." ત્યારે ગુરુસ્થાનિક દેવતાએ કહ્યું : "નાનપણમાં પણ કોઇ પાપ કર્યું હોય તો કહો." ત્યારે ચોરે કહ્યું : 'અરે, તમે લોકો મોટા મૂર્ખ છો. વિચાર તો કરો કે મેં શ્રાવકકુળમાં જન્મ લીધો હતો એટલે ત્યાં પાપ હોયજ ક્યાંથી ? મેં જન્મથી માંડીને મૃત્યુ સુધી ગળીને જ પાણી પીધું છે અને સ્વપ્નમાં પણ અણગળ પાણીને સ્પર્શ સુદ્ધા નથી કર્યો. હંમેશાં પૌષધ અને પ્રતિક્રમણ કર્યાં છે અને સાધુઓની સંગતિ કરી છે."

[हिन्दी] तब देवताने फिर कहा, "कोई छोटी बडी चोरी की हों तो याद करों" चोर ने कहा, "अरे भद्र ! चोरी करने वाला मनुष्य देवलोक में कैसे अवतरित हो ? तुम इतना भी नहीं जानते तो कैसे देवता हो ? भला बताईये तो क्या कोई भी पत्थर की शिला पर बैठकर समुद्र के पार पहुंच सका हैं ? ऐसी बाते जब चोरने की तो अभयकुमार ने विचार किया कि इस चोरने मेरा कपट जान लिया है तो अब यह ठगा नहीं जायगा, ऐसा विचार कर चोर से कहा, "वाह रे वाह ! तूं भारी चतुर हैं, तुमने मेरी बुद्धि को भी दबा दिया हैं, परन्तु अब सच कहो कि देवलोक है या नहीं ? इस बात की तुम्हें कैसे खबर हुई ? तब उस चोरने मनमें सोचा कि हाय ! हाय ! मेरे पिता को धिक्कार है जो उन्होंने मुझे गलत समझाया, मैंने बिना मनके भगवान के वचन सुने तो भी मैं आज जिन्दा रह गया अगर तन मन से सुने होते तो निश्चय ही आत्मा का कल्याण हो जाता। अब भगवान के पास जाकर धर्मोपदेश सुनकर दीक्षा लेकर श्री भगवान की सेवा में रहूंगा। इतना विचार करके वह अभयकुमार से बोला, "हे अभयकुमार ! यह बात श्री त्रिलोकीनाथ भगवान श्री महावीर स्वामी जी के प्रभाव से मैंने जानी हैं।" इतना कहकर उसने अपनी चोरी की सब बाते प्रगट पन से कही और सर्व धन बता दिया, फिर बोला कि अब मुझे भगवान के पास जाकर दीक्षा ग्रहण करना हैं। चोर के मुख से यह बात सुनकर अभयकुमार चोर को श्रेणिक राजा के पास ले गया,

राजा ने चोर से पूछा कि हे चोर ! तुमने चोरी की क्या ? चोर ने कहा, "हां महाराज चोरी की।" तब राजा ने चोर को मार डालने की आज्ञा दी।

[ગુ૦] ત્યારે દેવતાએ ફરી કહ્યું : 'કોઇ નાની-મોટી ચોરી કરી હોય તો યાદ કરો." ચોરે કહ્યું : 'અરે ભલા ભાઇ ! ચોરી કરવા વાળો માણસ દેવલોકમાં જન્મે જ કેમ ? તમે એટલું પણ જાણતા નથી તો પછી કેવા દેવ છો ? શું કોઇ પથ્થરની શિલા ઉપર બેસીને સમુદ્રને તરી શકયો છે ?" આવી વાતો જ્યારે ચોરે કહી ત્યારે અભયકુમારે વિચાર્યું કે નક્કી આ મારી કપટકળા જાણી ગયો છે. હવે તેને ઠગી શકાશે નહિ. આવો વિચાર કરીને તેણે ચોરને કહ્યું : " વાહ રે વાહ ' તું બહુ ચતુર છો : તેં તો મને પણ ફાવવા ન દીધો. પણ હવે સાચું કહે કે તેં ...

श्री महावीर स्वामीजी को नमस्कार करके कहा, "हे भगवान! आपकी वाणी है सो मिथ्यात्वरूप तिमिर को नाश करने के लिए सूर्यसमान है, किन्तु मेरे पिताजी के आदेश से मैंने उसे सुना नही और बिना मन के थोडी सी वाणी कान में पडी जिससे जीवित बचा सो आपने मुझे यहां जीवित रक्खा तो अब नरक से भी बचाओ, तब भगवान श्री महावीर स्वामी ने बहुत मधुर वचनों से उत्तर दिया, "अरे भव्य! इस अपार पारावार रूप संसार में स्वजन सम्बन्धी वगेरह है सब स्वार्थ के साधक हैं, कोई किसी के काम में नही आता, जो धर्म कार्य तुम करोगे तो तुम सुखी होंगे। इनके साथ पांच महाव्रत पालोगे तो कर्मक्षय करके मोक्ष सुख पाओगे।" भगवान् का यह उपदेश सुनकर रोहिणेय चोर प्रतिबोध पाकर भगवान से बोला, "हे भगवान्! चारित्र रूप रत्न दिलाओं! उसके इस तरह विनय करने पर भगवान ने उसे दीक्षा दी और रोहिणेय ने अपने कुटुम्ब को प्रतिबोध देकर दीक्षा दिलाई।

कोई २ परतो में लिखा है कि अभयकुमार की ठगाई में रोहिणेय चोर जब नहीं आया तब अभयकुमार ने श्रेणिक राजा से उसे मुक्त कराया और कहा बिना अपराध यह मारने योग्य नहीं हैं। चोर ने विचार किया कि मैं श्री वीर प्रभु के वचनों से जीवित रहा हूं। ऐसा विचार कर भगवान को जाकर वन्दन किया, भगवान ने उसे धर्म सुनाया, उनमें प्रतिबोध पाकर दीक्षा लेनेका मन हुआ। भगवान से कहा कि मेरे दीक्षा तो लेनी हैं परन्तु श्रेणिक राजा से कुछ बात कहना हैं सो कहकर वापिस आकर दीक्षा लूंगा। ऐसा भगवान को कहकर वह श्रेणिक राजा के पास आया और बोला, हे राजन! रोहिणेय चोर जिसे कहते हैं वह मैं हूं।

[ગુ૦] અવસર જોઇને અભયકુમારે રાજાને હાથ જોડીને વિનંતી કરી કે "હે મહારાજ! આ ચોરનો ભાવ દીક્ષા લેવાનો છે." રાજાએ કહ્યું "ઘણું સારું." પછી ચોરે જ્યાં જ્યાં ધન દાટયું હતું તે બધું બતાવી દીધું અને જેનું જેનું હતું તેને સોંપી દીધું. રાજાએ પણ ચોરની દીક્ષાનો ઉત્સવ ખુબ ધામધુમથી કર્યો.

રોહિણેયે ભગવાન મહાવીરસ્વામીને નમસ્કાર કરીને કહ્યું: 'હે ભગવાન આપની વાણી મિથ્યાત્વરૂપ અંધકારનો નાશ કરવામાં સૂર્ય સમાન છે, પણ મારા પિતાજીની આજ્ઞા હતી તેથી ને મેં સાંભળી નહિ. છતાં અજાણતાં થોડી વાણી જે વાણી કાને પડી ગઇ તેનાથી આજે હું જીવતો રહ્યો છું. આપે મને આમાંથી બચાવ્યો છે તો હવે મને નરકમાંથી

પણ બચાવો. " ત્યારે ભગવાન મહાવીરસ્વામીએ ઘણાં મીઠાં વચનોથી ઉત્તર આપ્યો : " હે ભવ્ય જીવ ! આ અપાર અને પારાવાર સંસારમાં સગાં સંબંધી સૌ સ્વાર્થને સાધવાવાળાં છે: કોઇ કોઇના કામમાં આવતું નથી. જો તું ધર્મકાર્ય કરીશ તો જ સુખી થઇશ. સાથે સાથે પાંચ મહાવ્રત પાળીશ તો કર્મક્ષય થતાં મોક્ષને પામીશ. " ભગવાનનો આવો ઉપદેશ સાંભળીને રોહિણેય ચોરે પ્રતિબોધ પામીને ભગવાનને કહ્યું: " હે ભગવાન ! મને ચારિત્ર રૂપી રત્ન અપાવો." એનાં આવાં વિનયી વચનો સાંભળીને તેને દીક્ષા આપી અને રોહિણેય ચોરે પોતાના કુટુંબને પ્રતિબોધ આપીને દીક્ષા લેવરાવી.

કોઇ કોઇ પ્રતોમાં એવું લખ્યું છે કે—જ્યારે અભયકુમારને [illegible] રોહિણેય ચોર ન સપડાયો ત્યારે અભયકુમારે શ્રેણિકમહારાજને [illegible] મુક્ત કરાવ્યો અને કહ્યું કે અપરાધ વિના આને [illegible] ચોરે વિચાર કર્યો કે—હું શ્રી વીરપ્રભુનાં વચનો સાંભળીને [illegible] ગયો છું તો પછી હું તેમને વંદન કરવા જાઉં. [illegible] દેશ કર્યો. તેથી પ્રતિબોધ પામીને તેણે દીક્ષા [illegible] નને પ્રાર્થના કરી કે મારે દીક્ષા લેવી છે. પણ તે [illegible] રાજાને થોડી વાત કહેવી છે તે પછી આવીને દી[illegible] વાનને કહીને તે શ્રેણિક રાજા પાસે આવ્યો અને [illegible] રોહિણેય ચોર જેને કહો છો તે હું જ છું."

जीवों का निस्तार हो गया हैं। देखो रोहिणेय चोर ने विना भाव से भगवान का उपदेश सुना तो भी अच्छी गति को प्राप्त हुआ।

कहा भी हैं कि—

मिथ्यामत नासवे को ज्ञान के प्रकास वे को, आपापर भासवे को भानसी वखानी हैं।
छहो द्रव्य जानवे को बंध विधि भानवे को, आपापर ठानवे को परम प्रमानी हैं॥
अनुभो बताय वे को जीव के जतायवे को, काहु न सताय वे को भव्य उर आनी हैं।
जहां तहां तारवे को पार के उतारवे को, सुख विस्तारवे को यहै जिन वानी हैं॥१॥
[कवित्त ३१ सो]

इस प्रकार की श्री तीर्थंकर भगवान की वाणी हैं। इसलिए पर्युषण महा पर्व आने पर भगवान की वाणी अवश्य श्रवण करना चाहिये। जिससे इस भव में आत्मा का अल्याण हो जाय।

[इति द्वितीय दिवसे द्वितीय—व्याख्यानम्]

[ગુ૦] મહાવીરસ્વામીનાં વચનો મેં સાંભળ્યાં તેથી હું અભયકુમારની જાળમાં ફસાયો નહીં. હવે હું મહાવીરસ્વામીની પાસે દીક્ષા લેવાનો છું તેથી આપના અધિકારીઓને મારી સાથે મોકલો, હું બધું ધન બતાવી દઈશ. રાજાએ અભયકુમારને મોકલ્યા. ચોરે તેમને બધું ધન બતાવી દીધું. રાજાએ જેનું જેનું ધન હતું તે સો સૌને સોંપી દીધું. ચોરે પોતાના કુટુંબને પ્રતિબોધ આપ્યો અને પોતે પરિવાર સહિત મહાવીરસ્વામીની પાસે ગયો અને સપરિવાર દીક્ષા ગ્રહણ કરી. તેનો ઉત્સવ શ્રેણિકરાજાએ ઊજવ્યો. રોહિણેયે દીક્ષા લીધા પછી ખુબ જપ અને તપ કર્યાં અને સમાધિપૂર્વક અનશન કરીને સારી ગતિને પામ્યો.

હે ભવ્ય જીવો! આવી ભગવાનની વાણી સાંભળીને અનેક જીવોનું કલ્યાણ થઈ ગયું છે. જુઓ, રોહિણેય ચોરે ભાવ વિના પણ ભગવાનનાં વચનો સાંભળ્યાં છતાં પણ તે સારી ગતિને પામ્યો.

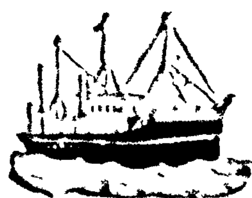
કહ્યું છે કે—

मिथ्यामत नासवे को, ज्ञानके प्रकासवे को आपापर भासवे को मानसी बखानी है।
छहो द्रव्य जानवे को, बंधविधि भानवे को आपापर ठानवे को परम प्रमानी है॥

अनुभो वतायवे को, जीवके जतायवे को काहु न सतायवे को भव्य उर आनी है।
जहां तहां तारवे को, पारके उतारवे को सुखके विस्तारवे को यही जिनवानी है॥
[कवित्त ३१ मो]

આવી રીતની શ્રી તીર્થંકર ભગવાનની વાણી છે. એટલા માટે પર્યુંષણ મહાપર્વ આવે ત્યારે ભગવાનની વાણી અવશ્ય શ્રવણ કરવી જોઈએ; જેથી આ ભવમાં આત્માનું કલ્યાણ થઈ જાય.

[આ પ્રમાણે બીજા દિવસે બીજું વ્યાખ્યાન પૂર્ણ થયું.]



तृतीय व्याख्यान–प्रारम्भ

[हिन्दी] पर्युषण पर्व के अनेक भवों को नष्ट करे ऐसी भावना करनी चाहिये। अहो! यह चतुर्गति रूप विकराल संसार असार है। इस संसार में स्वजन, सम्पत्ति, ऋद्धिवृद्धि, यह सब अनित्य है, देखो! भावना भावते हुए भी छः खण्ड का स्वामी भरत चक्रवर्ती सुखी हुआ। जिसका कथानक कहते हैं :—

इस जम्बूद्वीप के दक्षिणार्ध में भरत खण्ड में अयोध्या नाम की एक नगरी थी। उसमें राजा भरत चक्रवर्ती राज्य करता था। उसके समीप में चौरासी लाख हाथी, चौरासी लाख घोड़े, चोरासी लाख रथ, और छियानवे करोड़ पैदल सैनिकों की फौज थी। नवनिधान, चौदह रत्न थे। बत्तीस हजार मुकुट बद्ध राजा उनकी सेवामें थे। छियानवे करोड़ ग्रामो का वह मालिक था। उसके एक लाख बानवे हजार रानियां थी। उनके साथ वह आनन्द विलास किया करता था। इस तरह अनेक ऋद्धियों से सम्पन्न वह राजा राज्य का परिपालन करता था। इसी तरह राज्य चलाते उसे ८३ लाख पूर्व व्यतीत हो गये। एक पूर्व सित्तर लाख करोड वर्ष और छप्पन करोड वर्ष मिलाने से होता है। इतने पूर्वतक उसके स्वास्थ्य में जरा सी भी हानि नहीं हुई। सिर दर्द तक नहीं हुआ। एक दिन वह श्री भरत चक्रवर्ती स्नान मज्जन कर वस्त्राभूषणों से सुसज्जित हो अपने आरीसा भवन में गया। आरीसा भवन काच का बना विशाल महल था। इस महल में ५०० धनुष माप तक लम्बा चौड़ा और रत्नों से खचित एक काच था उस दर्पण में राजाने अपने स्वरूप को देखा। उसे देखकर वह परमानन्द को प्राप्त हुआ। शरीर की शोभा निहारते निहारते उसकी दृष्टि अपनी हाथों की अंगुलियों पर पड़ी। वहां उसने देखा कि सबसे छोटी कनिष्ठिका अंगुलि में एक मुद्रिका नहीं है, बाकी सब अंगुलियां मुद्रिकाओं से सुसज्जित है। अतः यह कनिष्ठिका अंगुली असुन्दर लग रही है। तब भरतजीने विचार किया अरे! यह सब शरीर की शोभा आभूषणो पर आश्रित है।

त्रीजुं व्याख्यान :—

[गु०] पर्युषण पर्व आवे त्यारे अनेक भवो नष्ट थाय एवी भावना भाववी जोईए. अहो, आ चतुर्गति रूप विकराळ संसार छे.

આ સંસારમાં સ્વજન, સંપત્તિ, રિદ્ધિ, સિદ્ધિ આ બધું અનિત્ય છે. જુઓ. ભાવના ભાવતાં ભાવતાં છ ખંડનો સ્વામી ભરત ચક્રવર્તી સુખી થયો. જેનું કથાનક નીચે મુજબ છે :-

આ જંબુદ્વીપના દક્ષિણભાગમાં ભરતખંડમાં અયોધ્યા નામે એક નગરી હતી. તેમાં રાજા ભરત ચક્રવર્તી રાજ્ય કરતા હતા. તેની પાસે ચોરાશી લાખ હાથી, ચોરાશી લાખ ઘોડા. ચોરાશી લાખ રથ. અને છન્નુ કરોડ સૈનિકોની ફોજ હતી. નવનિધાન ચૌદ [illegible]

अहो ! इस असार शरीर पर जीवों को कितनी ममता है। इन जीवधारियो को अपना यह शरीर कितना प्यारा लगता है ? परन्तु यह शरीर पके हुए पत्ते की तरह चंचल है, चाहे जितना शरीर पर चन्दन लगाया जाय अथवा मृगमद आदि सुगंधित द्रव्य लगाओ पर इसकी दुर्गन्धि मिट नहीं सकती। शरीर रूप खड्डे के भीतर यह जीव मडखरा जानवर की तरह पड़ा है। मैंने इसी शरीर के लिये पृथ्वी पर ६० हजार वर्ष तक अनेक राजाओं को पराजित किये। उनसे संग्राम किये परन्तु मेरे तो एक भी काम नहि आवेंगे। बाहुबली जैसे ९९ मेरे छोटे भाइयों को धन्य है, जिन्होंनें संसार के जाल से अपने को विमुक्त करके दीक्षा स्वीकार की।

[ગુ૦] જોઉં, આ બધા આભૂષણો ઉતારી નાખવાથી શરીરની શોભા કેવી લાગે છે ? એણે વિચાર કરીને મુગટ, કુંડલ, બાજુબંધ, હાર, કડાં, બેરખા વગેરે બધાં આભૂષણો એક પછી એક ઉતારી નાંખ્યાં. ત્યારે ફાગણ માસમાં વૃક્ષની શોભા જેવી દેખાય છે તેવી શરીરની શોભા દેખાવા લાગી. ભરતજીએ પોતાના શરીરની આ સ્થિતિ જોઇને વિચાર કર્યો કે અરે, આ અસાર શરીર ઉપર જીવોને કેટલી મમતા છે ? જીવ-ધારીઓને પોતાનું શરીર કેટલું વહાલું લાગે છે ? પરંતુ આ શરીર પાકેલા પાંદડા જેવું ચંચલ છે. આ શરીર પર ગમે તેટલું ચંદન લગા-ડવામાં આવે અથવા કસ્તુરી વગેરે સુગંધિત દ્રવ્યો લગાડવામાં આવે છતાં તેની દુર્ગંધ મટતી નથી. શરીર રૂપી પિંજરની અંદર આ જીવ મરવા પડેલા જાનવરની જેમ પડ્યો છે. મેં આજ શરીર માટે પૃથ્વી ઉપર સાઠ હજાર વર્ષ સુધી અનેક રાજાઓને પરાજિત કર્યા. તેમની સાથે લડાઇઓ કરી, પણ મારા તો કામમાં એમાંનો એક પણ ન આવ્યો. બાહુબલી જેવા મારા નવ્વાણુ નાના ભાઇઓને ધન્ય છે, જેમણે સંસા-રની જાળમાંથી પોતાને મુક્ત કરીને દીક્ષા ગ્રહણ કરી.

[हिन्दी] उन लोगों नें अपनें कर्मों का क्षय किया और अक्षय सुख प्राप्त किया। मैं अभी तक इस मोहजाल में फंसा हुआ हूं। यह राजलक्ष्मी, यह युवावस्था, ये सब चंचल और अस्थिर हैं। पिता-माता, स्त्री, भाई, बहिन, पुत्र-पुत्री, धन, हाथी, घोड़े, रथ, पैदल और सेवक आदि सभी भवरूप कूप में पड़े हुए को उबारनें में समर्थ नहीं होंगे। सब अपने अपने स्वार्थ के साधक हैं। अरे ! मैं [illegible] हूं। देखो मेरे पिताजी श्री रिषभदेव स्वामिने संसार के सब जन्तुओं को

तार दिया, परन्तु उन्होंने मुझे पापी समझकर मेरा उद्धार नहीं किया। परन्तु ऋषभ-देवस्वामी तो रागद्वेष रहित हैं, उनके लिये सब जीवों पर समान भाव है। ये स्वजन–सम्बन्धी वर्ग कोई भी मेरे नहीं हैं, मेरी आत्मा स्फटिक रत्न के समान निर्मल है। दर्शनादि गुण युक्त है, परपुद्गल से भिन्न है, आर्त रौद्र ध्यान से क्रोधादि करने से यह आत्मा पाप कर्म युक्त हो कर भवभ्रमण करता है। धर्मध्यान से यह आत्मा पापकर्म रहित होता है। अरे चेतन! तूं किसी का नहीं, तेरा कोई भी नहीं, निष्केवल बन कर तूं अपने गुणों में रमण कर जिससे तेरा [illegible] हो। इस तरह से अनित्य भावना (भाते भाते) भावते भावते शुक्लध्यान के [illegible] चरण पर चेतन की परिणति चढी। योगों की निश्चलता हो गई। [illegible] चढ़ और तेरहवें गुणस्थान पर चढ़ते ही केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। [illegible] लोकों में रहे हुए सारे पदार्थ सम्पूर्ण रूप से दिखने लगे। [illegible] जीको सौधर्मेन्द्र ने आकर ओघा और मुहपत्ति दी। [illegible] स्वीकार की। देवताओ ने दीक्षा एवं केवलज्ञान का [illegible] महाराजने ग्राम ग्राम में विहार किया और [illegible]
[illegible]

રમણ કર જેથી તારા આત્માનું કલ્યાણ થાય. આ પ્રમાણેની અનિત્ય ભાવના ભાવતાં ભાવતાં શુકલધ્યાનના બીજા ચરણ ઉપર ચેતનની પરિણતિ ચડી, અને યોગની નિશ્ચલતા થઇ ગઇ. ક્ષપકશ્રેણી ઉપર ચડયા અને તેરમા ગુણસ્થાન પર ચઢતાં જ કેવળજ્ઞાન પ્રાપ્ત થયું. ત્યારે ત્રણે લોકમાં રહેલા બધા પદાર્થો સંપૂર્ણ સ્વરૂપે તેમને દેખાવા લાગ્યા. પછી ભરતઋષિને સૌધર્મેન્દ્રે આવીને ઓઘો અને મુહપતિ આપી; જે લઇને તેમણે દીક્ષાનો સ્વીકાર કર્યો. દેવતાઓએ દીક્ષા અને કેવળજ્ઞાનનો ઉત્સવ કર્યો, પછી ભરતજી મહારાજે ગામોગામ વિહાર કર્યો અને અનેક ભવ્ય પ્રાણીઓને પ્રતિબોધ આપીને દીક્ષા ગ્રહણ કરાવી.

[हिन्दी] अनुक्रम से वे अष्टापद पर्वत पर साधुओं के परिवार सहित एक मास तक अनशन कर श्रवण नक्षत्र आते ही मोक्ष को प्राप्त हुए। वे सिद्ध बुद्ध हुए, समस्त कर्मों से रहित हुए, शाश्वत सुख को प्राप्त हुए, जन्म मरण से रहित हुए। अनन्तर श्री भरतजी महाराज का निर्वाणोत्सव देवताओं नें किया। उन्होंनें अनशन के स्थान पर मन्दिर बनाया। तथा भरतजी के साथ साधुओं ने भी अनशन किया था उनका एक स्तूप बनाया।

श्री भरतजी महाराज सत्तत्तर लाख (७७) पूर्व तक तो कुमारपने में रहे, एक हजार वर्ष मंडलिक राजापने में रहे, उन्होंनें एक हजार वर्ष तक कम छः लाख पूर्व तक चक्रवर्ती पदवी भोगी। एक लाख पूर्व तक वे केवलज्ञानीपने में रहे, उनकी सारी आयु ८४ चौरासी लाख पूर्व की हुई, जिसे उन्हों नें विना बाधा के भोगा।

इस का मतलब यह है कि हे भव्यो! श्री भरत चक्रवर्ती की कथा सुनकर जो आत्मा में वैराग्यभाव लावेगा और भावना भावेगा वह अनन्त अविचल सुख को प्राप्त करेगा।

[इति श्री भावना ऊपर श्री भरत चक्रवर्ती का दृष्टान्त समाप्त हुआ]

[ગુ૦] અનુક્રમે તેઓ અષ્ટાપદ પર્વત ઉપર સાધુઓના પરિવાર સાથે એક માસ સુધી અનશન વ્રત કરીને શ્રવણ નક્ષત્ર આવતાં જ મોક્ષ પદને પામ્યા. તેઓ સિદ્ધ-બુદ્ધ થયા, સમસ્ત કર્મોથી રહિત થયા, શાશ્વત સુખને પ્રાપ્ત થયા અને જન્મ-મરણથી રહિત થયા. ત્યાર પછી ભરતજી મહારાજનો નિર્વાણોત્સવ દેવતાઓએ કર્યો. તેમના અનશનના સ્થાન ઉપર

મંદિર બનાવ્યું તથા ભરતજીની સાથે સાધુઓએ પણ જેમણે અનશન કર્યું હતું તેમનો એક સ્તુપ બનાવ્યો.

શ્રી ભરતજી મહારાજ સત્યોતેર લાખ પૂર્વ સુધી કુમાર તરીકે રહ્યા. એક હજાર વર્ષ સુધી મંડલિક રાજા તરીકે રહ્યા અને છ લાખ પૂર્વમાં એક હજાર વર્ષ ઓછાં રહ્યાં ત્યાં સુધી ચક્રવર્તી પદ ભોગવ્યું. એક લાખ પૂર્વ સુધી તે કેવળજ્ઞાનીપણામાં રહ્યા. તેમનું આયુષ્ય ૮૪ લાખ પૂર્વનું થયું જે તેમણે કશી પણ મુશ્કેલી વિના ભોગવ્યું.

આનો અર્થ એવો છે કે હે ભવ્યો ! શ્રી ભરત ચક્રવર્તીનો [illegible] સાંભળીને જે આત્મામાં વૈરાગ્યભાવ લાવશે અને [illegible] અનંત અવિચલ સુખને પ્રાપ્ત કરશે.

ભરતજીના પુત્ર સૂર્યયશા રાજાને પોતાના પ્રાણથી પણ પ્યારી ઉર્વશીએ તપ કરવાની ના પાડી હતી છતાં પણ તેમણે તપ–અનુષ્ઠાન ન છોડયાં તેમ શ્રાવકોએ પણ તપ વગેરેનો ત્યાગ ન કરવો જોઈએ.

श्री भरत पुत्र सूर्ययशा की कथा :—

अयोध्यायां नगर्यां सूर्ययशा नृप आसीत्, स च त्रिखंडभूमिस्वामी नीतिवित् अखण्डशासनो दुष्टान् वैरिणः स्ववशे नीतवानिन्द्रेणोपढौकितं मुकुटं शिरसि धृतवान्, तस्य मुकुटस्यैव माहात्म्याच्च स नृपः सुरसेव्योऽप्यभूत्तस्य राज्ञो राधावेधपणात् प्राप्ता कनकविद्याधरपुत्री 'जयश्री' पट्टराज्ञी बभूव, अन्यान्यपि तस्य बहूनि कलत्राणि आसन्।

[हिन्दी] जम्बूद्वीप के दक्षिणार्ध भारत में बारह योजन लम्बी और नौ योजन चौडी अयोध्या नाम की एक नगरी थी। उसमें श्री भरत चक्रवर्ती का गद्दीधारी सूर्ययश राजा राज्य करता था। इस राजा को स्वयं इन्द्र ने ही उत्सव करके सिंहासन पर बिठाया था। इन्द्र नें अत्यन्त सुन्दर देव सम्बन्धी मुकुट इसे दिया। जिसे मस्तक पर धारण किया और उसी मुकुट के तेज प्रताप से सूर्य जैसा तेजस्वी दिखाई देने लगा। अतः उस राजा का नाम "सूर्ययश" पड़ा। यह राजा तीन खंड का स्वामी, सब प्रकार की नीति जानने वाला, अखंड शासन का प्रवर्तक था। राजा का राज्य निष्कंटक था। उसनें अपने सभी वैरियों को वश में कर लिया था। इन्द्रदत्त मुकुट के प्रभाव से यह राजा देवताओं में पूज्य हुआ। इस राजा नें राधा वेध को करके कनक विद्याधर की पुत्री "जयश्री" से विवाह किया। यही इस राजा की पटराणी थी। यों तो इस राजा के अन्य भी बहुत स्त्रियां थी। वह उनके साथ गृहस्थजनोचित भोगों को भोगता था।

શ્રી ભરતપુત્ર સૂર્યયશાની કથા

જંબુદ્વીપના દક્ષિણ ભાગમાં ભરતખંડમાં બાર યોજન લાંબી અને નવ યોજન પહોળી અયોધ્યા નામની એક નગરી હતી. તેમાં ભરત ચક્રવર્તીની ગાદી પર સૂર્યયશા રાજા રાજ્ય કરતો હતો. તે રાજાને સ્વયં ઇન્દ્રે જ ઉત્સવ કરીને ગાદી ઉપર બેસાડયો હતો. ઇન્દ્રે તેને દેવોને યોગ્ય અત્યંત સુંદર મુગટ પણ આપ્યો હતો. જેને તેણે મસ્તક ઉપર ધારણ

કર્યો અને તે મુગટના તેજના પ્રતાપથી તે સૂર્ય જેવો તેજસ્વી દેખાવા લાગ્યો. તેથી તે રાજાનું નામ 'સૂર્યયશા' પડ્યું. આ રાજા ત્રણ ખંડનો સ્વામી, બધા પ્રકારની નીતિને જાણવાવાળો અને અપાર શાસનનો પ્રવર્તક હતો. રાજાનું રાજ્ય નિષ્કંટક હતું. તેણે તેના બધા દુશ્મનોને વશ કરી લીધા હતા. ઇન્દ્રે આપેલા મુગટના પ્રભાવથી આ રાજા દેવોમાં પણ પૂજ્ય થયો. આ રાજાએ 'રાધાવેધ' કરીને કનક વિદ્યાધરની પુત્રી જયશ્રી સાથે વિવાહ કર્યો હતો. તે જ રાજાની પટરાણી હતી. આમ તો રાજાને બીજી ઘણીયે રાણીઓ હતી અને તે તેમની સાથે ગૃહસ્થને ઉચિત ભોગો ભોગવતો હતો.

અયોધ્યા નગરીમાં 'સૂર્યયશા' રાજાને ધર્મક્રિયા કરવામાં દક્ષ જોઇને અત્યંત આશ્ચર્ય થયું અને એ આશ્ચર્યથી ચકિત થઇને તેણે પોતાનું માથું હલાવ્યું.

[सं०] तदोर्वशी देवी विश्ववशीकरणसामर्थ्यं बिभ्राणा अकस्मात्सुरेन्द्रशिरःकम्पं दृष्ट्वा प्रोवाच, "स्वामिन्! साम्प्रतं शिरःकम्पनकारणं तु न किमपि दृश्यते ततः किं निमित्तं तुष्टेन नाथेन शिरःकम्पः कृतस्तदा सुरेन्द्र उवाच "मयाधुना ज्ञानदृष्ट्या भरतक्षेत्रे ऋषभस्वामिनः पौत्रो भरतचक्रिणः पुत्रोऽयोध्याधिपः सूर्ययशा नाम राजा सात्त्विकानां शिरोमणिर्दृष्टः।

[हिन्दी] तब उर्वशी देवी जो पूरे संसार को वशीकरण करने में समर्थ थी अकस्मात् राजा को आश्चर्य से शिर कम्पित करते देखकर बोली, "हे स्वामी! अभी २ कोई ऐसा गीत या नाटक आदि तो हुआ नहीं फिर आपने यह प्रसन्नतावस्था में शिर कम्प क्यों किया? तब सुरेन्द्र ने कहा, "अभी मैंने ज्ञानदृष्टि में भरतक्षेत्र में श्री ऋषभस्वामी के पौत्र और भरत चक्रवर्ती के पुत्र अयोध्या के स्वामी सूर्ययश नाम के राजा को सात्विक राजाओं के शीर्ष स्थान पर देखा हैं।

[ગુ૦] ત્યારે ઉર્વશીદેવી જે સમસ્ત સંસારનું વશીકરણ કરવામાં સમર્થ હતી તે અકસ્માત્ ઇન્દ્રને આશ્ચર્યથી માથું હલાવતો જોઇને બોલી "હે સ્વામી! હમણાં હમણાં એવું કોઇ ગીત કે નાટક થયું નથી. છતાં પ્રસન્ન થઇને આપે માથું કેમ હલાવ્યું? ત્યારે સુરેન્દ્રે કહ્યું: 'હમણાં મેં જ્ઞાનદૃષ્ટિથી ભરતક્ષેત્રમાં શ્રી ઋષભસ્વામીના પૌત્ર અને ભરત ચક્રવર્તીના પુત્ર અયોધ્યાના સ્વામી સૂર્યયશા નામના રાજાને બધા સાત્ત્વિક રાજાઓના અગ્રણી તરીકે જોયા.

[सं०] स चाष्टमी-चतुर्दशी-पर्वणोस्तपसः कृतबहुयत्नः सुरैरपि चालयितुं न शक्यते। यदि सूर्यः पूर्वदिशमतिक्रम्य पश्चिमायामभ्युदेति तथा मेरुर्गतिः कम्पते, समुद्रो वा मर्यादां त्यजेत्, कल्पवृक्षो वा निष्फलो भवेत्, तथाप्येष कण्ठगतैः प्राणैरपि जिनाज्ञावन् स्वकृतं निश्चयं न मुञ्चति।

[हिन्दी] वह राजा आठम, चौदश, उपवासादि तप यत्नपूर्वक: करता है, पौषध, प्रतिक्रमण करता है, ग्राम में ढोल बजा कर उसकी उद्घोषणा करता है, धार्मिक

लोगों को सूचित करता है कि आज पर्वी है अतः सभी पोषध प्रतिक्रमण आदि सब करें। इस तरह वह तपस्यापूर्वक पर्वाराधन करता है। यदि सूर्य पूर्व दिशा को छोड़ कर पश्चिम दिशा में उगे और मेरु पर्वत हवा से हिलने लगे, समुद्र मर्यादा छोड़ दे कल्पवृक्ष निष्फल हो जाय तो भी तथा इसके स्वयं के प्राण कण्ठ में आ जाय तो भी वह जिनाज्ञा की तरह अपने निश्चय को नहीं छोड़ेगा। इस तरह का दृढ़ निश्चयी मनुष्य जन्म में होना भारी आश्चर्य है यह देख कर ही इस हर्ष से मेरा सिर हिला है।

[ગુ૦] ઇન્દ્રના આવાં વચનો સાંભળીને મનમાં કાંઇક વિચાર કરીને ઉર્વશીએ જવાબ આપ્યો: 'હે સ્વામી, યોગ્ય–અયોગ્યના જ્ઞાનયુક્ત આપને મનુષ્યના નિશ્ચયની પ્રશંસા કરવી શું યોગ્ય છે? માણસોનું સપ્તધાતુ નિર્મિત શરીર અન્ન ઉપર નભે છે, તેથી તે આટલો દૃઢનિશ્ચયી બની શકે નહીં. મારાં ગીતો સાંભળતાં દેવતા વગેરે મુખ્ય મુખ્ય લોકો પણ પોતાની સૂધબૂધ ખોઇ બેસે છે, તેઓ વિચલિત થઇ જાય છે, તેમના ગુણો નષ્ટ થઇ જાય છે. તો પછી આની તો શું ગણતરી? માટે હું ત્યાં જઇને શીઘ્ર તેનો વ્રતભંગ કરાવીશ."

[સં૦] इति प्रतिज्ञां विधाय रम्भया सहिता उर्वशी हस्तेन वीणां दधाना स्वर्गाद्भूमिमवतरति स्म। अयोध्यानिकटोद्याने च श्रीऋषभस्वामिनश्चैत्ये मोहोत्पादकमत्यद्भुतं रूपं कृत्वा गायतिस्म। तद्गानमोहिताः पक्षिमृगसर्पाद्या अपि आलेख्य–लिखिता इव पाषाणघटिता इव वा निश्चलनेत्रास्तस्थुः॥

[हिन्दी] ऐसी प्रतिज्ञा करके उर्वशी देवी रम्भा नाम की अप्सरा के साथ हाथ में वीणा ले कर स्वर्ग से भूमि पर आई। अयोध्या के निकट बगीचे में श्री ऋषभदेव स्वामी के मन्दिर में मोह को उत्पन्न करने वाले अत्यन्त मनोहारी रूप धारण कर मधुर स्वर से गीत गाने लगी। उस के गीत राग से मोहित पक्षी, हिरण, सर्प आदि जन्तु भी चित्र लिखित से रह गये। अथवा पत्थर की मूर्तियों की तरह अपलक नेत्रवाले हो गये। वे मन दत्त चित्त हो कर गीत सुनने में मग्न हो गये।

[ગુ૦] આવી પ્રતિજ્ઞા કરીને ઉર્વશીદેવી રંભા નામની અપ્સરાની સાથે હાથમાં વીણા લઇને સ્વર્ગમાંથી પૃથ્વીપર આવી, અને અયોધ્યાની પાસેના બગીચામાં શ્રી ઋષભદેવ સ્વામીના મંદિરમાં મોહ ઉત્પન્ન કરવાવાળું અત્યંત મનોહારી રૂપ ધારણ કરીને મધુર સ્વરથી ગાવા લાગી. તેના ગીતરાગથી મોહિત થયેલાં પશુ, પક્ષી, હરણ, સર્પ વગેરે જીવજંતુઓ પણ ચિત્રમાં ચીતર્યાં હોય તેવાં સ્થિર થઇ ગયાં. અને પત્થરની મૂર્તિની જેમ જરા પણ હાલ્યા વગર અપલક નેત્રવાળાં થઇ ધ્યાન પૂર્વક તેનું ગીત સાંભળવામાં મસ્ત થઇ ગયાં.

[સં૦] अथ श्री सूर्ययशा अश्वं वाहयित्वा पश्चाद्वलमानः पथि तयोर्गतिमधुरगानध्वनीन् शुश्राव। तदा वाजिगजपत्तयः पदमपि यानेऽसमर्था अभूवन्, एतत्स्वरूपं

दृष्ट्वा नृपोऽमात्यं प्रति सादरमुवाच, "भो मन्त्रिन् ! संसारे नादसमः सुखदः कोऽपि न दृश्यते, यद्वशात्पशवोऽप्यमी ईदृग्मोहिताः सन्ति। नादेन देव-दानव-नृप-प्राणि-न्यादयः सर्वेऽपि प्रायो वशीभवन्ति। ततो वयमपि ऋषभस्वामिनं नमस्कर्तुं तत्र चैत्ये यामस्तत्र गता एतद्गेयस्वादमपि लप्स्यामहे।

[हिन्दी] इधर से श्री सूर्ययशा राजा भी घोड़े के [illegible] था तो रास्ते में उसने भी कानों को मीठी लगने वाली व हृदय में आनन्द व [illegible] उत्पन्न करने वाली गीत की ध्वनि सुनी। इस गान की ध्वनि सुनकर [illegible] राजा के घोड़े, हाथी और मनुष्य सब एक पांव भी आगे चलने से [illegible] हुए। ऐसा देखकर राजाने आदर पूर्वक अपने प्रधान से कहा "[illegible] के समान सुख देनेवाली कोई वस्तु नहीं दिखाई देती, जिसके [illegible] तरह से मोहित हो जाते हैं। गीत से देवता, दानव, राजा [illegible] वश में हो जाती है। अब अपन भी श्री ऋषभ देवस्वामी से [illegible] इस गीत के रस का स्वाद भी लें।

मंत्रिणे आदिष्टवान् । मंत्र्यपि नृपादेशात्तयोः समीपं गत्वा सुधामधुरया वाचा संभाष्य इत्थमालपत् । हे कन्यके ! युवां के ? युवयोः पतिः कः ? किमर्थमिहागमनं चैत्ये ? तत्सर्वं वदत । अथ मन्त्रिवचः श्रुत्वा तयोरेका उवाच आवां मणिचूड़विद्याधरराजस्य पुत्र्यौ, आबाल्यात् कलास्वेवादरवत्यौ अभूतां, क्रमेण यौवनं प्राप्ते वीक्ष्यास्मत्पिता वरचिन्तां कर्तुं लग्नः । आवां स्वसदृशं पतिमलभमाने स्थाने २ अर्हच्चैत्यानां नमस्याभिर्निजं जन्म सफलं कुर्वहे ।

[हिन्दी] ऐसी मन्त्रणा करके उसके गान से मोहित राजा, मन्त्री के साथ जिन चैत्य के भीतर गया । वहां सुन्दरता में कामदेव की पत्नियों के समान दिव्य सौन्दर्य वाली, हाथ में वीणा लेकर सरस रागयुक्त गाती हुइ ऐसी दो कुमारी कन्याओं को देखा । उन्हें देखते ही उनके स्नेह युक्त फेंके गये काम बाणों से विद्ध हृदयवाला राजा विचार करने लगा । इनका यह अत्यन्त अद्भुत और सुन्दररूप किस पुण्यवान् प्राणी के भोग योग्य है ? अब राजा बारम्बार अपनी आंखो से उनके रूपको देखता हुआ भगवान के चरणों की वन्दना करके चैत्य से बाहर आया । वहां एक स्थान पर बैठकर इन कुमारिका के कुल आदि को जानने के लिये मंत्री को आज्ञा दी ।

પોતાની આંખોથી તેમના રૂપને નિરખતો ભગવાનના ચરણોમાં વંદન કરીને મંદિરની બહાર આવ્યો. ત્યાં એક સ્થાન ઉપર બેસીને આ કન્યાઓના કુળ વગેરે જાણી લાવવાની મંત્રીને આજ્ઞા દીધી.

પ્રધાન પણ રાજાની આજ્ઞા મળતાં તેમની પાસે ગયો. ત્યાં જઈને તેણે મધુર વાણીથી આ પ્રમાણે પ્રશ્ન કર્યો: 'હે કન્યાઓ, તમે કોણ છો? તમારા પતિ કોણ છે? શા માટે તમે અહીં મંદિરમાં આવ્યા છો? [illegible] બધું મને કહો.' પછી મંત્રીનાં વચનો સાંભળીને તેમાંથી એક [illegible] કહ્યું: 'અમે મણિચૂડ વિદ્યાધરરાજાની પુત્રીઓ છીએ. [illegible] સંગીત વગેરે કલાઓમાં અમને આદર છે [illegible] એટલે અમારા પિતાએ અમારે યોગ્ય વરની શોધ કરી [illegible] નિષ્ફળ ગયા. આથી અમે અમારે યોગ્ય પતિ ન [illegible] અર્હંત ભગવાનનાં મંદિરોમાં જઈને ભગવાનની [illegible] જન્મ સાર્થક કરીએ છીએ.

मंत्रिणे आदिष्टवान्। मंत्र्यपि नृपादेशात्तयोः समीपं गत्वा सुधामधुरया वाचा संभाष्य इत्थमालपत्। हे कन्यके! युवां के? युवयोः पतिः कः? किमर्थमिहागमनं चैत्ये? तत्सर्वं वदत। अथ मन्त्रिवचः श्रुत्वा तयोरेका उवाच आवां मणिचूड़विद्याधरराजस्य पुत्र्यौ, आबाल्यात् कलास्वेवादरवत्यौ अभूतां, क्रमेण यौवनं प्राप्ते वीक्ष्यासमत्पिता वर-चिन्तां कर्तुं लग्नः। आवां स्वसदृशं पतिमलभमाने स्थाने २ अर्हच्चैत्यानां नमस्यामि-र्निजं जन्म सफलं कुर्वहे।

[हिन्दी] ऐसी मन्त्रणा करके उसके गान से मोहित राजा, मन्त्री के साथ जिन चैत्य के भीतर गया। वहां सुन्दरता में कामदेव की पत्नियों के समान दिव्य सौन्दर्य वाली, हाथ में वीणा लेकर सरस रागयुक्त गाती हुइ ऐसी दो कुमारी कन्याओं को देखा। उन्हें देखते ही उनके स्नेह युक्त फेंके गये काम बाणों से विद्ध हृदय-वाला राजा विचार करने लगा। इनका यह अत्यन्त अद्भुत और सुन्दररूप किस पुण्यवान् प्राणी के भोग योग्य है? अब राजा वारम्वार अपनी आंखो से उनके रूपको देखता हुआ भगवान के चरणों की वन्दना करके चैत्य से बाहर आया। वहां एक स्थान पर बैठकर इन कुमारिका के कुल आदि को जानने के लिये मंत्री को आज्ञा दी।

प्रधान भी राजा की आज्ञा से उनके पास गया। वहां उसने उनसे मधुर-वाणी से इस प्रकार प्रश्न किये। हे कन्याओं! तुम कौन हो? तुम्हारे पति कौन हैं? किस लिये तुम यहां चैत्य में आई हो। यह सब मुझे बताओ। इसके बाद मंत्री के वचन सुनकर उन दोनों में से एकने कहा। हम मणिचूड़ विद्याधरराज की पुत्रियां हैं, बचपन से ही संगीत एवं कला में आदर वाली हैं, क्रम से हम जवानी को प्राप्त हो गई, यह देखकर हमारे पिताने हमारे योग्य वर की खोज की, किन्तु वे असफल रहे। हम भी अपने योग्य पति के अभाव में स्थान स्थान पर अर्हत् चैत्यों में जाकर भगवान् को वन्दन कर अपना जन्म सफल कर रही हैं।

[ગુ૦] આવી મંત્રણા કરીને ઉર્વશીના ગાનથી મોહિત થયેલો રાજા પોતાના મંત્રી સાથે મંદિરમાં ગયો. ત્યાં જઈને સુંદરતામાં કામ-દેવની પત્નીઓ જેવા સૌંદર્યવાળી અને હાથમાં વીણા લઈને સરસ રાગથી ગાતી બે કુંવારી કન્યાઓને રાજાએ જોઈ. તેને જોઈને જ તેમણે ફેંકેલા સ્નેહયુક્ત કામબાણોથી વીંધાયેલા હૃદયવાળો રાજા વિચાર કરવા લાગ્યો. આ કન્યાઓનું અત્યંત અદ્ભુત અને સુંદર રૂપ કયા પુણ્ય-શાળી પ્રાણીના ભાગ્યમાં ભોગવવાનું લખ્યું હશે? હવે રાજા વારંવાર

પોતાની આંખોથી તેમના રૂપને નિરખતો ભગવાનના [illegible] કરીને મંદિરની બહાર આવ્યો. ત્યાં એક પ્રધાન [illegible] કન્યાઓના કુળ વગેરે જાણી લાવવાની મંત્રીને આજ્ઞા કરી.

પ્રધાન પણ રાજાની આજ્ઞા મળતાં તેમની પાસે [illegible] તેણે મધુર વાણીથી આ પ્રમાણે પ્રશ્ન કર્યો: 'હે કન્યાઓ [illegible] તમારા પતિ કોણ છે? આ માટે તમે અહીં મંદિરમાં [illegible] બધું મને કહો.' પછી મંત્રીના વચનો સાંભળીને [illegible] કહ્યું: 'અમે મણિચૂડ વિદ્યાધરરાજની પુત્રીઓ [illegible] સંગીત વગેરે કળાઓમાં અમને આદર [illegible] [illegible] નિષ્ફળ ગયા. આથી અમે આજે [illegible] ભગવાનના મંદિરમાં [illegible] [illegible].

अब मेरा तो यह निश्चय है कि आप दोनों पर श्री ऋषभदेव स्वामी प्रसन्न हैं, अतः अकस्मात् आपको सूर्ययशा जैसा राजा वर रूप से प्राप्त हुआ है। मंत्री के ऐसा कहने पर उन्होंने कहा कि हम तो ऐसा पति चाहती हैं जो हमारे कथनानुसार चले, हमारे आधीन रहे। मंत्रीनें कन्याओं के विचार राजा से कहे, और राजानें भी कहा कि जिस तरह ये कन्याएं कहेंगी वैसा ही करूंगा। जब दोनों और से परस्पर बातें हो गई तो वहां ही श्री जिनेश्वर आदिनाथ के सम्मुख ही उनका विवाह हो गया।

[ગુ૦] માનવજન્મ વારંવાર મળવો કઠણ છે. આ અયોધ્યા નગરી પણ તીર્થ જેવી છે. તેથી અહીં શ્રી ભરત ચક્રવર્તીએ બનાવેલા આ ચૈત્યમાં આદિ જિનેશ્વરનું વંદન કરવા માટે અમારું આગમન થયું છે.

આવી રીતે જ્યારે તેમણે મંત્રીને પોતાની હકીકત કહી ત્યારે મંત્રીએ કહ્યું: 'આપ આ સૂર્યયશા રાજાની સાથે વિવાહ કરી લ્યો તો ઘણું સારું થશે; કારણ કે આ રાજા ઋષભદેવ સ્વામીનો પૌત્ર અને ભરત ચક્રવર્તીનો પુત્ર છે. એટલું જ નહિ પણ એ બધી કલાઓમાં પ્રવીણ છે અને તેનો પૂરો જાણકાર છે. તે સુંદર છે અને સદ્‌ગુણોથી યુક્ત તથા બળવાન પણ છે. મને તો લાગે છે કે તમારા બન્ને પર ઋષભદેવ સ્વામી પ્રસન્ન છે એટલે અનાયાસે જ તમને આ સૂર્યયશા જેવો રાજા વરના રૂપમાં પ્રાપ્ત થયેલ છે.'

મંત્રીનું આવું કહેવું સાંભળીને તેમણે કહ્યું: 'અમે તો એવો પતિ ઇચ્છીએ છીએ કે જે અમે કહીએ તેમ કરે અને અમારે આધીન રહે.'

મંત્રીએ કન્યાઓનો વિચાર રાજાને કહ્યો ત્યારે રાજાએ કબૂલ કર્યું કે જે પ્રમાણે કન્યાઓ કહેશે તેમ જ હું કરીશ. જ્યારે બન્ને બાજુએથી પરસ્પર વાતો થઇ ગઇ ત્યારે ત્યાંજ શ્રી જિનેશ્વર આદિનાથની સામે જ તેમનો વિવાહ થઇ ગયો.

[मं०] ततस्तयोः प्रीतिरसाकृष्टो भूपतिः संसारे तद्भोगमेव सारं मन्यमानोऽहर्निशं ताभ्यां सह विविधान् भोगान् भुञ्जानो विस्मृतान्यकृत्यः सुखेन कालं निनाय। एकदा संध्यासमये ताभ्यां पत्नीभ्यां युतः सूर्ययशानृपो गवाक्षं ययौ। तदा "भो लोकाः! श्वोऽष्टमीपर्व भावि तत्समाराधने सादरैर्भाव्यमिति पटहोद्घोषणां ताभ्यां कपटस्त्रीभ्यां

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] पौर्णमासी, अष्टाह्निकाद्वयं, [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
एतानि अन्यान्यपि पर्वाणि सन्ति। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
पर्वदिनेषु विहितं पुण्यं स्वर्ग–मोक्ष–सुखदं भवेत्।

કરવા માટે પંચમી શ્રેષ્ઠ છે. આ પર્વના દિવસોમાં કરેલું પુણ્ય સ્વર્ગ અને મોક્ષ આપવાવાળું અને સુખ દેનારું હોય છે.

[सं०] तस्माच्चतुष्पर्व्यामखिलं गृहव्यापारं परित्यज्य शुभं कर्म विधेयम्। पुनश्चतुःपर्व्यां स्नान स्त्रीसंग-कलह-द्यूत-क्रीडापहास्य मात्सर्य-क्रोधादि-कषाय-संग-प्रमादादि न किमपि कर्तव्यं, प्रियेष्वपि ममता न विधेया, परमेष्ठि-स्मरणादि-शुभध्यानवता भाव्यं सामायिकं पौषधं च षष्ठाष्टम-प्रमुखं तपश्च कर्तव्यं जिनपूजाश्च विधेया इत्थमेतानि पर्वाण्याराधयन् जनः पुण्यान्यर्जयति ततः क्रमेण कर्माणि क्षपयित्वा मुक्तिं याति।

अतो हे कान्ते! सप्तम्यां त्रयोदश्यां च लोकप्रबोधाय अयं पटहोद्घोषो मदादेशात् प्रजायते। अथोर्वशी एतन्नृपवचः श्रुत्वा तन्निश्चयचमत्कृतापि मायावचनप्रपञ्चेन जगाद, 'हे नाथ! इदं मनुष्यत्वमिदं रूपमिदं राज्यं सर्वं तपःक्लेशादिभिस्त्वया कथं विडम्ब्यते! यथेच्छं सुखानि भुंक्ष्व पुनर्मानवो भवः क्व? राजसद्भोगाश्च क्व?

[हिन्दी] इसलिये चारों पर्वों में सारे गृह व्यापार (कर्म) छोड़कर शुभ कर्म करने चाहिये। क्योंकि इन दिनों में थोडे से धर्म आराधन कर्म करने से भी मनुष्य को अधिक फल की प्राप्ति होती है। वह नरक और तिर्यंच के बंध से मुक्त हो जाता है, शुभायु उसे मिलती है, देवलोक की प्राप्ति होती है। अतः मानवों को अन्य व्यापार (कर्म) रोकने चाहिये। फिर इन चारों पर्वों में शरीर शुश्रुपार्थ स्नान नहीं करना चाहिये, परस्त्री व स्वस्त्री का गमन का त्याग करना चाहिये। लोगों की मजाक उड़ाना, उनसे हंसी करना, उनकी मस्करी करना यह सब छोडना चाहिये। गाली गलौच करना, जुआ खेलना, वैरभाव करना, ईर्ष्याभाव करना, क्रोध आदि कषायों को भी छोड़ देना चाहिये। दुष्ट आदमियों की संगति नहीं करनी चाहिये। धर्म के कार्यों में प्रमाद (गफलत) नहीं करना चाहिये। अपने स्नेहीजनों में ममता भाव भी नहीं रखना चाहिये। इन दिनों में ॐ नवकार मंत्र का ध्यान, जप व आराधना करनी चाहिये। निरतिचार सामायिक, पौषध करना, छठ अट्ठमादि तपस्या कर्म देवों के लिये करना चाहिये। फिर जिन भगवान की पूजा व उनको वन्दन करना चाहिये। स्वामिवच्छल, नवकारसी, प्रभावना आदि धर्म कार्य करना चाहिये। शास्त्र व व्याख्यान सुनना चाहिये। इस तरह के धर्मकृत्य इन पर्वतिथियों का आराधना करते वक्त यदि मनुष्य करे तो उसमें धर्म और पुण्य के अंकुर की वृद्धि होती है। अनुक्रम से चिकने कर्मों को समाप्त कर वह मोक्ष को प्राप्त करता है।

इस लिये कान्ते! सातम और तेरस के दिन लोगों को प्रबोध देने के लिये

मेरी आज्ञा से यह [illegible] दीक्षा। राजा के इन वचनों को सुनकर [illegible]
निश्चय को समझकर स्वयं चमत्कृत होती हुई भी उनकी [illegible]
बोली हे नाथ! यह मनुष्य जन्म कितना दुर्लभ है? [illegible]
लक्ष्मी, ये उत्तम भोगविलास, ये सब [illegible] किसे हैं [illegible]
संयम करके इन प्राप्त साधनों और सामग्रियों को [illegible]
आप तो स्वेच्छानुसार सुख भोग भोगिये, [illegible]
मिलते हैं? (इसलिये अब आप इस दुराग्रह को [illegible]
भी तपस्यादि धर्म कर्म छोड़ दो।)

વચનો સાંભળીને અને તેનો દૃઢ નિશ્ચય જાણીને પ્રભાવિત થતી ઉર્વશી પ્રપંચથી કપટ વચનો બોલી : 'હે નાથ, આ મનુષ્યજન્મ કેટલો દુર્લભ છે ? પછી આવું સુંદર રૂપ, આ રાજ્યલક્ષ્મી, આવા ઉત્તમ ભોગવિલાસ- આ બધું વારંવાર ક્યાં મળે છે ! માટે આપ તપરૂપી ક્લેશ કરીને આ બધી પ્રાપ્ત થયેલી સામગ્રીઓ તથા સાધનો નકામા ગુમાવો નહીં. હે રાજા ! આપે તો સ્વેચ્છાનુસાર આ સુખો ભોગવવાં જોઇએ. આવાં રાજ્ય-સુખ અને ભોગો વારંવાર થોડાં જ મળે છે ? માટે આપ આ ઉદ્ઘોષકને મના કરી દો અને તમે પોતે પણ તપ વગેરે ધર્મકર્મને છોડી દો."

[सं०] अथ कर्णयोस्तप्तत्रपुतुल्यं तस्या वचनं श्रुत्वा नृप उवाच रे रे ! धर्मनिन्दा-मालनस्वभावे ! अधमे ! इयं तव वाणी मनागपि विद्याधरकुलाचारोचिता न दृश्यते । तव सकलं चातुर्यं धिक्, रूपं वयः कुलं च धिक्, येन त्वं जिनपूजादिकं सद्धर्मकृत्यं निंदसि, पुनर्मनुष्यत्व–सद्रूपारोग्य--राज्यादीनि तपसा प्राप्यन्ते तत्तपः कः कृतज्ञो नाराधयेत् ? यो नाराधयेत् स कृतघ्न एव, धर्माराधनतो हि देहस्य विडम्बनं न स्यात् । धर्म विना केवलं विषयैस्तु विडम्बनमेव, तस्माद्यथेच्छं धर्मः कर्तव्यः । पुनः पुनर्मानवो भवः क्व ? व्रतधारका मृगसिंहादिबाला अपि अष्टम्यां पाक्षिके चाहारं न गृह्णन्ति, तर्हि अहं कथं गृह्णामि ?

[हिन्दी] इसके बाद कानो में तपाये हुए सींसे को उडेलने के समान कर्ण कटु उन वचनों को सुनकर राजा बोला, "अरे ! रे ! धर्मनिन्दा से मलिन स्वभाव वाली ! हे नीच ! यह तुम्हारी वाणी थोडी सी भी विद्याधर कुल स्वभाव के अनुरूप नहीं है । तुम्हारी सारी चतुराई को धिक्कार हैं, तुम्हारे रूप को, तुम्हारी उम्रको धिक्कार है, तुम्हारे कुल को धिक्कार हैं, जो तुम जिनपूजादिक सद्धर्मकृत्यों की निन्दा करती हो। यह मनुष्यजन्म और यह सुन्दर रूप, यह राज्य और यह तपस्या, जिस तप के प्रभाव से प्राप्त होती हैं उस तपस्या को कौन अधम व मूर्ख पुरुष नहीं करें ? अर्थात् अधम और मूर्खों को छोडकर सभी उसकी आराधना करते हैं । जो आदमी धर्म की आराधना नहीं करता हैं वह कृतघ्न है । यह निश्चय हैं कि धर्म की आराधना से मनुष्यो को किसी तरह की विडम्बना नहीं हो सकती । धर्म के बिना विषयों की आराधना तो एक तरह की विडम्बना ही हैं (क्योंकि राज्य सम्पत्ति अस्थिर हैं, इस पृथ्वी पर अनेक राजा हो गये हैं । उन्होने राज्य के लिये उसकी रक्षा के लिए अनेक संग्राम भी समय २ पर किये हैं परन्तु राज्यलक्ष्मी

आज तक गई नहीं।) इससे धर्मपालन ही श्रेष्ठ है यही कर्त्तव्य है क्योंकि मनुष्य जन्म मिलना दुर्लभ है। (कोई पूर्व पुण्ययोग से ही यह मनुष्यादि प्राप्त हुए हैं सो अगर अब भी धर्मकृत्य नहीं करेंगे तो कब करेंगे।) देखो मृग सिंह आदि पशु और पक्षी भी अष्टमी और चतुर्दशी को आहार ग्रहण नहीं करते हैं तो मैं मनुष्य हो कर इस तप रूप धर्म को कैसे छोड़ूँ। अतः मैं इन दिनों में आहार ग्रहण कैसे कर सकता हूँ।

कुर्वे, हे स्त्री! मम राज्यं प्रयातु प्राणक्षयोऽस्तु परं पर्वतपसोऽहं भ्रष्टो न भवामि। तत इत्थं क्रोधाकुलं नृपवचः श्रुत्वा उर्वशी मोहमायां प्रकुर्वन्ती पुनरुवाच, स्वामिन्! भवतः कायक्लेशो माभूदिति प्रेमरसत एव मयैतद्वचः प्रोक्तं, तस्मात् क्रोधावसरोऽत्र नास्ति। पूर्वं तु आवाभ्यां पितृवचः विमुखीभ्यां स्वच्छन्दचाचारी नृपतिर्न वृतः साम्प्रतं पूर्वकर्मपरिपाकात् त्वं वरो वृतस्तेनावयोः संसारसौख्यं शीलं च सर्वमकस्माद् गतं यदि स्वाधीनपुंस्त्रियोर्योगो भवेत्तदा सांसारिकसुखं स्यात्, अन्यथा रात्रिदिवसयोगवद्विडम्बनमेव।

[हिन्दी] जो मनुष्य ज्ञानवान हैं और धर्माराधन से विमुख हैं उसके ज्ञान को धिक्कार हैं, जो लोग श्री आदिनाथ स्वामी से प्ररूपित पर्व और धर्म की आराधना नहीं करते उन्हे धिक्कार हैं, मैं उन श्री आदिनाथ स्वामी के इस धर्म को चाहे प्राणो का नाश हो, मेरा राज्य चला जावे तो भी नहीं छोड़ सकता। हे स्त्री! मैं किसी भी हालत में तप भ्रष्ट न होऊंगा। इस तरह के क्रोध से भरे हुए राजा के वचनों को सुनकर मोहरूप माया फैलाती हुई वह उर्वशी फिर मधुर वाणी से कहने लगी। हे स्वामिन्! आप अपनी काया को क्यों व्यर्थ ही क्लेश दे रहे हो। मैंने जो कुछ कहा आपके शरीर को कष्ट न हो यह जान कर ही कहा थां। इसमें क्रोधित होंने की क्या बात है? अब यह अवसर क्रोध करनें का नहीं है। हे राजन्! पहले तो हमनें अपनें पिता के वचनों को न मानने की गलती की, फिर स्वाधीनतासे किसी राजपुत्र से शादी नहीं की, और अब पूर्व जन्मों के कर्मविपासे आप का वरण किया, इससे हमारे संसार सम्बन्धी सारे सुख नष्ट हो गये ओर अकस्मात् हमारा शील भी गया। यदि स्त्री और पुरुष में परस्पर स्वाधीनता हो तो संसार के सुखों का आनन्द के साथ उपभोग हो सकता है। अब तो रात दिन केवल विडम्बना ही अवशिष्ट रह गई है।

[ગુ૦] જે મનુષ્ય જ્ઞાનવાન છે અને ધર્મના આરાધનથી વિમુખ છે તેના જ્ઞાનને ધિક્કાર છે. જે લોકો શ્રી આદિનાથસ્વામીએ પ્રબોધેલાં પર્વ અને ધર્મની આરાધના નથી કરતા તેમને ધિક્કાર છે. હું આ આદિનાથસ્વામીએ કહેલા ધર્મને મારા પ્રાણનો નાશ થશે, મારું રાજ્ય ચાલ્યું જશે તો પણ નહીં છોડું. હે સ્ત્રી, હું કોઇપણ હાલતમાં તપભ્રષ્ટ નહીં થાઉં." આ જાતનાં ક્રોધથી ભરેલાં રાજાનાં વચનો સાંભળીને મોહરૂપી માયા ફેલાવતી ઉર્વશી ફરી મધુર વાણીથી કહેવા લાગીઃ 'હે સ્વામિન! આપ આપની કાયાને શા માટે નકામો ક્લેશ આપો છો? મેં જે કાંઇ

કર્યું તે તમારા શરીરને તકલીફ ન પડે એ ઉદ્દેશથી કર્યું હતું. [illegible] શોચિત થવાની કઈ વાત છે? આ અવસર શોક કરવાનો નથી. [illegible] પહેલાં તો અમે અમારા પિતાનાં વચનો ન માનવાની ભૂલ કરી. [illegible] સ્વતંત્ર વિચારથી કોઈ રાજપુત્રની સાથે લગ્ન ન કર્યાં [illegible] કર્મોના ઉદયથી આપનું વરણ કર્યું; એથી અમારાં [illegible] નષ્ટ થઈ ગયાં અને અમારું શીલ પણ ગયું. [illegible] સુખ સ્વાધીન હોય તો જ અમારાં મુખોના [illegible] તો રાત-દિવસ મુશ્કેલીઓ જ ભરેલી [illegible] છે.

એમનાં એવાં વચનો સાંભળીને તેમના પર મોહિત થયેલ તે રાજાએ પોતાનાં વચનો યાદ કરીને કહ્યું: "હે પ્રિયે, મારા દાદાએ જે ધર્મ ઉપદેશ્યો હતો અને મારા પિતાએ જે ધર્મનો સ્વીકાર કર્યો હતો, હું તેનો પુત્ર થઇને એ ધર્મનો લોપ કેમ કરું?"

[सं०] हे हरिणाक्षि! मम सकलां पृथ्वीं, कोशं, गजाश्वादींश्च सर्वान् त्वं स्वयं गृहाण परं येन न सौख्यं न च धर्मस्तदकृत्यं मां मा कारय। ततः सापि हपाद्विहस्य कोमलवाण्या प्रोवाच, "हे राजन्! भवादृशां सत्यवचनमेव सद्युक्तं यतो येन पापिना स्वाङ्गीकृतो विघातः कृतः सोऽशुचिस्तस्य भारात्पृथिवी अतिखिद्यति। हे नाथ! यदि त्वया इदमपि कार्यं न सिद्ध्यति, तदा राज्यादिदातृत्वं कथं सेत्स्यति?

[हिन्दी] हे मृग की तरह चंचल नेत्रोंवाली! प्रिये! तुम मेरा सारा राज्य, सारी पृथिवी, सारा खजाना, हाथी, घोडे आदि सर्व सम्पत्ति ले लो परन्तु जिससे सुख और धर्म का नाश हो ऐसे अकृत्य करने का मुझे न कहो। (हे प्राणियों! देखो सूर्ययश राजा धर्म के नाश से बचने को अपना सर्वस्व देने को तत्पर हो गया, इस से आप सब को सोचना चाहिये कि इन उर्वशी अप्सराओं पर राजा का इतना मोह था फिर भी वह धर्म के पर्व के दिनों का त्याग करना नहीं चाहता प्रत्युत उसके बदले में अपने प्राण ओर सम्पत्ति देना स्वीकार करता है। जो प्राणी धर्म को प्राप्त करके किसी के भी कहने से उसे छोड़ देते हैं, और श्री अरिहन्त भगवान की साक्षी में ली हुई सौगन की परवाह नहीं करते, उन्हें नरक के भयंकर कष्ट भोगने ही पडेंगे, अतः भगवन्तों का कथन है कि जो किसी के कहने से धर्मकृत्य नहीं छोड़ेगा वही प्राणी सुखी होगा")

राजा के ऐसे वचन सुनकर उर्वशियां हंसकर बोली "हे महाराज! आप तो जो कुछ वचन निकालते है वे सब सत्य ही हैं, हम आप की कितनी प्रशंसा करें? जो प्राणी स्वयं स्वीकृत वचनों की परिपालना से भ्रष्ट हो जाते हैं, वे अशुचि (अशुद्ध) हैं। ऐसे पापियों के भार से पृथ्वी को भी कष्ट लगता है। (वह कहती है कि यह पापी मुझे भाराक्रान्त करता है, ऐसे मानवों का मुख देखना भी ठीक नहीं।)

हे स्वामी! यदि आपसे जरा सा भी काम सिद्ध नहीं हुआ तो राज्यादि देने का काम तो हो ही कैसे सकता है?

[ગુ૦] હે મૃગના જેવાં ચંચલ નેત્રોવાળી પ્રિયા, તું [illegible] રાજ્ય, આખી પૃથ્વી, સમસ્ત ખજાનો, હાથી, ઘોડા વગેરે [illegible] છે, પણ જેનાથી સુખ અને ધર્મનો નાશ થાય તેવાં [illegible] તું મને ન કહે."

कुछ गवां बैठी। आप का तो कोई पता भी नहीं है) हे नाथ! यदि आप पर्व भंग करना न चाहें तो मेरे सामने आदिनाथस्वामी के मन्दिर को गिरा दीजिये। उनके ऐसे वचन सुनकर वह राजा वज्र से चोट खाकर आदमी जैसे बेहोश हो जाता है ठीक उसी तरह राजा भी मूर्च्छा को प्राप्त हो कर जमीन पर गिर पड़ा। तब राजा के सेवकों और मन्त्रियों ने आकुल-व्याकुल चित्त से शीतल जल आदि के उपचार से राजा की मूर्च्छा दूर की।

[ગુ०] હે રાજા! તમારે ખાતર જ અમે અમારા પિતા વિદ્યાધરનાં ઐશ્વર્યો છોડી દીધાં, (રાજ્ય તો મારા પિતાનું પણ મોટું હતું.) તો હવે રાજ્ય વગેરેને શું કરીએ? (અમે તો આપની ઉપર વિશ્વાસ રાખીને એ બધું ગુમાવી બેઠાં, અને આપ તો હવે આમ કહો છો!) હે નાથ, જો હવે આપ પર્વભંગ કરવા ન ચાહતા હો તો મારી સામે આદિનાથ સ્વામીનું મંદિર તોડી પાડો."

એનાં આવાં વચનો સાંભળીને તે રાજા વજ્રના આઘાતથી માણસ જેમ બેહોશ થઇને પડી જાય તેમ મૂર્ચ્છા પામીને જમીન ઉપર પડી ગયો. ત્યારે રાજાના સેવકોએ અને મંત્રીઓએ આકુળ-વ્યાકુળ થઇને શીતલ જળ વગેરેના ઉપચારથી રાજાની મૂર્ચ્છા દૂર કરી.

[मं०] अथ सूर्ययशा नृपः स्वपुरःस्थितां तां स्त्रियं दृष्ट्वा कुपितो जगाद, "रे अधमे! अयं तवाचारो वाण्या मत्पुरः स्वकुलाधमतां विकिरति यत उद्गारवदाहारो भवेत्। त्वं विद्याधरपुत्री न किन्तु चाण्डालपुत्री दृश्यसे। मया मणिभ्रमेणैव काचखंडादरश्चक्रे। यो देवस्त्रैलोक्यनाथस्त्रैलोक्यवन्दितस्तत्प्रासादभङ्गकृत् कोऽपि कथं भवेत्? तस्मात् हे स्त्री! स्वयं स्ववचसा बद्धं माममृणं कर्तुं धर्मलोपं विनाऽन्यद्याचस्व? पर्वलोपं चैत्यध्वंसं चाहं सर्वथा न करोमि। तच्छ्रुत्वा सापि ईषद्विहस्य पुनस्तमुवाच हे नाथ! अन्यदन्यदिति च तद्वचो दूरतो याति। यदिदं त्वं नाङ्गीकर्ता तर्हि त्वं स्वयं स्वपुत्रकस्य शिरश्छित्वा सद्यो मह्यं देहि! अथ राजा विमृश्य वदतिस्म हे सुलोचने मत्पुनो मत्तोऽभवत् तस्मान्मम शिरस्तव करतलस्थमस्तु।

[हिन्दी] इसके बाद सूर्ययशा राजाने सामने बैठी हुई उन अप्सराओंको देखा, उन्हे देखते ही राजा क्रोध से तप गया और कठोर वचनों से बोला, "अरे अधमे! ये तुम्हारे वचन आचार को तथा तुम्हारे कुल की अधमता को दिखाते हैं। तुम

भिखारी की पुत्रियां नहीं हो, किसी चाण्डाल की पुत्रियां हो! [illegible] के धोखे से कांच के टुकड़ों का आदर किया। अरे पापिनियों! जो [illegible] के स्वामी हैं और तीनों लोकों से पूजित हैं, उनके मन्दिर को [illegible] सकता है? इस लिये हे स्त्री! मैं स्वयं अपने ही वचनों से [illegible] अतः तुम मुझे छोड़ और धर्म लोप के कृत्य करने को मत कहो, [illegible] अलग हट और मांगो।

पर्वों का लोप और चैत्य का ध्वंस तो मैं किसी [illegible] मानकर वह भी मुस्कराकर फिर बोली, "हे नाथ! [illegible] वचन करते हो। परन्तु एक का भी पालन नहीं [illegible] आप अपने ही हाथों से अपने पुत्र का सिर काट [illegible] राजाने धैर्य धारण कर कहा। "हे [illegible] है, अतः मेरा सिर ही मैं तुम्हें सौंपता हूं।"

[सं०] इत्युक्त्वा नृपः करेण खड्गं गृहीत्वा यावत् स्वशिरःछेदार्थमुद्यतो भवति तावदेव सा तस्य खड्गधारां बबन्ध। न पुनस्तस्य सत्त्वस्य, ततो राजा खड्गधारा-बन्धनाद्विलक्षः सन् कण्ठनालविडम्बकं नवं नवं खड्गं गृहीतवान्। यदासौ भूपति-र्मनागपि सत्त्वान्न चचाल तदा ते स्त्रियौ स्वकीयं रूपं प्रादुष्कृत्याऽऽदराज्जय जयेत्यू-चतुः पुनः।

जय त्वं वृषभस्वामि–कुलसागरचन्द्रमः।
जय सत्त्ववतां धुर्य ! जय चक्रीशनन्दन ! ॥ १ ॥

[हिन्दी] यह कहकर राजा नें तलवार हाथ में ली। वह ज्योंही अपने सिर को काटने को तत्पर हुआ त्योंही उस अप्सरा नें उस तलवार की धार बांध दी। राजा नें तलवार के वार को व्यर्थ जाते देख कर नई नई कई तलवारें मंगवाई, और सिर काटने का प्रयत्न किया परन्तु असफल रहा। अब राजा अपने वचन के भंग के भय से उदासीन हो गया पर राजाने अपना सत्व नहीं छोड़ा। यह देखकर वे दोनों अप्सराएं अपने मानवी रूप को छोड़ कर देव रूप से प्रगट हुई और आदर से राजा की जयजयकार करने लगी।

हे ऋषभदेवस्वामीजी के कुल रूप सागर में उत्पन्न चन्द्रमा के समान यशस्वी सूर्ययशा राजा ! हे सत्यवंत ! हे धैर्यवन्त पुरूषो में श्रेष्ठ ! हे चक्रीश नन्दन ! (चक्रवर्ती राजाओं के स्वामी श्री भरत चक्रवर्ती के पुत्र !) तुम्हारी जय हो ! जय हो।

[ગુ०] આમ કહીને રાજાએ તલવાર હાથમાં લીધી. તે જેવો પોતાનું માથું કાપવા તૈયાર થયો તેવી તે અપ્સરાઓએ તલવારની ધાર બાંધી દીધી. રાજાએ તલવારના વારને વ્યર્થ જતો જોઇને નવી નવી બીજી કેટલીયે તલવારો મંગાવી અને પોતાનું માથું કાપવાનો પ્રયત્ન કર્યો પણ તેમાં નિષ્ફળ ગયો. હવે રાજા પોતાના વચનભંગના ભયથી ઉદાસીન થઇ ગયો, છતાં પણ તેણે પોતાનું સત્ત્વ છોડયું નહીં. આ જોઇને તે બન્ને અપ્સરાઓ પોતાનું માનવીરૂપ છોડીને દેવ રૂપથી પ્રગટ થઇ અને આદરપૂર્વક રાજાના જયજયકાર કરવા લાગી.

"હે ઋષભદેવ સ્વામીજીના કુળરૂપી સાગરમાં ઉત્પન્ન થયેલ ચંદ્રમા જેવા યશસ્વી સૂર્યયશા રાજા, હે સત્યવંત ! હે ધૈર્યવાળા પુરુષોમાં શ્રેષ્ઠ ! હે ચક્રીશ નંદન ! (ચક્રવર્તી રાજાઓના સ્વામી ભરત ચક્રવર્તીના પુત્ર) તમારો જય હો, જય હો !

[सं०] अहो तव धैर्यम् ? अहो ते मनसो निश्चयः ! [illegible] ध्यानं न त्यक्तवान्, देवेन्द्रः स्वसभायां देवानां पुरस्तादुक्तं [illegible] हे सज्जन ! आशाभ्यां अश्रद्धानाभ्यां स्वर्गागतस्य [illegible] एवं त्वां क्षोभयितुं कोऽपि न समर्थः । हे जगज्जन्तुवत्सल ! हे [illegible] पृथ्वी स्नकग्रिनि तस्य नाम चिरन्तनि । इत्थं तयोः स्तुत्यं [illegible] तस्य [illegible] पुष्पवृष्टिं च कृतवान्, तदा [illegible] निरीक्षिता सती तत्पुत्रो नृपगुणान् जगौ । [illegible] तस्या भार्यया सह स्वर्गं ययौ ।

કરવા અને અમારા મનની ખાતરી કરવા માટે અમે સ્વર્ગમાંથી પૃથ્વી ઉપર આવ્યા છીએ. પરંતુ હે રાજન્! હે જગત્પ્રભુકુલાવતંસ! (ત્રણે લોકના સ્વામી શ્રી ઋષભદેવના કુળના મુગટ સમાન) હે વીર, તમારી જેવા રત્નોને પેદા કરીને જ પૃથ્વી રત્નપ્રસવા કહેવાય છે. (તમારો આ મનુષ્યાવતાર ધન્ય છે. તમારી જેવા લોકો અમારા દેવતાથી પણ વિચલિત થતા નથી. હે રાજન્! અમે તમારી અવજ્ઞા કરી હોય, તમારો કોઇ અવિનય થયો હોય તો ક્ષમા કરજો. આપ મોટા છો, અને અમારાથી ભૂલ થઇ ગઇ છે, આ પ્રમાણે અપ્સરાઓએ ક્ષમાયાચના કરી.)

આ પ્રમાણે તે બંન્ને રાજાની સ્તુતિ કરી રહી હતી તે વખતે દેવેન્દ્ર પોતે ત્યાં પધાર્યા, અને જયજયકારના ધ્વનિ સાથે જ આકાશમાંથી પુષ્પ વૃષ્ટિ થઇ. ત્યારે ઇન્દ્રે ઉપહાસપૂર્વક તે બન્ને પ્રતિજ્ઞાભ્રષ્ટ અપ્સરાઓને જોઇ. અપ્સરાઓએ રાજાના ગુણોનું ગાન કર્યું. પછી સૂર્યયશા રાજાને શ્રેષ્ઠ મુગટ, કુંડલ, અંગહાર વગેરે આભૂષણો આપ્યાં અને તે બન્ને અપ્સરાઓ સાથે સ્વર્ગમાં ગયા. (જુઓ, ધર્મમાં તત્પર તથા દૃઢ રહેનાર લોકોને ઇન્દ્ર વગેરે દેવતાઓ પણ નમે છે.)

[सं०] सूर्ययशाराजा अपि सत्यप्रतिज्ञः सन् सन्नीत्या पृथ्वीं पालयति स्म। अथ स राजा भरतेशवत् पृथ्वीं जिनगृहमण्डितां कुर्वन् श्रीसंघयात्रया जन्म पवित्रयन् श्रीयुगादिजिनचरणवन्नित्यं चतुर्दश्यष्टमीपर्व आराधयामास, तथा व्रतधारिणः श्रावकान् स्वगृहे भोजयामास।

[हिन्दी] सूर्ययशा राजा भी सत्यप्रतिज्ञा से प्रसन्न होकर श्रेष्ठ नीति से पृथ्वी का पालन करने लगा। इसके बाद उसने भरत चक्रवर्ती की तरह पृथ्वी में कई जैनमन्दिर बनवाये और उसकी शोभा बढ़ाई। कई तरह की संघ यात्राएं निकाल कर अपने जन्म को सफल किया। श्री आदिनाथ स्वामी के चरण कमल की तरह नित्य चतुर्दशी, अष्टमी आदि पर्वों की आराधना की तथा व्रतधारण करनेवाले श्रावकों को अपने घर भोजन कराया।

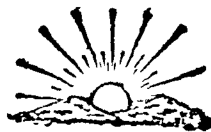
[ગુ૦] સૂર્યયશા રાજા પણ સત્ય પ્રતિજ્ઞ થઇને શ્રેષ્ઠ નીતિથી પૃથ્વીનું પાલન કરવા લાગ્યો. ત્યાર પછી તેણે ભરત ચક્રવર્તીની જેમ ઘણાં જિનમંદિરો બંધાવ્યાં અને તેની શોભા વધારી. કેટલીયે સંઘયાત્રાઓ કાઢી

करनें से मानवों को निश्चय ही महान सुख की प्राप्ती हो जाती हैं। यह श्री वीतरागदेव की वाणी इस लोक और परलोक में सुख समाधि को प्राप्त हो। "इस पर्व के आराधन से इस लोक में यश, कीर्ति और परलोक में बारह देवलोक, नव ग्रैवेयक, पांच अनुत्तर विमान तक परम्परा से मोक्ष और शाश्वत अखंड सुख की प्राप्ति होती है।

[इति तृतीय—व्याख्यानम्]

[ગુ૦] એટલા માટે હે ભવ્ય જીવો! શ્રી પર્યુષણ મહાપર્વ આવે ત્યારે પૌષધ સામાયિક કરવાં અને ત્યાગના પચ્ચક્ખાણ લેવાં. વિકથા ન કરવી. વિકથા કરવાથી પ્રયોજન વિનાનાં નિબિડ કર્મબંધ થાય છે. ધર્મના દિવસોમાં પાપકર્મના માર્ગો છોડી દેવા જોઇએ. એકાગ્ર ચિત્તથી 'કલ્પસૂત્ર'નું શ્રવણ કરવું જોઈએ, કારણ કે આ સૂત્રના શ્રવણથી અવશ્ય આત્માનું કલ્યાણ થાય છે. વળી આ સૂત્રનો મહિમા (મહોત્સવ) કરવો જોઇએ, જેનાથી ઘણા જીવોને પ્રતિબોધ મળે અને જૈનધર્મનું અનુમોદન થાય. "જુઓ, જૈન લોકો કેવા ધર્મી છે, એમનો ધર્મ કેવો સારો છે." વગેરે ધર્મકૃત્યો કરીને આ પર્વની આરાધના કરવી. આમ કરવાથી મનુષ્યોને નિશ્ચય મહાન સુખની પ્રાપ્તિ થાય છે. આથી વીતરાગદેવની વાણી આ લોક અને પરલોકમાં સુખ સમાધિને અપાવે છે. આ પર્વના આરાધનથી આ લોકમાં યશ, કીર્તિ અને પરલોકમાં બાર દેવલોક, નવ ગ્રૈવેયક, પાંચ અનુત્તર વિમાન સુધી પરંપરાથી મોક્ષ અને શાશ્વત અખંડ સુખની પ્રાપ્તિ થાય છે.

[ઇતિ તૃતીય વ્યાખ્યાન સમાપ્ત]



કલ્યાણજી પાઠકે પ્રસન્નચિત્ત થઇને આ અષ્ટાહ્નિકાની સંસ્કૃતમાં રચના કરી. આ સંસારરૂપી સમુદ્રમાં અનેક શ્રીમંત અને ગુણશાલી લોકો થઇ ગયા. એ તપસ્વી લોકોમાં શ્રી જિનહર્ષસૂરિ શ્રેષ્ઠ થયા. જેમના અનેક શિષ્યો જૈનધર્મમાં આદર કરીને સુંદર કથાના વાંચનાર થયા. તેઓના ચરણકમલોમાં તેમના જ આશીર્વાદથી યુક્ત પાઠક શ્રી ક્ષમાકલ્યાણજીએ આ ગ્રંથ શ્રદ્ધાવાન અને સુંદર મનવાળા પાઠકો અને શ્રાવકોની પ્રીતિને માટે રચ્યો.



(ગુ૦) શ્રી સુધર્મસ્વામીની પરમ્પરામાં ક્રમશઃ શ્રી રત્નસૂરિજી થયા. તેના શિષ્ય ક્ષમા ગુણને ધારણ કરવામાં નિપુણ શ્રી ક્ષમાસૂરિજી થયા. તેમના પાટે શ્રીમદ્ દેવેન્દ્રસૂરિજી થયા. અને તેમના પટ્ટવિભૂષક વિદ્યાવન્ત નિપુણ શ્રી કલ્યાણસૂરિજી થયા. એમના શિષ્ય શ્રી પ્રમોદસૂરિજી થયા. જે ભવ્યજનોના ઉદ્ધારક હતા. તેમના શિષ્ય શ્રીમદ્ રાજેન્દ્રસૂરિજી થયા. જેમણે બાળ જીવોના હિતના માટે અને કુક્ષી આદિ સંઘની વિનંતિથી વિક્રમ સં૦ ૧૯૨૭માં આ અષ્ટાહ્નિકા વ્યાખ્યાનનો ભાષાનુવાદ કર્યો.

રસનયન પૂરણ ચક્ષુ વર્ષે વાસસિયાણા રહી;
શ્રીમદ્ યતીન્દ્રસૂરિજી અનુચર જયન્ત મધુકર સંગ્રહી.
નિર્વિઘ્નતાએ આજ આ ગુર્જર ગિરા અનુવાદને;
સંપૂર્ણ કરતાં સહજ ભાવે મેળવ્યો આહ્લાદને. ॥



પર્યુષણ પર્વની સફળતા

લેખકઃ-મુનિરાજ શ્રી જયંતવિજયજી મહારાજ 'મધુકર'

અનાદિ કાળથી ચાલતું આવ્યું છે સંસારનું આ ચક્ર!
રાગની સુંવાળી સેજમાં સુવાડતું આવ્યું છે જગતના જીવમાત્રને!
દ્વેષની આગમાં બાળતું આવ્યું છે આત્માના વિશુદ્ધતમ ગુણોને!

પરમ્પરાની સર્જાયેલી અજ્ઞાનની અધિકતા અને સમ્યગ્જ્ઞાનની ન્યૂનતા! અશ્રદ્ધાની અખુટતા અને શ્રદ્ધાની નિર્બળતા! ચારિત્રની ઉણપ, દુશ્ચારિત્રની વિપુલતા! પછી....

યત્નપૂર્વક સાધનામાં સફળતા મળવાના બદલે અનાદિનો ટેવાયેલ આત્મા નિષ્ફળતા સિવાય કંઇપણ પામી શકયો નહિ!

રાગની બહુલતા અને દ્વેષની વિપુલતાનું આ પરિણામ છે.

જીવનું જીવત્વ કળી શકાતું નથી અને પોતામાં પોતાનાથી ભળી શકાતું પણ નથી.

જડની જમ્બર ભીંસમાં જીવનની નાવડી ભવ નિરર્થકતાના ઓવારે આવીને ઉભી રહે છે.

પ્રસુપ્ત અવસ્થાવાળા જાણવા. જેઓ ક્યારેય આંખ ઉઘાડીને પોતાની સ્વયંની અવસ્થા, સદવસ્થા કે દુરવસ્થાનો વિચાર સુદ્ધાંય કરી શકતા નથી.

જેઓ આસક્તિથી છુટવા મથતા નથી છતાં આસક્તિની ભયંકરતાને જાણતા હોય છે, તે જીવોને સુપ્ત સ્થિતિવાળા કહ્યા છે. જેઓ જાણવા છતાંય આચરવાની તત્પરતા દાખવી શકતા નથી.

જેમને આસકિત, મિથ્યાત્વમયી પરિણતિ તથા સંસારનાં બંધનોનું જ્ઞાન થાય અને જેઓ એ બંધનોથી જેમ બને તેમ છુટવાનો પ્રયત્ન કરતા હોય છે, યથાશકય છુટતા જાય છે, તે જીવોને જાગૃત દશાવાળા કહેલા છે જેઓ બંધનથી મુકિતનો અધિકાર મેળવી લે છે.

જેઓ મિથ્યાત્વથી મુકિત મેળવીને, આસકિતને અળગી કરીને સમ્યક્ત્વના ભાવથી ઓતપ્રોત થયેલા છે, લૌકિક અને લોકોત્તર ભાવોને સમ્પૂર્ણપણે સમજી લીધા છે જેણે, એ બધાય જીવોને ઉત્થિત એટલે ઉભા થયેલ સમજવા જોઇએ. જેમને ચરણ, કરણ અને મનમાં અપૂર્વ આહ્લાદ અને રસાસ્વાદનનો અનુભવ થાય છે.

જેઓ વિશુદ્ધ પરિણતિમાં રમણ કરતા હોય છે. तमेव सच्चं जं जिणेण देविखयं ના ભાવને જેમણે દ્રવ્ય અને ભાવથી પોતાના વિચાર અને આચારમાં ઉતારી લીધા હોય છે. ત્યાગમાં જેમને આનંદ આવતો હોય છે, રાગમાં નિરસતા દેખાતી હોય છે. આરાધક ભાવ પ્રબળ બનતો રહે અને વિરાધક ભાવ જેમને સ્વપ્નમાં પણ સ્પર્શી શકતો નથી તે જીવોને પ્રસ્થિત થયેલ સમજવા જોઇએ.

જેમને ક્રમશઃ ગુણસ્થાનકની સ્પર્શના થતી જતાં ગ્રંથીભેદ અને અપુનર્બંધક દશાની સ્થિતિ પ્રાપ્ત થઇ જાય છે.

પર્વાધિરાજ પર્યુષણ !

મૈત્રી, પ્રમોદાદિ ભાવોને આત્મસાત્ કરવા માટે પ્રબલ પ્રેરણા આપનાર છે.

જાગો, ઉઠો! અને આગળ વધોનો શંખનાદ કરનાર છે.

ભવ્યોની ભવ્યતાને છતી કરવા અને આરાધનાના મંગળમય માર્ગે 'રવાની હાકલ કરતા પર્વાધિરાજ જણાવે છે કે, તમારા જીવનની શંન કરો અને નિહાળો તો ખરા કે તમે કયાં છો ? તમારી

એકાન્તિક પક્ષપાત હૃદયમાં જાગે છે ત્યારે આત્મા અનેકાન્તિક પક્ષકાર બનવાનું બધુંય સામર્થ્ય ગુમાવી બેસે છે.

જ્યારે પોતાની દૃષ્ટિનું જ સમર્થન કરવાની અને અન્યનું ઉત્થાપન કરવાનું ધ્યેય રહે છે ત્યારે ગુણાનુરાગી અને ગુણપાક્ષિક બનવાની પોતાની સ્થિતિનો પોતે જ વિનાશક બની જાય છે.

દૃષ્ટિની પ્રાપ્તિ અનુભવ ઉપરથી સમજી શકાય છે. અનુભવીઓ આરાધનાને મહત્ત્વ આપે છે અને આરાધકભાવ અન્તર પ્રદેશમાં પ્રબળ બને તેવી રીતનો એમનો વ્યવહાર હોય છે.

ગુણી વિના ગુણ ન હોય એટલે આધારાધેય ભાવનો સમન્વયાત્મક દૃષ્ટિકોણ જ્યારે બની જાય છે ત્યારે કોઈના પ્રત્યે અણગમો કે સૂગને ઉત્પન્ન થવાનો અવકાશ રહેતો નથી.

જ્યારે દૃષ્ટિ વિકલ બની જાય છે ત્યારે પોતાની વિકલતાનો ખ્યાલ રહેતો નથી અને સર્વત્ર પોતા સિવાય બીજામાં વિકલતા દૃષ્ટિગોચર થતી દેખાય છે.

પરિણામે ઉહાપોહ અને અજંપા સિવાય બીજું કંઇ રહેતું જ નથી. મનની વિહ્વળતા, તનની ચંચળતા અને વચનની વિસંવાદિતા વધતી જતાં ધાર્યા કરતાં સ્થિતિ ઉલ્ટી થતી દેખાય છે.

સાધક, આરાધક અને શાસનના અદના ઉપાસક બનવા માટે દૃષ્ટિની વિશાળતા હોવી જોઇએ.

અસત્યમાં પણ અસત્યરૂપે સત્ય તો સમાયેલું છે.

નૈગમ નયનો અભ્યાસી અને જ્ઞાતા જગત્માં થતી કોઇપણ સ્થિતિને વિકાસ માટેનો પ્રારંભ માને છે. પરંતુ એ સ્થિતિ એવંભૂત નય તરફ આગળ વધનારી હોવી જોઇએ. સંપૂર્ણ અશુદ્ધિથી પરિપૂર્ણ શુદ્ધિ તરફ જવાની જે ક્રિયા-પ્રક્રિયા છે તેને નયવાદ લેખ્યો છે.

કોઈપણ દૃષ્ટિની પોતાની મર્યાદા છે. પોતાની મર્યાદામાં પોતે નિશ્ચિત સત્ય હોય પરંતુ બીજાની મર્યાદાનો સંપૂર્ણ અપલાપ કરવાની વૃત્તિ દૃષ્ટિસાપેક્ષની નહિ દૃષ્ટિનિરપેક્ષની સમજવી જોઇએ.

એકાન્તિક પક્ષપાત હૃદયમાં જાગે છે ત્યારે આત્મા અનેકાન્તિક પક્ષકાર બનવાનું બધુંય સામર્થ્ય ગુમાવી બેસે છે.

જ્યારે પોતાની દૃષ્ટિનું જ સમર્થન કરવાની અને અન્યનું ઉત્થાપન કરવાનું ધ્યેય રહે છે ત્યારે ગુણાનુરાગી અને ગુણપાક્ષિક બનવાની પોતાની સ્થિતિનો પોતે જ વિનાશક બની જાય છે.

દૃષ્ટિની પ્રાપ્તિ અનુભવ ઉપરથી સમજી શકાય છે. અનુભવીઓ આરાધનાને મહત્ત્વ આપે છે અને આરાધકભાવ અન્તર પ્રદેશમાં પ્રબળ બને તેવી રીતનો એમનો વ્યવહાર હોય છે.

ગુણી વિના ગુણ ન હોય એટલે આધારાધેય ભાવનો સમન્વયાત્મક દૃષ્ટિકોણ જ્યારે બની જાય છે ત્યારે કોઈનો પ્રત્યે અણગમો કે સૂગને ઉત્પન્ન થવાનો અવકાશ રહેતો નથી.

જ્યારે દૃષ્ટિ વિકલ બની જાય છે ત્યારે પોતાની વિકલતાનો ખ્યાલ રહેતો નથી અને સર્વત્ર પોતા સિવાય બીજામાં વિકલતા દૃષ્ટિગોચર થતી દેખાય છે.

પરિણામે ઉહાપોહ અને અજંપા સિવાય બીજું કંઇ રહેતું જ નથી. મનની વિહ્વળતા, તનની ચંચળતા અને વચનની વિસંવાદિતા વધતી જતાં ધાર્યા કરતાં સ્થિતિ ઉલ્ટી થતી દેખાય છે.

સાધક, આરાધક અને શાસનના અદના ઉપાસક બનવા માટે દૃષ્ટિની વિશાળતા હોવી જોઇએ.

અસત્યમાં પણ અસત્યરૂપે સત્ય તો સમાયેલું છે.

નૈગમ નયનો અભ્યાસી અને જ્ઞાતા જગત્‌માં થતી કોઇપણ સ્થિતિને વિકાસ માટેનો પ્રારંભ માને છે. પરંતુ એ સ્થિતિ એવંભૂત નય તરફ આગળ વધનારી હોવી જોઇએ. સંપૂર્ણ અશુદ્ધિથી પરિપૂર્ણ શુદ્ધિ તરફ જવાની જે ક્રિયા-પ્રક્રિયા છે તેને નયવાદ લેખ્યો છે.

કોઈપણ દૃષ્ટિની પોતાની મર્યાદા છે. પોતાની મર્યાદામાં પોતે નિશ્ચિત સત્ય હોય પરંતુ બીજાની મર્યાદાનો સંપૂર્ણ અપલાપ કરવાની વૃત્તિ દૃષ્ટિસાપેક્ષની નહિ દૃષ્ટિનિરપેક્ષની સમજવી જોઇએ.

[illegible]ની રચના માટે તો જૈન જગતમાં એક નહિ અનેક [illegible] પડેલાં છે.

[illegible] આખ્યાયિકાને કોણ નથી [illegible] જૈન સિદ્ધાન્તના પ્રતિપાદનને માટે અપાતા આ દૃષ્ટાન્તનું અનુ-[illegible] કરવાની વૃત્તિ પ્રમાણ [illegible] તો જૈનઆગમની પ્રત્યેક વાતને સમ-[illegible] અનેક [illegible] અર્થની [illegible] પ્રકારથી [illegible].

[illegible] સુન્દર કરે છે.

[illegible] છે. [illegible] છે. એ [illegible] અનેક પ્રકારના [illegible]

